

कवि ऋषभदास कृत व्रतविचारसास

सं. विजयशीलचन्द्रसूरि

‘कवि ऋषभदास’ए मध्यकालीन जैन कविओमां प्रतिष्ठित श्रेष्ठ गृहस्थ कविनुं नाम छे. तेमणे पोते ज निर्देशयुं छे ते प्रमाणे, चोंत्रीस रास अने ५८ स्तवननी रचना करी छे. (हीरविजयसूरि रास, अंतिम ढाल-कडी ३२, जै.गृ.क.३, पृ. ६८). १६-१७मा शतकमां थई गयेला आ कविनी केटलीक कृतिओ ज प्रगट छे; मोटा भागनी तो अद्यावधि अप्रगट ज रही छे. केटलीक रचनाओनी तो हस्तप्रतिओ पण अप्राप्य छे (गु.सा.कोश, पृ. ३७). कविनी प्राप्य परंतु अप्रगट एक दीर्घ रास-कृति “व्रतविचार रास”नुं संपादन यथामति अत्रे प्रगट करवामां आवे छे. कविनी स्वहस्त-लिखित प्रति उपरथी ज आ वाचना तैयार करवामां आवी छे, छतां पण, क्यांक क्यांक पानां फाटी गयेल होई तथा एकाद बे स्थळे अक्षरे पर बीजां पानांना अंश चोंटी गयेला होई, तेमज आ रासनी बीजी प्रति प्राप्त करवानुं अशब्दप्राप्य होइने केटलेक स्थाने जराजर पाठ त्रुटि रही गयो छे.

८१ ढाळ्ये अने ८६३ कडीओमां पथरायेला आ रासनो स्थूल परिचय आ प्रमाणे छे :

दुहा : १४४	चौपाई : २७२	कडी : ४४३
कवितः ४	समस्यागीत : २	श्लोक : १

प्रस्तुत कृतिनो विषय जैन श्रावक-श्राविकाए पालन करवा लायक १२ ब्रतोनुं स्वरूपदर्शन छे. सम्यक्त्व अने १२ ब्रतो ते ज श्रावक-धर्म, अने प्रत्येक जैनधर्मी गृहस्थे आ श्रावकधर्मनुं ग्रहण अने आचरण करवुं ज जोईए एवो बोध आपवानो कर्तानो प्रधान आशय छे. रासनो आंतरिक अछडतो परिचय मेळववा माटे आपणे ढाळ-क्रमे अवलोकन करीए.

रासनो प्रारंभ मंगलाचरणना दूहाथी थाय छे. इष्टदेव श्रीपार्श्वनाथने तथा पांच परमेष्ठीने समर्या पछी कवि सरस्वती देवीनुं स्तवन अने वर्णन लंबाणथी करे छे. पांचथी अग्यार एम ७ दूहा अने पछी बे आखी ढाळ

कविए सरस्वती-वर्णनमां रोकी छे, (कडी क. १२-२८) जे तेमनी शारदा प्रत्येनी अनुपम आस्थानो संकेत आपी जाय छे. विख्यात इतिहासलेखक श्री मोहनलाल दलीचंद देशाईए नोंध्युं छे के “सरस्वती देवी प्रत्ये संपूर्ण भक्ति होई तेमनी हंमेशां स्तुति करी पोतानी कृतिओनो प्रारंभ करेल छे. अने जनश्रुति प्रमाणे तेमणे ते देवीने आगधन करी प्रसन्न करी हती अने देवीनो प्रसाद मेळब्बो हतो. (जैगूक ३, पृ. २४)” विशेष रसप्रद वात ए छे के प्रस्तुत रसनी प्रति कविए जाते लखेली छे, अने तेना प्रथम पत्र पर कविए स्वहस्ते ज वीणा-पुस्तकधारिणी अमृतपूर्णकमण्डलुहारिणी जपमालिका-विलसितहस्ता मयूरवाहिनी सरस्वती देवीनुं चित्र पण आलेखेलुं छे. चित्रकलानी दृष्टिए स्हेज पण आकर्षकता के विशेषता न होवा छ्तां, एक चोपडा चीतरनार वृद्ध वाणियाए पोतानी ऊर्मिओने जे भावसभर रीते अभिव्यक्त करी छे, ते ज आ चित्रनी अने तेना आलेखकनी ध्यानार्ह विशेषता छे. आ चित्र आ अंकमां अन्यत्र (टाईटल-१ पर) मूकवामां आव्युं पण छे.

कर्ता दूहाओने प्रथम अंश मण्तां हशे. तेथी तेमणे प्रथम ढाळने सीधो (२) क्रमांक ज आय्यो छे. अहीं मूळ क्रमांकनी जोडे, सुगमता खातर, १ थी क्रमांक लखी उमेर्या छे. एक महत्वनी वात अहीं स्पष्ट थवी जोईए. कर्ता जैनधर्मो छे. तेमणे निरूपण करवा धरेलो विषय प्रणालिकागत रीते जैन धर्म अने शाळो साथे संबद्ध छे. तेथी स्वाभाविक रीते ज तेमां जैन आचारशास्त्रीय परिभाषाना शब्दो-शब्दजूथ वारंवार आववाना ज. ते तमामनुं अर्थविवरण आपवानो अर्थ कृतिनुं (गुजराती) विवेचन ज थाय, जे अप्रस्तुत छे. आ माटे तो जिज्ञासुओए पद्धतिसर जैन परिभाषा शीखवी रहे, कां तेनां जाणकारो पासेथी ते शब्दो-अर्थोनी जाणकारी मेळब्बी लेवी पडे.

ढाल ४(३)मां दशविध-दश प्रकारना यतिधर्मनो अने तेना अनुषंगे बार भेदे तपश्चर्यानो अछडतो निर्देश थयो छे. तो ढाल ५(४)मां धर्मरलने माटे योग्य बनावनारा श्रावकोचित २१ गुणोनां नाम आप्यां छे. ढाल ६(५)मां ब्रतो लेवा माटे उत्सुक गृहस्थने थोडीक पूर्वभूमिकारूप शिखामणो आपीने अद्वार दोषोनां नामो लेवापूर्वक जिनेश्वर-अरिहंत ते १८ दोषरहित एवा देव होवानुं जणावे छे. ढाल ६मां अरिहंतना ३४ अतिशयोनो परिचय मळे छे,

ढाल ८(७)मां जिनवरे जीतेला आठ मदनां अने ढाल ९(८) मां तेमणे क्षय पमाडेलां ८ कर्मोनां नाम दर्शाव्यां छे. ढाल १०(९)मां जिनेश्वरे पूर्वभूमां आराधेलां वीसस्थानक पदोनां नाम आव्यां छे. ते पछीना दूहाओमां जिनना चार निक्षेप (८६-८७) दर्शावीने प्रतिमानी तथा मंदिरनी पण आशातना (अवभानना) करवानो निषेध (८८) कह्यो छे. ढाल ११(१०)मां तेवी १० मुख्य आशातनाओ बतावी छे. अहीं 'देव' तत्त्वनुं वर्णन आयोपाय छे.

९२मी कडीथी 'गुरु' तत्त्वनुं वर्णन चालु थाय छे. गुरु ते आचार्य, तेमना गुण ३६ छे, तेनुं स्वरूप ९३-९५मां प्रस्तुप्युं छे. ढाल १२-१३-१४ (११-१२-१३)मां शास्त्र वर्णित 'प्रतिरूपता' आदि ३६ गुणो, तेना अनुषंगे बार भावना अने २२ परिषहोनुं स्वरूप वर्णवायुं छे. पछी ढाल १५(१४)मां परीषह समभावे सहन करनार महान मुनिराजोनां नाम-वर्णन छे. ढाल १६(१५)मां आचार्यनी पछी आवनास 'मुनि'रूप गुरुतत्त्वना २७ गुणो गणाव्या छे. १६६मा दूहामां 'धर्म' तत्त्वनुं स्वरूप खूब टूकाणमां पण स्पष्ट शब्दोमां दर्शावेल छे.

ढाल १७(१६)थी मिथ्या देव (कुदेव)ना स्वरूपनी ओळखाण शरु थाय छे. ते ढाळ, दूहा, कवितनो सार एटलो ज छे के जेमां सग-द्वेष-मोह-काम-कोध वगोरे प्रत्यक्ष देखाता-अनुभवाता होय ते 'कुदेव' छे; तेवाने 'देव' लेखे स्वीकारवा ते मिथ्यात्व गणाय. क.७८ थी ८५ सुधी (ढाल १८(१७) सहित)मां ते ते देवोने इष्टदेव माननार प्रतिपक्षीनी 'जैन' सामे दलीलो आपवामां आवी छे. ढाल १९(१८)मां जैन द्वारा अपातो तेनो प्रतिवाद छे. तेमां जैनो ईश्वरना कर्तृत्वनो परिहार करीने बधुंज कर्मकृत होवानो सिद्धांत स्थापे छे. ९३मुं कवित, दूहो अने ढाल २०(१९)मां कर्मनी अदम्य ताकातनुं बयान थयुं छे. छेले निष्कर्षरूपे देव-कुदेवनो विवेक निरूप्यो छे.

२०४मा दूहाथी कुगुरुनो त्याग करी सदगुरुने अपनाववानुं अने पछी (२०८) मिथ्याधर्मने त्यागवानुं शीखवे छे. ढाल २१(२०)मां पांच प्रकारमां मिथ्यात्वनुं वर्णन अने तेना सेवनथी भवध्रमण दर्शावायुं छे. ढाल २२(२१)मां "सम्यक्त्व ब्रत"ना चार आगार अने छ छोडी (छूटछाट) समजावेल छे. अने ते पछी विनोदात्मक शैलीमां कविए 'मूर्ख'नां केटलांक लक्षणो बताव्यां छे.

‘छप्पय’ छंद कविने केवो सिद्ध हशे ते आवां कवित वांचतां समजी शकाय छे. याद रहे के कवि, प्रेमानन्द, शामळभट्ट अने अखाना पूर्वकालीन छे.

ढाल २३(२२)थी समकित प्राप्त करनार श्रावकनी नित्यकरणीनुं विस्तृत वर्णन प्रारंभाय छे. छ आवश्यकनां नाम बाद रात्रिभोजन त्यजवा अंगे वेद, पुराण, आगम, गीताना तथा मार्कन्डेय ऋषिना हवाला आपवापूर्वक रात्रिभोजनथी थतां दोषो-रोगो विशे वात समजावे छे. प्रसंगोपात्त, सात वर्खत क्यारे/क्यां पाणी न पीवुं तेनी शीख लखी छे (२३४-३७). त्यारबाद जिनपूजा आदि कृत्यो करवानां कहे छे. ज्ञान अंगे पुस्तकलेखन उपर भार आपीने सात क्षेत्रे धन वापरवानुं सूचन आपे छे. तेना प्रसंगे धन संचय करी राखनार कृपण थवाने बदले दान आपवानो आग्रह करतां कवि दाननो महिमा अने कृपणतानी लघुता पण वर्णवे छे (ढाल २४(२३)- तथा तेना दूहा).

२६० क्र.नो दूहो-

“ल्यख्यमी मंदिरमाहां छतां, मागण गया नीरास ।

तेहनी जनुनी भारि मुई, ऊदरी वह्यु दस मास ॥”

वांचतां ज, सौराष्ट्रना लोकसाहित्यमां बोलातो दूहो-

“जेनो वेरी घाथी पाढो गयो, अने मागण गयो नीराश,

एनी जननी भारे मरी, एने उपाड्यो नव मास”

याद आवी जाय छे. क्र. २६१ मांनी ‘गाहा’ अशुद्धप्राय छे. ढाल २५(२४)मां सम्यक्त्वनी आवश्यकता अने महिमा वर्णवी क्षायिकसम्यक्त्वनुं स्वरूप समजाव्युं छे. ढाल २६-२७(२५-२६)मां जीवे संसारमां करेली रङ्गळपाटनुं वर्णन अने तेमां महाभाग्योदये मनुष्यजन्म तेमज सम्यक्त्व मळ्यां होई तेने वेडफी न देवानी शीख अपाई छे. ढाल २८(२७)थी ढाल ३५(३४) सुधी सम्यक्त्वना पांच अतिचारेनुं विस्तृत स्वरूप दर्शावेल छे.

अहीं प्रसंगतः प्रतिमानिषेधक मतनो उल्लेख करीने तेमनी समक्ष प्रतिमानी सिद्धि करी आपनारां आगम-ग्रंथोना संदर्भ पेश करवामां आव्या छे (ढाल २८(२७)). बन्ने पक्षे सामसामे करेली दलीलो-खंडनमंडन पण विस्तारथी जोवा मळे छे. तेमां एक तबक्के “मूर्ति पथ्थररूप जड होवाथी

फल देवा समर्थ नहि बने” (कटी ३२४) एव प्रतिपक्षनी दलीलनो छेद एवा ज धारदार तर्क बडे उडाडतां कवि कहे छे के “सरकारी नाणांनो सिक्को निर्जीव होवा छतां ते देखाढीए के आपीए तो धारी वस्तु फलरूपे मेळवी शकाय छे, जे बतावे छे के जड पदार्थ पण सर्वदा निष्फल नथी होतो” (क्र.३२७). आवी अन्य दलीलो पण रसप्रद छे.

ढाल २९(२८)मां “आजे साधु नथी, अथवा छे ते शुद्ध-निर्दोष नथी” एवो मत अने तेनु निराकरण छे. ढाल ३०(२९)मां भुहपत्तिनो त्याग करनार (प्रायः तो आंचलिको)नो, चोथने त्यजी पांचमना पजूषण तथा चौदशने त्यजी पूनमनी पाखी करनारे मतनो, षट्कल्याणकवादी (खरतरो)ना मतनो उल्लेख थयो छे, अने जरा कडक बानीमां ते मतोना कविए लीधेला ऊधडा पण वांचवा मले छे. ढाल ३५(३४)मां अयोग्यनी संगतिथी थती हानिनां घणां उदाहरणो आप्यां छे, अने ए द्वारा मिथ्यासंगनो परिहार करवानुं मूच्चव्युं छे.

ढाल ३६(३५)मां पहेला अणुब्रत ‘स्थूल प्राणातिपात-विरमण ब्रत’नुं स्वरूप शार थाय छे. तेनो प्रधान सूर जीवदयानो छे. दया विना, दुर्लभ आ मानवजन्म हारी जवानी दहेशत बतावीने कवि प्रसंगतः दश दृष्टांतो ते अंगेनां विगते वर्णवे छे. ढाल ३७(३६)मां दयारहित धर्मनी अनेक वस्तुओ साथे तुलना करीने ते बधानी जेम दयाविहीन धर्मनो पण त्याग करवानुं कवि कही दे छे. ढाल ३८-४१(३७-४०)मां पण विधविध प्रकारथी दयाधर्मनो ज महिमा गवायो छे. ढाल ४२(४१)मां गृहस्थे दयापालन अर्थे बांधवाना दश चंद्रवानी विगत आपी छे. ढाल ४३(४२)मां पाणी गळवानो विधि दर्शव्यो छे, एमां गलणानुं माप पण वर्णवेल छे. ढाल ४५-४९(४४-४८)मां, जीवहिंसा करनारा मनुष्योनी रीत, तेमने मळनारां कुटु फल प्रत्ये ध्यानाकर्षण अने हिंसा नहि करवानी शीख, दया पाळीने मेघकुमार बनेला हाथीनी कथा, हिंसानां फल पामनार मृगापुत्र लोढियानो प्रसंग, अने रोजिंदा जीवन-व्यवहारमां आवनारा हिंसाना अवसरो तरफ ध्यान दोरी ने तेथी बचवानो उपदेश - आ बधी वातो थई छे.

द्वाल ५०(४९)मां बीजा 'मृषावाद-विरमण'नामना अणुव्रतनो अधिकार छे, तेमां पांच मोटां जूठनो आ व्रत लेनार माटे सदंतर निषेध कह्वो छे. ते उपरांत जूँदुं बोलवानां नुकसान तथा सत्य बोलनाराना सदृष्टांत अवदातनुं पण रोचक वर्णन थयुं छे. द्वाल ५१(५०)मां आ व्रतना पांच अतिचारो तथा तेने याल्वानो उपदेश अपायो छे. द्वाल ५२(५१)मां त्रीजा 'अदत्तादान-विरमण' अणुव्रतनो संबंध छे. चोरी केवुं महापाप छे, अने ते करवाधी केवी हानि थाय तेनुं वर्णन आमां मळे छे. चोरी द्वारा मेळवेला धनथी अत्यारे भले लहेर वर्तती होय, पण कालांतरे-भवांतरे पाडो के गधेडो थईने तेनुं देणुं चूकववुं ज पडशे (दूहा-क.५६९) ते वात वेधक शब्दोमां कविए मूकी आपी छे. कवित (५७१)मां देवादारनी स्थिति केवी माठी थाय तेनुं बयान सुभाषित-छप्पारूपे आप्युं छे, द्वाल ५३(५२)मां त्रीजा व्रतना पांच अतिचारो समजावेल छे.

अने हवे आवे छे चोथा व्रतनी वात. द्वाल ५४(५३)मां चतुर्थ अणुव्रत 'स्वदारा-संतोष-परस्त्रीगमन-विरमण व्रत'नो महान महिमा कविए गायो छे, आ ब्रह्मचर्य व्रत छे, तेना पालनना लाभ अपार छे. द्वाल ५५(५४)मां केवा केवा महान गणाता लोको पण आ व्रत चूकीने परनारीमां तथा विषयवासनामां अटवाया तेनी वात घणा विस्तारथी वर्णवाई छे. एज वातने फरीथो ४ कडीओ (चौपईओ)मां 'समस्या' नामक काव्यप्रकारमां पण कही छे. द्वाल ५५, ५७(५६), ५७ मां शीलनो महिमा गायो छे अने शीलवंत महात्माओनां नामो तथा गुणगान गायां छे. द्वाल ५८मां आ व्रतना पांच अतिचारो समजाव्या छे.

द्वाल ५९मां पांचमा 'परिग्रहपरिमाण' नामे अणुव्रतनुं स्वरूप छे. परिग्रह केवो अनर्थकारी छे ते, अने लोभवश थईने परिग्रह-काजे केवा केवा लोको केवां भयंकर काम करी गया तेनां दृष्टांतो वर्णवायां छे. पछी आवे छे समस्याकाव्य. तेमां परिग्रह भेगो करनारा पण छेवटे तो बधुं छोडीने चाल्या ज जाय छे ते वात पर भार मूकी परिग्रहनी व्यर्थता बतावी छे. द्वाल ६० तथा ६१मां एकी महान विभूतिओनां नाम गणाव्यां छे के तेमना जेवाने पण आखरे तो परिग्रह पड्यो मूकीने जवुं ज पड्युं छे. अर्थात् आवा महान

लोकोनी पण आ स्थिति होय, तो आपणे शा माटे 'मारुं मारुं' एम करतां वळगी रहेवुं ? एम कवि सूचवे छे. ढाल ६२मां ते व्रतना पांच अतिचारनी वात छे.

ढाल ६३मां छाड्या 'दिशापरिमाण' नामे गुणव्रतनुं तथा तेना पांच अतिचारेनुं स्वरूप वर्णव्युं छे. ढाल ६४ मां सातमा 'भोगोपभोगपरिमाण' नामे गुणव्रतनी वात आवे छे. दिशापरिमाण एटले रोज, महिनामां, वस्समां के आखा जीवनमां, कई कई दिशामां केटला विस्तार सुधी जवुं के न जवुं-ते अंगेनी मर्यादा आंकवानी छे. ज्यारे सातमा व्रतमां पोते आहार वगेरे तमाम बाबतोमां केटला पदार्थे भोगवी तथा राखी शके तेनी मर्यादा निश्चित करवानी छे. एमां मूळ चौद नियमो नित्य लेवाना-पाळवाना होय छे, तेनी वात ढाल ६४मां छे. ते पछीनी छ ढालो (६५-७०)मां आ व्रतना पांच अतिचारेनुं विस्तृत अने बारीक वर्णन थयुं छे. ढाल ६५मां सचित (सजीव) भक्षण अने सचित-प्रतिबद्ध-भक्षणरूप अतिचारना प्रकारे तथा तेनो निषेध ब्रताव्यो छे. ढाल ६६मां २२ प्रकारना अभक्ष्य पदार्थोनी तथा ढाल ६७मां ३२ जातना अनंतकायनी गणतरी आपी छे, जे त्याज्य छे. ढाल ६८-७०मां पंदर कर्मादानो (घोर पापमय-हिंसामय कार्यो)नुं विगते स्वरूप आप्युं छे.

आठमा 'अनर्थदंड विरमण' नामना गुणव्रतनुं विगतवार स्वरूप ढाल ७१मां छे. वगर काऱणे अने वगर लेवा देवाए मनुष्य जे पापाचरण करे ते अनर्थदंड. तेनाथी बचावनार आ व्रत छे. ढाल पछीना दुहाओमां आ व्रतना पांच अतिचार दशाविल छे. ढाल ७२मां नवमा 'सामायिक' नामे शिक्षाव्रतनी वात छे; ते पछीना दुहाओमां पांच अतिचारे, चार प्रकारनां सामायिक, तथा आ व्रतना आराधकोनुं वर्णन थयुं छे. ते पछी ढाल ७३मां दशमा व्रत 'देशावकाशिक' नामे बीजा शिक्षाव्रतनी वात आवे छे. शेष तमाम व्रतोना नियमेनो संक्षेप-संकोच आ व्रतमां करवानो होय छे. तेमां पाळवानी मर्यादा वर्णवीने साथे ज तेना पांच अतिचारे पण देखाड्या छे.

ढाल ७४मां अग्यारमा 'पौषधोपवास' नामे शिक्षाव्रतनुं वर्णन थयुं छे. 'पौषध' ए जैन श्रावकनी १२ के २४ कलाक सळंग करवानी एक

धर्मकिया छे, जेमां श्रावक महदंशे साधुतुल्य जीवन जीवे छे. पौषधमां करवानी करणी अंगोना विधि-निषेधो तथा ते ब्रतना पांच अतिचार आमां बताव्या छे. ढाल ७५मां बारमा 'अतिथिसंविभाग' नामना शिक्षाब्रतनुं स्वरूप आलेखायुं छे. पौषधोपवास करनारो श्रावक साधु आदिकने दान दीधा विना भोजन न करे-एवी आ ब्रत लेनारानी प्रतिज्ञा होय. साथे ज ब्रतना पांच अतिचारो पण कही दीधा छे.

ढाल ७६मां सुपात्रदान, साधर्मिकभक्ति, दीनोना उद्घार वगेरे कार्यो, मळेला धन थकी, करवानो उपदेश अपायो छे. ढाल ७७मां दानादि वडे पुण्य करनार अने न करनार मनुष्योनी सुख-दुःखादि स्थितिनो तफावत समजाव्यो छे, जे खूब मनन कर्वा लायक छे.

अने हवे कवि उपसंहार करवा भणी बळे छे. ७३३मी कडी (दूहो) थी ते शरु थाय छे. कवि कहे छे के में बार ब्रत गायां तेमां क्यांय भूल रही होय तो ते माटे कविने-मने दोष न आपशो; केम के हुं तो हुं ज मूळ अने गमार ! में तो माता-पिता समक्ष बालक बोले ते प्रकारे अहीं मनमां ऊग्युं ते बोली दीधुं छे. सांखी लेजो अने भूल होय तो सुधारजो.

आ पछी, ढाल ७८मां कवि गुणदेखा अने दोषदेखा एम बे जातना पुरुषोनुं स्वरूप जरा निरंते वर्णवे छे, अने पछीना दूहाओमां दोषदर्शीने दुःख अने गुणदर्शीने सुख-एवो निष्कर्ष पण आपी दे छे. ढाल ७९मां कवि, बार ब्रत लेनार अने पाळनारने केवां श्रेष्ठ सुख सांपडे छे तेनुं लोभामणुं वर्णन करे छे, अने छेले कडी ८५२मां जिनधर्म अने पास एटले पार्श्वनाथना पसायथी पोतानां सर्व कार्य सिद्ध थयां होवानो परितोष कवि दर्शवे छे.

ढाल ८०मां कवि पोताना धर्मगुरु विजयसेनसूरि महाराजनो तथा तेमना विशिष्ट प्रभावनो उल्लेख करीने, अकबर बादशाह द्वारा तेमने 'सवाई'नुं बिरुद मळेलुं ते ऐतिहासिक घटनानो निर्देश करे छे. तेमना शिष्य विजयदेवसूरिनो नामोल्लेख वगेरे करीने कवि एम सूचवे छे के अेमना धर्मसाम्राज्यमां आ रास पोतै रच्यो छे.

ढाल ८१मां कवि 'कलश' समान गीत गाय छे. तेमां १६६६

वि.सं.ना कार्तक वदी अमास (गुजराती आसो वदी अमास)ना दिवसे त्रिबावती-खंभात मध्ये आ रास रच्यो होवानुं जणावे छे. कार्तकी अमासे दीपकदाढो होवानुं जणावीने, ते समये गुजरातमां पण राजस्थाननी जेम दिन-मास-व्यवस्था हती तेम सूचवी दे छे. आ पछी पोतानो परिच्छय आपतां कवि कथे छे के जंबूद्वीप, भरतक्षेत्र, गुजरात देश, तेमां वीसल चावडाए वसावेल वीसलपुर नगर (वीसनगर). त्यांनो निवासी वीशा पोरवाड ज्ञातीय महीरज हतो. तेना पुत्र संघवी सांगण खंभातमां आवी रहेला. तेमना पुत्र ऋषभदासे त्रिबावतीमां ओ रास रच्यो.

प्राते पुष्पिका छे, ते उपरथी जणाय छे के १६६६मां रचेला आ रासने कविए छेक १६७९मां एटले के १४-१५ वर्ष पछी लिपिबद्ध कर्यो हतो.

८१मी ढाल-कलशगीत स्वरूप छे. आश्वर्यजनक रीते थोडाक शब्दिक फेरफारने बाद करतां, आ गीत अने कविए रचेल 'कुमारपाल रास'नुं कलशगीत बिल्कुल समान छे. आनी रचना १६६६मां छे, कुमारपाल रासनी रचना १६७०मां छे- ए मुख्य फेर. (जुओ जैगुक. ३ पृ. ३६-३७). आ अंतिम ढालमां बे स्थाने [-]मां मूकेलो पाठ ते जैगूक ३, पृ. २९मां छपायेला पाठने आधारे छे, तेनी नोंध लेवी.

कवि ऋषभदास स्वयं व्यापारी वणिक होईने तेमनी भाषा तथा लखावट अने जोडणी लगभग बोलचालनी शैलीमां छे. आ संपादनमां ते बधुं जेमनुं तेम रहेवा दीधुं छे. आनी बीजी प्रतिओ व्यांक हशे ज, अने तेनी साथे मेळवतां जोडणीनी दृष्टिए मोय फेरफारे पण जोवा मळे खरा. अथवा आपणे पण तेवा फेरफार करी शकीए. परंतु अहीं तेम करवानुं नथी स्वीकार्यु. कविनी अने ते समयनी बोलचाल, लखावट तथा जोडणी केवी हशे तेनो अणसार तथा अंदाज आमांथी अवश्य मळी शके, जे भंशोधननी दृष्टिए बहु उपयोगी बने. कविए, आपणे आजे ज्यां 'ज' नो प्रयोग करीए छीए, त्यां घणे भागे 'य' ज वापरेलो छे. दा.त. 'यम' - जेम, 'यगनाथ' जगनाथ, 'काय'- काज इत्यादि. तो ज्यां शब्दमध्ये 'र' आवे त्यां कवि 'र' उमेरीने ते शब्द मूके छे. जेमके - मुख - 'मुर्यख', कारमी - 'कार्यमी'

- वगेरे रथनुं 'रथ', घृतनुं 'घ्यर्त', कारणनुं 'कार्ण', व्रतनुं (क्यांक) 'व्रत' आवा आवा अनेक प्रयोगो भाषाविदो अने ध्वनिविदो माटे अत्यंत उपयोगी गणाय. आवा विषयमां ऊँडो अने व्यापक अभ्यास तथा रस धरावता बे मूर्धन्य विद्वानो, डो. भायाणी अने प्रा. कोठारी, जो हयात होत तो आपणने घंणाबधां संशोधनो पण मळत अने अभ्यासलेखो पण मळत.

केटलाक शब्दोना अर्थ पाछळ आपवामां आव्या छे. ते अंगे फरीथी स्पष्टता करवानी के पारिभाषिक शब्दोनो आ रासमां एट्लो मोटो समूह छे के तेनी सूचि ने अर्थ आपवा करतां तो रासनुं विवेचन करवुं ज वधु सुगम पडे. एट्ले ते शब्दोना अर्थ आपेल नथी. केटलाक शब्दोना अर्थ-संदर्भो मेलववामां प्रा. कान्तिभाई शाहे सहाय करी छे.

प्रांते एक पारंपारिक जनश्रुति उमेरुं के ऋषभदास खंभातमां माणेक चोकमां रहेता हता ते मकान तथा तेमांनुं लाकडानुं कलाखचित घरदेशसर आजे पण त्यां विद्यमान छे. ते मंदिरने ते मकानमांथी काढी लइने नजीकमां ज नवनिर्मित शंखेश्वरपार्श्वजिनालयमां सुचारु रीते गोठवेलुं छे. तेमज केटलांक वर्षो पूर्वे, नगरपालिका द्वारा, आ लखनारना प्रयासोथी, ते विभागने "श्रावक कवि ऋषभदास शेठनी पोळ" एवुं नाम पण अपायेलुं छे.



संपर्कसूत्र :

अतुल एच. कापडिया

ए/९, जागृति फ्लेट्स

महावीर टावर पाछळ, पालडी,

अमदाबाद- ૩૮૦૦૦૭

कवि ऋषभदास कृत व्रतविचारसाम

श्रीवितरणाय नम ॥

दूह ॥

पास जिनेस्वर पूजीइ, ध्याईइ ते जिनधर्म ।
नवपद धरि आराधीइ, तो कीजइ स्युभ कर्म ॥१॥

देव अरीहंत नमुं सदा, सीद्ध नमुं त्रणी काल ।
श्रीआचारय तुझ नमुं, शाशननो भुपाल ॥२॥

पूण्यपदवी ऊवज्ञायनी, सोय नमुं नसदीस ।
साद्ध सर्वेनि नीत नमुं, धर्म विसायांहा वीस ॥३॥

क्रोध मां माया नही, लोभ नही लवलेस ।
वीषइ वीषथी बेगला, भवीजन दइ ऊपदेस ॥४॥

उपदेशि जन रंजवइ, महीमा सरसति देव ।
तेणइ कार्य तुझर्नि नमुं, सार्द सारू सेव ॥५॥

समरू सरसति भगवती, समर्था कर जे सार ।
हु मुर्यख मती केलवुं, ते माहारो आधार ॥६॥

पीगल-भेद न ओलखुं, बिगर्ति नही व्याकर्ण ।
मुर्यख-मंडण मांनवी, हु सेवुं तुझ चर्ण ॥७॥

कवीत छंद गुण गीतनो, जे नवी जाणइ भेद ।
तु तूठी मुख्य तेहनि, वचन वदइ ते वेद ॥८॥

मुर्यख मोटो टालीओ, कवी कीधो कालदास ।
जगवीख्याता तेहवो, जो मुख्य कीधो वास ॥९॥

कीर्ति करु तुझ केटली, मूळ मुख्य रसना एक ।
कोङ्घ जिह्वाइ गुण स्तवुं, पार न पामुं रेख ॥१०॥

तोहइ तुझ गुण वर्णवुं, मूळ मती सारू भाय ।
नख मुख वेणी शीर लगइ, कवी ताहारा गुण गाय ॥११॥

द्वाल ॥२॥ (१)

दि(दे)सी-एक दीन सार्थपती भणइ रे० । राग गोडी० ॥

नखह नीरुपन(म) नीरमला रे, चलकइ यम रवी चंद ।
रेखा सुदर साथीआ रे, देखत होय आनंदो रे ॥१२॥
तूळ गुण गाईइ, कविजन कीरितु भायु रे, सार्द ध्याईइ ० आचली ॥
पदपंकजनुं जोडलु रे, नेवरनो झमकार ।
ओपयम जंघा केलिनी रे, सकल गुणेअ सहइकारो रे ॥१३॥ तू०॥
गजगत्य-गमनी गुणभरी रे, सीह हरव्युं रे लंक ।
ते लाजीर्नि बनी गयुं रे, हुतो सो य सुसंको रे ॥१४॥तु०॥
ऊदर पोयणनुं पनडु रे, नाभीकमल रे गंभीर ।
कंचुकचर्णा चुनडी रे, चंपकवर्णु ते चीरो रे ॥१५॥तु०॥
रीदइकमल बन दीपतु रे, कुंभ पयुधर दोय ।
प्रेमविलुधा पंखीआ रे, भमर भमंत ते जोयो रे ॥१६॥तु०॥
कमलनाल जसी बांहुडी रे, करि कंकणनी रे माल ।
बाजुबंधन बइहइरखा रे, विणानाद बीसालो रे ॥१७॥ तु०॥
करतल जासु-फूलडाँ रे, रेखा रंग अनेक ।
उंगल सरली सोभती रे, वर्णव करूंअ वसेको रे ॥१८॥ तु०॥
नख गुजानी ओपमा रे, झलकइ यम आरीस ।
नाशा शमइ यम दाम्यनी रे, त्यम चलके नशदीसो रे ॥१९॥ तुञ्ज०॥

द्वाल ३॥ (२)

देसी । भोजन ढो वरभार्मनि रे ॥ राग० केदार गोडी ॥

ऊर मुगताफल कनकनो रे, कुशमतणो बली हार ।
कोकीलकंठि काम्यनी रे, वदती जइ जइकार ॥२०॥

ब्रह्माणी तुं समर्था करजे सार,
तुझ नार्मि जइ जइकार, ताहारइ कंठि रयणनो हार,
चरणे नेवरनो झामकार, ब्रह्माणी तुं समर्था करजे सार ॥००॥

चंदमुखी मृगलोयणी रे, कनककचोलां गाल ।
नाशक ओपम कीर्नी रे, अष्टम ते ससी भाल ॥२१॥ भ्र०॥

जीम अमीनो कंदलो रे, अधु(ध)र प्रवाली रंग ।
दंत जशा डाडिम-फुळे रे, अकल अनोपम अंग ॥२२॥ भ्र०॥

भमरि वंक जिम वेलडी रे, धनुष चढाव्युं बाण ।
मुर्यख सहि वही चालीआ रे, वेध्या जाण सुजाण ॥२३॥ भ्र०॥

श्रवण ते कांम हीडोलड्या रे, नाम नगोदर झालि ।
वेणी वाशग जीपीओ रे, हंस हराव्युं चालि ॥२४॥ भ्र०॥

फूली सइथो राखडी रे, बीटली खंति भालि ।
ऊपरि सोहइ मोगरो रे, जिम स्युक अंबाडलि ॥२५॥ भ्र०॥

मुगताफल भखी जेहनुं रे, तेणइ वाहनी चढी माय ।
कवीजन समरइ सारदा रे, तस मुख्य रमवा जाय ॥२६॥ भ्र०॥

रमती रंग एम भणइ रे, कवी कवयु गुणमाल ।
एह वचन श्रवणे सुणी रे, नर हर्ष्या ततकाल ॥२७॥ भ्र०॥

हु हर्ख्यों कवीजन कवुं रे, ऊतम कुल आचार ।
नसनारी सहु संभलु रे, वरत कहुं जे बार ॥२८॥ भ्र०॥

दूहा० ॥

एणइ जगी धर्म-युगल कह्या, भाख्या श्रीजिनराय ।
श्रावक धर्म यती तणो, सुणयु एकचीत लाय ॥२९॥

दाल०४ (३) चोपई० ॥

लाई चीत सुणयु सहु कोय, दसवीध्य धर्म यतीनो होय ।
ख्यमावंत निं आर्जवपणुं, मान न राखइ मनम्हां घणुं ॥३०॥

लोभरहीत मुनी लागु पाय, जिम आतमदूख सघलाँ जाय ।
बारे भेदे जे तप तपइ, अष्ट कर्म ते हेलाँ खपइ ॥३१॥

बारइ भेद मुनी एम आदइ, उपवास अणोदर बहु तप करइ ।
द्रव्यसंखेपण रसनी ताय, कायकलेश करइ मनदाहाजिं ॥३२॥

संवरइ अंद्री पोतातणाँ, तो तस कर्म खपइ अतीघणाँ ।
गुरु पासइ आलुअणी लीइ, आतम सीख एणी परि दीइ ॥३३॥

वीनो वा(व)डानो सरवइ जेह, वयावछादीक करतो तेह ।
वली तप भाख्युं जे सझाय, ध्यान करंतां पात्यग जाय ॥३४॥

काओसर्ग तो एम करवो कह्युं, जिम थीर पासकुंभारह रह्यु ।
ते जिनवरनुं नाम ज जपइ, बारे भेदे एम तप तपइ ॥३५॥

संयम चोखुं पालइ जेह, सत्यभाषा मुख्य भाख्यइ तेह ।
नीर्मल आतम राखइ अस्यु, तेहर्नि दोष न लागइ कस्यु ॥३६॥

कोडी एक न राखइ कनइ, ते मुनीवर पणि तारइ तनइ ।
ब्रह्मचरय नवविध्यस्यु धरइ, ते मुनिवर जगि तारइ तरइ ॥३७॥

द्वृह० ॥

दसविधि धर्म यतीतणो, कह्युं ते सुणयु सार ।
नर ऊत्तम ते सांभलो, श्रावक कुल आचार ॥३८॥

बारइ व्रत श्रावकतणाँ, श्रावक सो गुणवंत ।
गुण एकवीसइ तेहना, सहु सुणज्यु एकच्यंत ॥३९॥

द्वाल० ५(४)॥

देसी० नंदनकु त्रीसला हुलरावइ ॥राग० असाउरी०॥

धर्मरक्षनि युगि कहीजइ, जस गुण ए एकवीसो रे ।
छिद्ररहीत जे श्रावक होइ, तस चर्णे मुङ्ग सीसो रे ॥४०॥

धर्मर्लानि युगि कहीजइ० आंचली० ॥

रुपवंत जोईइ गुण बीजइ, सोमप्रगति नर सोहीइ रे ।
लोक सकलर्नि होइ नर वलभ, करुर द्रीष्ट नवि जोईइ रे ॥४१॥ धर्म०॥

पापभीर श्रावकपणि होइ, छठो गुण ए जांणो रे ।
पंडीत नर पभणीजइ, श्रावइ (क?) ए गुण सात वखांणो रे ॥४२॥ ध०॥

दाख्यण, लज्या अर्नि दयातुं, मध्यशवरती वंदो रे ।
सोमदीष्ट जोईइ श्रावकनी, जिम पून्यमनो चंदो रे ॥४३॥ धर्म०॥

गुणांणरागी नर गुणवंतो, कथा कहइ नरतारू रे ।
भला पक्षनो जे नर होइ, सो श्रावकपणि वारू रे ॥४४॥ धर्म०॥

दीर्घदीष्टी सोलसमो गुण, वसेखतणो वली जांणो रे ।
बीनो वडानो राखइ रंगि, श्रावक सोय वखाणो रे ॥४५॥ धर्म०॥

कीधा गुणनो जे जगी जांणो, सो श्रावक नीत्य वंदो रे ।
पर-ऊपगारी जे नर होसइ, सो पणि सुरतरु कंदो रे ॥४६॥ धर्म०॥

लभधिलखी ते श्रावक साचो, रहीइ तेहर्नि संगि रे ।
ए गुण एकविसइ सहु सुणयु, नर धर्यो नीत अंगि रे ॥४७॥ धर्म०॥

दूहा० ॥

एकवीस गुण अंगि धरी, ध्याओ ते जिनधर्म ।
ग्रही ब्रत चोखुं पालीइ, पद लहीइ यम पर्म ॥४८॥

बारइ बोल सोहामणा, सुणज्यु सहु गुणवंत ।
लीधु ब्रत नवि खंडीइ, भाखइ श्रीभगवंत ॥४९॥

ढाल० ६ (५) ॥

देसी० भवीजनो मती मुको जिनध्यानिं०॥ रा-शामेरी ॥

गुरु ग्यरुआ मुनीवर कनि, जे कीधु पचखांणो रे ।
ते नीसचइ करी जन पालु, जिहा घट धरीइ प्राणो रे ॥५०॥

कवीजनो गुण गाओ जिनकेरा,
आलपंपाल म म ऊचरे, जस म म बोलो अनेरा रे ।
कवीजनो गुण गाओ जिन केरा, आंचली० ॥

तत्त्व त्रणे आराधीइ, श्रीदेव गुर निं धर्मो रे ।
समकीत सुधु राखि समझो, जईन धर्मनो मर्मो रे ॥५१॥ क०

देव श्रीअरीहंत छइ, जस अतीसहइ चोतीसो रे ।
दोष अढार जिनथी पणि अलगा, वाणी गुण पांतीसो रे । क० ॥५२॥

दोष अढार जे जिन कहा, ते नही अरीआ पासइ रे ।
यु मृगपति दीठइ मदि मातो, मेगल ते पणि नाहासइ रे । क० ॥५३॥

दांन दीइ जिन अतीघणुं, को न करइ अंतराइ रे ।
लाभ घणो जिनवर तुझ जाणुं, बहु प्रतिबोध्या जाइ रे । क० ॥५४॥

अंतराय जिननि नही, वीर्याचार वसेको रे ।
तप जप तुं संयम जिन पाल[त], आलस नही जस रेखो रे ।
क० ॥५५॥

भोग घणो भगवंतनि, अनि बली अवभोगाइ रे ।
सूर नर कीनर गुण तुझ गाइ, वंदइ प्रभुना पाइ रे । क० ॥५६॥

हाशविनोद कीडा नही, रती अर्ती नही नामो रे ।
भय दूरांछा जिन नवी राखइ, शोक अनि नही कामो रे । क० ॥५७॥

मीथ्या मुख्य नवी बोलबुं, जिननि नही अज्ञानो रे ।
नीद्रा नही नीसचइ सहु जाणो, अवर्तीनि नही मानो रे । क० ॥५८॥

राग द्वेष जिन जीपीआ, लीधो सीवपूर्खासो रे ।
ते जिनवर पूजंतां पेखो, पोहइचइ मननी आसो रे । क० ॥५९॥

दूहा० ॥

आशा पोहोचइ [मनत]णी, जपता जिनवर नाम ।
अतीसहइ चोतीस जिनतणा, ते बोलु गुणग्राम ॥६०॥

ढाल० ॥ [६] ॥

देसी० अंबरपूरथी तिवरी० ॥राग-गोडी॥

अतीसहइ चोतीस जिनतणा, प्रथमइ रूप अपारे ।
रोगरहीत तन नीरमलुं, चंपकगंध सुसारे ॥

त्रुट्क० ॥

सार चंपक तन सुगंधी, भमर भंगि तिहाँ भमइ ।
सास निं ऊसास सुंदर कमलगंधो मुख्य रमइ ॥
रुधीर मंश गौखीर-धारा, अद्वीष्ट आहार नीहार रे ।
सहइजना ए च्यार अतीसहइ, कर्म-धाति अग्यार रे ॥६१॥
समोवसर्णि बार परखधा, योयनमार्हि समायु रे ।
वाणी जोयनगाम्यणी, बूझइ सूर-नररायो ॥

[त्र०] राय बुझ[इ]रवि सरीखु, भामंडल पूर्ठि सही ।
जोअण सवासो लग पलाई, रोग नीसचइ ते... (?) ॥

सकल वइर पणि विलइ जाइ, सातइ ईत समंत रे ।
मारि (भ)र्गी नही, अना(वृष्टी) अतीब्रीष्टी नवी हंत रे ॥६२॥
अनवृष्टी नही जिन थकइ, दूर्भाग्य नहीअ लगारे रे ।
[निजच]क परचक भइ नही, ए गुण जुओ अग्यारे ॥

त्र० अग्यार गुण ए केवल पांमि, सुर कीआ ओगणीस रे ।
धर्मचक आकाश चालइ, चामर दो नशदीस रे ॥

रलसीघासण पादपीठहँ छ्छत्र त्रणि सही सीस रे ।
अंद्रधज आकाश ऊचो, जुओ जिनह जगीस रे ॥६३॥

परमेस्वर पग जिहा ठवइ, कमल धरइ नव खेवो ।
रूप-कनक-मणि-रत्नमइ, तीन रचइ गढ देवो ॥

त्र० देव गढ त्रणि रचइ रंगि, समोसर्ण्य चोरूप रे ।
अस्योख तरु तलि वीर बइसइ, जुओ जिनह सरूप रे ॥

अधोमुख्य त्याहा कहु कंटीक, सकल विर्ष नमंत रे ।

दूदभी आकाश वाजइ, शब्द[स]हुअ रचंत रे ॥६४॥

पवन फरुकइ कुअलु, अतिज्ञीणो अनुकुलु ।

पंखी दइ परदक्षणा, स्युक[न बोलइ] मुख्य मुलु ॥

त्रु० मुल मुख्यथी स्युकन बोलइ सुगंधव्रीष्ट सोहामणी ।

सूर सोभागी सोय वरसइ पूफब्रिष्ट होइ घणी ॥

समोसरणि पंचवर्णा पूफ ते ढीचणसमइ ।

नख केस रेमह ते न वाधइ सुखोड्य त्याहां रंगि रमइ ॥

अंद्रीनि अनुकुल होइ षट सोय रक्ती सोहामणी ।

चोत्तीस अतीसहइ एह चंतइ लहइ संपति सो घणी ॥६५॥

दूहा० ॥

संपह सुख बहु पामीइ, धन कण कंचन हाट ।

ते जिन कां नवि सपरीइ, जिणइ मद जी[प्या] आठ ॥६६॥

ढाल० ८॥ (७) ॥

देसी० नंदनकु त्रीसला हुलरावइ० ॥

आठइ मद जे मेगल सरीखा, जिन जिपी जिन वारइ रे ।

मान[थकी] गति लहीइ नीची, पंडीत आप वीचारइ रे ॥६७॥

आठइ मद जे मेगल सरीखा० अंचली० ॥

जाति[मद] नवि कीजइ भाई, लाभतणो मद तजीइ रे ।

ऊंच कुलानुं मान क[रीनइ] [नीच] कुलां जई भजीइ रे ॥आठइ०॥६८॥

प्रभुताने ए बलमद वारे, रूपमांन एकमन्नो रे ।

स[नतकु]मार जुओ जगी चक्रवइ, अंगि रोग ऊपनो रे ॥आठइ०॥६९॥

तपमद करतां पूण्य पलाइ, श्रुतमद मुर्यख थर्हइ रे ।

कहइ जिनराज सुणो रे लोगा, चोखइ चर्यंति रहीइ रे ॥आठइ०॥७०॥

दूहा० ॥

चीत चोखुं नीत राखीइ, हईइ सुजिनवर ध्यान ।
कर्मरहीत जिन ध्याईइ, तो लहीइ बहुमान ॥७१॥

छाल० ९ (८)॥

देसी० एणो परि राय करता रे० ॥

हु जपुं जिन सोय रे कर्मइं मुकीओ, सीबमंदिर जई ढूँकीओए ॥७२॥
यलि आठइ कर्म रे नाणांवर्णीअ, कर्म कठण जे दंसणा ए ॥७३॥
मोहनी निं अंतराय रे ए पणि खइ करइ, तव अरीहा केवल वरइ ए ॥७४॥
आऊखुं निं नामकर्म रे [भे]गी वेदनी, गोत्रकर्म जिन खइ कीउं ए ॥७५॥

दूहा० ॥

आठि कर्म जेणइ खेपब्यां, कीओ सु परऊपगार ।

नर उत्तमां ते कहुं, तीर्थकर अवतार ॥७६॥

अंद्रतणी पदवी लही लहुं चक्री भोग ।

तीर्थकर पद नामनो एह लहो संयोग ॥७७॥

पूर्व पूण्य कीआ व्यनां, ए पदवी किम होय ।

विसथानक विण सेवीइ, जिन नवि थाइ कोय ॥७८॥

छाल १० । (९) ॥

देसी० राम भणइ हरी उठीइ० ॥ राग-रामग्यरी ॥

[वीसथानक] एम सेवीइ, अरीहंत पूजि ते पाय रे

सीधस्यु सही चीत लाय रे, प्रवच[न] रे,

आचारय गुणगाय रे, ॥७९॥

..... वीसथानक एम सेवीइ । आचली० ॥

थीवर यती रे आराधीइ, उवझाय रे ।

साध सकलनि सो ध्याय रे, आठमइ न्यान लखाय रे,

ते नर अरीहंत थाय रे ॥८०॥ वी०॥

नवमइ दंसण जांण जे, दसमइ विनओ ते भाष्य रे ।
 आवसग नीर्मल राख्य रे, भ्रमब्रत ते जिन साख्य रे,
 तेरमइ क्यरीआ तु दाख्य रे..... वी० ॥८१॥

तप त्रविधि रे आराधीइ, गणधर गऊतमस्वाप्य रे ।
 जिनवर भगति भली परि, पूजी प्रणमो ते पाय रे.... वी० ॥८२॥
 चारीत्र चोखुं रे सेवीइ, न्यान नवुं अवडाय रे ।
 श्रुतपूजा सोय कराव्य रे, चतुर्वीध्य संघ पङ्हइगराव्य रे,
 एम वीसथानक भाव्य रे..... वी० ॥८३॥

दूहा० ॥

वीस थानक सेवी करी, जे समर्या गुणवंत ।
 तास तणा पद पूजीइ, ते भजीइ भगवंत ॥८४॥
 पूर्यि पातिग छूटीइ, जपीइ जिनवर सोय ।
 च्यार प्रकारि सधहता, शमकित नीर्मल होय ॥८५॥
 च्यार नखेपा जिनतणा, त्रीजइ अंगि जोय ।
 एणी परि जिन आराधता, आतम नीर्मल होय ॥८६॥
 नांपजिन पहइलुं नमुं, भावजिना भगवंत ।
 द्रव्यजिन चोथइ थापना, सहु सेवो एकच्यंत ॥८७॥
 जिनप्रतिमा जिनमंदिरइं प्रेम करीनि जोय ।
 आशातना भगवंतनी, नर म म करयो कोय ॥८८॥

द्वाल ११ । (१०) ॥

देसी० गुरनि गालि सुणी नृप खीयु० ॥ राग-मारु ॥

जिनमंदिरमाहिं जिन आगलि, आशातना नवी कीजइ रे ।
 तंबोल वांणही अनइ थुकवुं, जिनमंदिर जल नवी पीजइ रे ॥८९॥
 भगति करीजइ रे, कर्म खपीजइ रे ॥ आंचली० ॥

मईथन त्याहा नरि कीजइ नीसचइ, ए उपदेसनु झ सारो रे ।
लोढ़ी नीत नषेधो मानव, वडी सो वेगी नीवारो रे.... ॥१०॥

भगति क० ॥

भोजन सूअण अर्नि जुवडु जिनमंदिर ते म म खेलो रे ।
आशातना जो कीजइ त्याहिं, जिब होइ अतिमझ्लो रे ॥११॥ भ० ॥

दूह० ॥

देव अरीहंत अस्या कहू गुरु भाष्यु नीग्रंथ ।
गुण छत्रीसइ तेहना, भवीजन देयो च्यंत ॥१२॥

पांचइ अंद्री संवरइ, नववीत्य भ्रह्म सार ।
च्यार कषाइ परीहरइ, पंच माहाव्रत धार ॥१३॥

मूनीवर मोटो ते कहुं, पालइ पंचाचार ।
पंच सुमति रखि रखतो, त्रणि गुपति नीरधार ॥१४॥

गुरुगुण छत्रीसइ कह्या, सुत्र सीधांति जेह ।
वलि गुण आचार्य तणा, नर सुणयो सहु तेह ॥१५॥

द्वाल १२ । (११) ॥

देसी० सासो कीधो सांमलीआ. ॥

आचार्यना गुण छत्रीसइ, ते कहइसु मनरंगि ।
ते मुनीवरसु ध्यान धरीस्यु, इहइस्यु तेहर्नि संगि ॥१६॥

रूपवंत जोईइ आचार्य, सूदर (?) सोभीत देह ।
ते देखीर्नि रजा रंजइ, लोक धरइ बहु नेह ॥१७॥

कुमर अनाथी देखी समकीत, पाप्यो ते श्रेणीक रथ ।
जईन धर्म भुपति जे समज्यु, रूपतणो महीमाय ॥१८॥

तेजवंत जोईइ आचार्य, को नवी लोपइ लाज ।
जईन धर्म नहं ओर वली दीपइ, स्युभकर्णिनां काज ॥१९॥

युगप्रधान युगबलभ जोईइ, त्रीजो गुण तु जांण्य ।
पीस्तालीस आगम जे कहीइ, ते बोलइ मूळ्य वांण्य ॥१००॥

मधुर वचन मूनीवरनुं जोईइ, उपजइ सहु संतोष ।
गंभीरे यम सायर साचो, न कहइ परनो दोष ॥१॥

च्यतुरपणि बुध्य चाखी जोईइ, रंगि दइ उपदेस ।
धर्म देसना देतां मूनीवर, आलस नही लवलेस ॥२॥

कोहोनुं वचन न सर्वइ साचइ, सोमप्रगती मुनी होई ।
सकल शाहास्त्रनो संघरइ करतो, शील धरइ रखी सोही ॥३॥

अग्यारमो गुण अभीग्रहइ धारी, आपथुई न करंत ।
चपलपणुं ते चतुर न राखइ, प्रशन-रोदइ मूनी हंत ॥४॥

प्रतिरूप आदी देइनि जांणो, ए गुण चउद अपार ।
दस गुण मुनीवरना हवइ कहइस्यु, तेहमां घणो वीचार ॥५॥

ख्यमावंत ते मूनीवर मोटो, जेहनि नही अभीमांन ।
मायारहीत जोईइ आचार्य, नीरलोभी तप ध्यान ॥६॥

संयमधारी निं सतवादी, नीरमल जस आचार ।
कोडी एक कर्नि नवी राखइ, नववीध्य भ्रह्म सार ॥७॥

ढाल १३ । (१२) ॥
देसी० मनोहर हीरजी रे ॥ राग- परजीओ ॥

बार भावनाना गुण बारइ, आतमभावीत होसइ ।
सकल पदार्थ ते नर लहइशइ, सीवमंदीरनि जोसइ ॥८॥

गुण ते नरतणा रे, जे मुनी अती गुणवंतो ।
क्रोध मांन माया मद मछर, आण्यु कांम ज अंतो ॥
गुण ते नरतणा रे, जे मुनी अतीगुणवंतो० ॥ आचली ॥
अनीत भावना नर एम भावइ, ध्यन यौवन परीवारो ।
गढ मढ मंदीर पोलि पगारा, को नवी थोर नीरधारो ॥९॥ गुण०॥

असर्ण भावना नर एम भावइ, नही मुझ कोय सखाई ।
 मात-पिता कंता निं भगनी, को नवी राखइ भाई ॥१०॥ गुण० ॥

ध्यान धरो तो ऋषभदेवनुं, अवर सहु जंजालो ।
 जिनना सर्ण विनां नवी छुट्ठ, सूरपति को(के) भुपालो ॥११॥ गुण० ॥

संसारनी ते भावइ भावना, जगि दीसइ जंजालो ।
 एक नीर्धन निं एक धनवंता, चाकर निं भुपालो ॥१२॥ गुण० ॥

एक मंदिर बहु बालीक दीसइ, एक घरि नही संतानो ।
 एक मंदिर बहु रदन करंता, एक मंदिर बहु गांनो ॥१३॥ गुण० ॥

एकत्व भावना मुनी एम भावइ, नही मुझ कोय संघांतो ।
 आव्यो एकलो जाईश एकलो, ए जगमांहां वीछ्यातो ॥१४॥ गुण० ॥

अनत्व भावना कहीइ पांचमी, तेहनो एह बीचारो ।
 जीव अर्नि ए काथा जुजूई, काई नवी दीसइ सारो ॥१५॥ गुण० ॥

जीव मुकी जाशइ कायार्नि, काया केड्य न जायु ।
 तुस्युनी गणी निं सहु पोषो, फोकट भारे थायु ॥१६॥ गुण० ॥

अस्युच भावना भेद कहु छु, सुणयो सहुअ सुजांणो ।
 देही सदा ए छइ दूरांधी, म करो कोय वखांणो ॥१७॥ गुण० ॥

आश्रव भावना भेद भणीजइ, जेणइ आवइ बहु पापे ।
 माहामुनी वरते वेगी नीवारइ, न करइ आप संतापो ॥१८॥ गुण० ॥

संवर भावना भली वखाणुं, पातीग जेणइ रुधाइ ।
 पांचइ अंद्री मुनी वश राखइ, तो घट नीर्मल थाइ ॥१९॥ गुण० ॥

नोमी भावना कहु नीर्जरा, जे एव-इ त— हु- थाइ ।
 कर्मु खपइ नर कईअ कालनां, वइहइलो मुगति जाइ ॥२०॥ गुण० ॥

लोक भावना चक्कद राजनी, भावइ आपसरूपो ।
 ए जीर्वि ते सहुइ फरस्यु, कीधां नव नव रूपो ॥२१॥ गुण० ॥

धर्मभावना एणी[परि] भावइ, संसारि ए सारे ।

धर्म विनां जीव मुगत्य न पावइ, ते नीसच्चइ नीरधारो ॥२२॥ गुण०॥

बोध्य भावना कहुं बारपी, भावो सो रषिराजो ।

समकीत सुधुं रखो रंगि, जिम सीझइ भवकाजो ॥२३॥ गुण० ॥

दूह० ॥

काज सकल सीझइ सही, जे गुरु वंदइ प्राय ।

गुरु गुणवंतो ते कहु, परीसइ न दोहोल्यु थाय ॥२४॥

परीसा बावीस जीपतो, परीसइ न जीत्यो तेह ।

ऋषभ कहइ गुरु ते भलो, सहु आराधो तेह ॥२५॥

ढाल १४ । (१३) ॥

देसी० त्रपदीनी० ॥

जे मुनी चार्व रंगि रमसइ, ते नर बावीस परीषह खमसइ ।

काल सुखि ते गमसइ, हो रख्यजी, का० ॥२६॥

ख्यात्या तणो परीसो ते पइहइलो, माधवसूत मन न कीउ मइलो ।

दंडण मुगतिं बइहइलु, हो रख्यजी० ॥२७॥

त्रीषा तणो परीसो अ बीचारो, जल ऊतरतो रषि संभारे ।

एम आतम तुम तारे, हो रख्यजी० ॥२८॥

सीतकालनो परीसो साचो, जीव खमत म होईश काचो ।

सुख लहीइ अती जाचो, हो रख्यजी० ॥२९॥

उष्णकाल आर्वि म म धुजो, सोय संघार्ति साहामा जुजो ।

जो जिनवचनां बुझो, हो र० ॥३०॥

डंस-मसा म म दूहवो हाथि, ते परीसो खमीइ नीज जार्ति ।

पूत्र चलाची भार्ति, हो० ॥३१॥

वख तणो परीसो पणी जाणो, मइलां फाटां मनि म म आणो ।

को म म वख वखाणो, हो रख्यजी० ॥३२॥

रती परीसो ख्यमीइ नीज खांति, ए त्यम अरती सोय एकांति ।
खीपरीसो ऊपसांति, हो० ॥३३॥

चालंतां पर्थि म म चुको, जीव जतन पूंजी पग मुंको ।
जिम सिवमंदिर ढुंको, हो० ॥३४॥

ऊपाशगानो परीसो सहीइ, दीनवचन मुख्यथी नवि कहीइ ।
तो गति उची लहीइ, हो० ॥३५॥

सेयानो परीसो अतीसारो, ए तारइ छइ मुझह बीच्यारो ।
अस्यु मनि आप बीचारो, हो० ॥३६॥

वचनतणो परीसो वीकराल, अं(अ)ग्यन बीनां उठइ छइ झाल ।
कोध चढइ ततकाल, हो० ॥३७॥

वचन खमइ ते जगवीख्यात, यम खमीओ शकोशल तात ।
कीर्तधर नरनाथ, हो० ॥३८॥

वध-परिसो ते बीषम भणीजइ, जे खमसइ नर सो थुणीजइ ।
तास कीर्ति नीत्य कीजइ, हो० ॥३९॥

मारि न चल्यु द्रढह-प्रहारी, समता आणइ संयमधारी ।
ते नर मोक्षदूआरी, हो० ॥४०॥

जाच्यनानो परीसो पण खमीइ, मधुकरनी परि मुनीवर भमीइ ।
संयमर्हिंग रमीइ, हो० ॥४१॥

थोडइ लाभि रोस न कोजइ, ऊशभ कर्मनि दोसह दीजइ ।
पर अवगुण नवि लीजइ, हो० ॥४२॥

रोग परीसो खमसइ जे खांति, ऊची पदवी लहइ एकांति ।
सीधतणी ते पार्ति, हो० ॥४३॥

सनतकुमार सहा सही रोगो, ओषधनो हुतो तस युगो ।
कहइ मुझ कर्मह भोगो, हो० ॥४४॥

त्रण तणो परीसो जे सइहइसइ, अष्टकर्म ईधण परि दइहसइ ।
सकल पदार्थ लइहइसइ, हो० ॥४५॥

मल परीसइ जे मुनीवर मातो, सुंदर दीसइ पंथि जातो ।
लोक सकल तीहा रातो, हो० ॥४६॥

जो सतकार न दइ शनमानो, तो तु म करीश मनि अभीमानो ।
हईडइ करजे सानो, हो० ॥४७॥

विद्यातणुं अभीमान न कोजइ, मुर्यख तेहनि गाल्य न दीजइ ।
संयमनुं फल लीजइ, हो० ॥४८॥

कर्म तुझ कीधो अग्यनांन, भणता देखो मइलुं ध्यान ।
म करीश जो तुझ सान, हो० ॥४९॥

समकीत सहु राखो मन सार्खि, को म म चुको कोट्स लार्खि ।
रहोइ जिनवर-भार्खि, हो० ॥५०॥

ए बाविसइ परीसा जाणु, जे खमसइ नर सोय बखाणु ।
नाम रीदइम्हां आणु, हो० ॥५१॥

दूहा० ॥

नाम रीदइम्हां आणीइ, आतम नीर्मल थाय ।
परीसइ जे नर नवी पड्या, कवी तेहना गुण गाय ॥५२॥

ढाल १५ । (१४) ॥
देसी० ए तीर्थ जाणी पूर्वनवाणु वार० ॥

बहु परीसइ सबलु, वर्धमान जिन वीरो ।
जस श्रवणे खीला, चर्णे गंधी खीरो ॥५३॥

खंधक सूखना सम्य, पंचसया मुनी जेहो ।
घाणइ पणि पील्या, मनि नवि डोल्या तेहो ॥५४॥

मुनीवर नीत्य बंदो ग्यरुओ गजसुकमालु ।
शरि आयन धरतां, जे नवी कोप्यो बालु ॥५५॥

रषि श्रीशकोसी, कर्म त्यणि सांहामो जायु ।
परीमइ नवि कोप्यु, ते वंदो रषीरायु ॥५६॥

जुओ अ... ली, जेणइ जगड़ि राखी लीहो ।
लोकि बहु दमओ, पणि नवी कोप्यु सीहो ॥५७॥

वली पूत्र चलाची, कीडी तास शरीये ।
अढ़ी दिवश लर्गि वली, फोल्नि न चलु धीये ॥५८॥

वाधर पणि बीर्ण्यु, मुनी मेतारज सीसो ।
तोहइ पणि नावी, दूर्जन ऊपरि रीसो ॥५९॥

जंबुक घरि घर्णी, अती मुखी वीकरालु ।
तेणइ मुनी भखीओ, कुमर अवंती बो(बा)लो ॥६०॥

दूहा० ॥

एम मुनीवर आगइ हवा, सो समर्हि सूख थाय ।
गुण सतावीस जेहमां, ते वंदू रषीराय ॥६१॥

ढाल १६ । (१५) ॥

देसी० सांमि सोहाकर श्रीसेरीसइ० ॥

गुण सतावीस सुणयु साधुना, मुनीवर मोये न करइ विराधना ॥
त्रुटक० वीराधना मुनी मन्य न करतो, सोय गुरु मनमां धरी,
कांम क्रोध माया मछर भरीआ, तेह मुकु परहरी ।
जीव न परनो हणइ मुनीवर, म्रीषा मुख्य बोलइ नही,
दान-अदिता न लहइ रख्यजी, भ्रह्म न चुकइ ते कही ॥६२॥

परिग्रहइ ते पणी मुनीवर परीहरइ, रात्रीभोजन सो मुनी नवी करइ ॥
त्रु० नवी करइ मुनीवर आहार राति, छह कायर्नि राखतो,
बलि पांच अंद्रीअ निं दमतो, वचन-अमृत भाखतो ।
क्रोध मांन माया लोभ टालइ, भाव सहीत पडिलेहणा
कर्णसीत्यरी चर्णसीत्यरी, धरनार होइ तेहतणा ॥६३॥

संयमयुगता रे मधुर भाषता, मन निं वचनां काया थीर राखता ॥

त्रु० राखता थीर मन वचन काया, सीतादिक-परिसो सहइ,
मण्ठात ऊपसर्ग सो खमता, कर्म ईधण एम दहइ ।
गुण सतावीस एह सुधा, मुनी अस्यु आराधीइ
अस्या गुरुना चर्ण सेवी कवी कहइ नीर्मल थईइ ॥६४॥

दूह० ॥

नीर्मल आतम जेहनो, नीर्मल जस आचार ।
मुनी एहो(ह)बो आराधीइ, तो लहीइ भवपार ॥६५॥
धर्म कह्हो जे केवली, ते घोड़ मनि सति ।
दयामुल आग्यना भली, सहु सेवो एक चति ॥६६॥

ढाल १७ (१६) चोपई० ॥

कुदेव कुगुर कुधर्म बीचार, ए ब्रणे तु जाण्य असार ।
हरि हरि विप्रा मीथ्या धर्म, ए तु छंडे समझी मर्म ॥६७॥
जे देखीनि सूरो भड़, कायरतणा त्याहा प्रांण जे पड़ ।
ते वाहालु वलि जेहनि होय, सोय देव म मांनो कोय ॥६८॥
ऊमया वाहननु भष्य जेह, ऊत्तम लोके छंड्यु तेह ।
ते भोजन भखवा निं करइ, सो सेव्यु तुझ स्यु ऊधरइ ॥६९॥
जे जई बहतुं ऊचह शरइ, एकइ जाति आठइ मरइ ।
तेहनी ईछ्या करतो देव, स्यु कीजइ जगी तेहनी सेव ॥७०॥
कांमी नर जस जोतो फरइ, मुनीवर तेहनि नवी आदरइ ।
असी वस्त सार्थि जस रंग, ते देवानो म करो संग ॥७१॥
जेणइ आवि नर रतो थाय, स्युकीत कर्युं ते सघलुं जाय ।
सोय वस्त दीसइ जे कर्नि, ते देवा स्यु तारइ तर्नि ॥७२॥
मूगट जयम्हा राखइ गंग, छानो तेहस्यु करतो संग ।
ईस देवनुं अस्यु सरूप, देखत कोय म पडस्यु कुप ॥७३॥

दूहा० ॥

कुप्य म पडस्यु को वली, देव अवरनि नाम्य ।
 अरीहा एक विनां वली, कोय न आवइ कांमि ॥७४॥

नमो ते श्रीभगवंतर्नि, आलि अर्थ म खोय ।
 अंतर अरीहा ईसमां, सोय पटंतर जोय ॥७५॥

कवीत ॥

किहा परबत किहा टीबडीब किहा जिनना दास
 किहा अंबो कीहा आक, चंदन क्यांहा बन घास ।
 किहा कायर किहा सुर, समूद्र किहा बीजां षांब
 किहा षासर किहा चीर, पेखि किहा अवनी आभ ।
 किहा ससीहर निं सोपनु, दाता क्यरपी अंतरो,
 किहा रावण किहा राम, 'कवि ऋषभ' कहइ द्रीष्टांतरो ॥७६॥

दूहा ॥

एणइ द्रीष्टांति परिहरो, अनि देव असार ।
 कांम क्यरोध मोहिं नड्या, तेहमां कस्यु सकार ॥७७॥

ईस्वरवादी बोलीओ, वचन सूणी ततखेव ।
 करता हरता ईस एक, अवर न दूजो देव ॥७८॥

ढाल १८(१७) चोपई० ॥

देव अवर नही दूजो कोय, भ्रह्मा वीस्णु निं ईस्वर सोय ।
 ए त्रणेनी वोहो सीरि आण्य, जग नीपायु एणइ [तु जा] ण ॥७९॥

त्रणि त्रीभोव[न] भ्रह्मा घडइ, अवर देव को तिहा नवि अडइ ।
 नारि पुर्ष पसु नारको, ए ऊपनी ते भ्रह्मा थकी ॥८०॥

एहनिं पालइ ते हरी देव, ए ईस्वरनी एहेवी टेव ।
 जगसंघार्ण एहनुं नाम, ईस देवनुं ए छइ कांम ॥८१॥

ए त्रणे जे देवा कह्या, त्रिमुरतिपणि एक ज लह्या ।
 एहनु अकल सरूप ज कह्युं सूर नर दानवि ते नवी लह्यु ॥८२॥

ख्यन तारङ्ग बुडाडङ्ग वली, दईत सकल जेणह नाख्या दली ।
 भगततणी बहु करतो सार, ते देवानो न लहुं पार ॥८३॥

ते शंकर मोये देवता, सूर सधला तेहनि सेवता ।
 अस्यु देव कहीह अतबंग, प्रगट पूजावह जगम्हा लंग ॥८४॥

दूहा० ॥

ईस्वर ल्यंग पूजावतो, नही को तेहनि तोल्य ।
 ईस्वर व..... म [वादी यम ?] कहह, जईन वीचारी बोल्य ॥८५॥

जईन कहह तु शईव सुणि, करता ह[स्ता]..... ।
 (भ्र)ह्या स्यु सरजाडसइ, स्यु संघारह भ्रम ॥८६॥

ढाल १९(१८) ओपई ॥

..... भ्रह्मा कहह, बोल्या भ्रह्मा तारे क्याहां रहह ।
 वीस्यु जग पालह छह जोय, का होय ॥८७॥

महेश जो संघारह छह वली, ते ईस्वर क्याहा गयु ऊचली ।
 वारह..... इ स को गया, हरी हर भ्रह्मा थीर नवी रह्या ॥८८॥

जो ईस्वर जग देतो सीख, तो क्यम मागी घरि घरि भीख ।
 ज्ञानव इं लह्यु खी आगली जव नाचणि रह्यु ॥८९॥

ते ईस्वर स्यु करसइ सुखी, करम्मि दूखी ।
 पूर्व पूण्य जेहवु पणि हसइ, सुख दूख तेहेवु तेहनि थसइ ॥९०॥

तू ताहारा घरनी जो बात, विप्र सुदामो सोय अनाथ ।
 ऊशभ कर्म जो तेहनि हवुं, तो काई कीष्णह दीधुं नवु ॥९१॥

तो तु जांणे कर्म ज सार, म करीश बीजो कशो वीचार ।
 करम्मि वीस्युं दस अवतार, करम्मि भ्रह्मा ते कुंभार ॥९२॥

कर्मीत० ॥

कर्मि रावण राज, राहो धड सर्बि गमायु,
कर्मि नल हरीचंद, चंद कलंकह पायु ।

पांडुसुत वन पेख्य, राम धणि हुओ धीयुग
मुज मंगायु भीख, भोज भोगवइ भोग ॥

अइअहीला ईस नाच्यु, श्रहा ध्यानि चुकयु ।
ऋषभ कहइ ग-रंक, कर्मि कोय न मूकओ ॥९३॥

दूहा० ॥

कर्मि को नवि मुकीओ, रंग अर्नि वली राय ।
जईन धर्मां जेहवा, ते पणि सही कहइवाय ॥९४॥

छाल २० । (१९) ॥

देसी० पाडव पाच प्रगट रहवां ॥ राग विराडी ॥

कर्मि को नवी मुकीओ, पेखो ऋषभ जिणंदो रे ।

वरस दीवस अन नवी लह्य, ते पझहळो अ मूणंदो रे ॥९५॥

कर्मि को नवी मुकीउं । आंचली० ॥

कर्मि युगल ते नारकी, मली हुओ ख्रीवेदो रे ।

श्रेणीक नर्य सधावीओ, कलावती करछेदो रे ॥९६॥ कर्मिं० ॥

मुनीवर मासखमण धणी, कर्मि हुओ भुजंगो रे ।

करमवर्सि वली छेदीआ, अछंकारी अंगो रे ॥९७॥ क० ॥

मृगावती गुर्ड पंखीओ, हरी गयो आकास्यु रे ।

चंदनबाल सांथि धरी, कर्मि परघर दास्यु रे ॥९८॥ क०॥

चक्री सूभम ते संचर्यु, सतम नरामां जायो रे ।

ब्रह्मदत नयण ते नीगम्यां, कर्मि अंध सु थायो रे ॥९९॥ क०॥

विक्रम तव दूख पांसीओ, हंसि गलु जव हारे रे ।

कर्म वर्सि वली द्वुपदी, पेखो पच भरतारे रे ॥१००॥ कर्मिं० ॥

कबीरदर्ति रे भगनि वरी, कीधो मायस्यू भोगो रे ।
 कर्म वर्सि वली जो हवो, दशरथ राम-वीयोगो रे ॥१॥ क०॥

कर्मिं सुखदूख भोगवइ, नर नारी सूर सोयो रे ।
 कर्म वीनां रे दूजो वली, जग्यह न दीसइ कोयो रे ॥२॥ क० ॥

सोय कर्म जेणइ खेपव्या, ते जगी मोटो देवो रे ।
 स्त्रीसंयोगी अ जेहवा, स्यु कीजइ तस सेवो रे ॥३॥ क०॥

दूहा० ॥

देव अस्यु पणी परिहरो, गुरु मुंको गुणहीण ।
 त्रविधि ए पणि छंडीइ, जिम म-व रसिर वीण(?) ॥४॥

सईव शन्यासी बंभणा, भट पंडीतनी जोङ्घ ।
 स्त्री धनथी नही वेगला, ए जगी मोटी खोङ्घ ॥५॥

ऊग्या विन अन वावइ, असत होइ तव खाय ।
 पांचइ अंद्री मोक्यलां, दिन आरंभि जाय ॥६॥

लोहशलार्नि वलगतां, नवि तरीइ नीरधार ।
 जस करी लांगां तुबडुं, ते पाम्या भवपार ॥७॥

मीथ्या धर्म न किजीइ, मिथ्यामति म म राख्य ।
 मीथ्याधर्म करंतडां, जीव भमइ भव लाख्य ॥८॥

ढाल २१ (२०) । चोपई ॥

कुडो धर्म म करयु कोय, कुडो कीधि स्यु फल हुय ।
 पांच मीथ्यात परहर्यु सही, समकीत सुधुं रहइ यु ग्रही ॥९॥

अभीग्रहीता पहइलु मीथ्यात, अनभीग्रहीता जग वीख्यात ।
 अभीनवेस त्रीजुं पणि जाण्य, संसईक चोथुं मनि तु माणि ॥१०॥

अणाभोग कहिइ पांचमुं, मीथ्या टली जिनवर नमुं ।
 भवअर्ण म्हां जिन नवी भमुं, सीवमंदिरम्हां रंगि रमुं ॥११॥

च्यार वली टालुं मीथ्यात, तेहनो तुझ भाषुं अवदात ।
 ते तुं श्रवणे सूणजे वात, जिम नाहासइ पूर्वनां पांत ॥१२॥

लोकीक गुरु निं लोकीक देव, मांनी निं नव्य कीजइ सेव ।
 श्रीदेव गुरु लोकोतर कहीइ, मांनी ईछी(?) तीहा नवि जईइ ॥१३॥

ए च्यारे मीथ्यात ज होय, मीथ्याधर्म म करयु कोय ।
 मीथ्याधर्म करंतां वली, पूण्य सकल जाइ परजली ॥१४॥

गलीइं धोयु जिम कागडो, किम ऊजल होसइ बापडो ।
 तिम जिडं मीथ्या करतो धर्म, कहइ किम धोसइ आठइ कर्म ॥१५॥

मीथ्याधर्म करइ जे जाण्य, ते नर भमसइ च्यारे खाण्य ।
 मीथ्याधर्म तु स्यांहार्नि करइ, जईन धर्म विन को नवि तरइ ॥१६॥

दूहा ॥

तरइ नही नर जाणजे, करतो मीथ्याधर्म ।
 तीहा आगार ज मोकला, सूणजे तेहनो मर्म ॥१७॥

बाल २२ (२१) चोपई ॥

छइ छीडीनी जइणा कहुं, रायाभीओगेणुं पणि लहु ।
 गु(ग)णाभिओगेणुं आगार, बलाभीओगेणु ते सार ॥१८॥

देवीआभीओगेणुं जेह, गुरुनीगिहेणुं कहीइ तेह ।
 वतीकंता छठी ते सार, च्यार वली कहीइ आगार ॥१९॥

अनथणाभोगेणुं मान्य, सहइसागारेणुं सूर्णि कान्य ।
 मोहोतरागारेणुं दाखीइ, वतीआगारेणुं भाखीइ ॥२०॥

ए च्यारइ भाख्या आगार, शाहात्रमार्हि छइ घणो विचार ।
 समझइ ते नर पंडीत कह्यु, नवि समझइ ते मुरिख लह्यु ॥२१॥

कवीत ॥

प्रथम मुरिख मंडी दोय वची मथो घलइ,
 मुरिख सोय परमाण, पंथि एकलो चलइ ।

मुरिख मांने सोय वण हवकार्यु बोलइ
 मूरिखमार्हि मुढ एब आपणी खोलइ ॥
 मूरिखमंडण मांनीइ उंघइ कुपि-कंठि ऊधो रही ।
 कवी ऋषभ एण परि ऊचरइ अकल इतानी गई ॥२२॥

दूहा० ॥

अकल भली जगि तेहनी, करता पूण्य वीचार ।
 नित्यकर्णी नीशचइ करइ, ऊतमनो आचार ॥२३॥

ढाल २३ (२२) चोपई ॥

प्रहि ऊठी पडीकमणु करइ, अरीहंतनामं रीदइम्हा धरइ ।
 छइ आवशग नीत्य सही साचवइ, प्रेम करी जिनशासन स्तवइ ॥२४॥

सांमाईक निं जे बांदणु, देई पातिग धोईइ आपणु ।
 काओसर्ढा चोबीसहथो जेह, पडीकमणु पछखांणइ तेह ॥२५॥

ए षट् आवशग केरां नाम, मंन स्युधि कीजइ अभीराम ।
 तो घट आतम नीस्मल थाय, पूर्व पाप ते सघलां जाय ॥२६॥

दिन पर्ति सही दो पचखांण, नोकारसी जाबोजीब प्रमाण ।
 संझ्यासमइ करवो चोबीहार, नीशाशमइ नवी लेवो आहार ॥२७॥

रात्रीभोजन किहा नवि कहूं, वेद-पुराणि किहां नवी लहूं ।
 आगम गीता जोयु जई, नीशभोजन तिहा वार्यु सही ॥२८॥

माहारकंड रघ्य मुख्यथी सुण्युं, रांति जल पीवुं अवगुण्युं ।
 रांतिआ युध किहां नवी होय, नीशाशमइ नवि नाहइ कोय ॥२९॥

देवपूजा राति पणि नही, दान पूण्य पणि वार्यु तही ।
 सूरय साख्य विनां नही पूण्य, मन व्यहुणी जिम क्यरीआ सुन्य ॥३०॥
 नीशाशमइ जिम ए नवी भजो, तिम भोजन जांणीनि तजो ।
 ऊग्यामांहां भोजन एक वार, ग्रीहीधर्मनो ए आचार ॥३१॥

राजवईद मुख्य एहेवु कहइ, नीशभोजनथी बहु दूख लहइ ।
 ऊदरि कोडी जो पणि जाय, आ भव परभव मूर्यख थाय ॥३२॥

ऊदरि जुअतणो संयोग, तोह जलंधर वाधइ रोग ।
 करेलिआथी वली कोडी थाय, वईदकशाहासत्रि ए कहइवाय ॥३३॥

माखी विमन करावइ नेठि, परवेदन ऊपजावइ पेटि ।
 ते माटि तु आप विचार्य, सात ढामि जल पीवु वार्य ॥३४॥

नर्णइ कोठइ नीर न पीइ, सिर नाही मुख्य जल नवि दीइ ।
 भोजन अंति नीर नीवार्य, नीशाशमइ जल पीवुं वार्य ॥३५॥

भोग भजी जल पीवुं नही, ऊभा रही नवी बोल्यु कही ।
 अर्णभोमि जई जल पीइं, अंगि रोग घणा ते लोइ ॥३६॥

यर्ति जल पीधि बइ दोष, एक रोगी निं पातीग पोष ।
 अनेक दोष दीसइ वली यांहि, पडइ पतंगी दीवामांहि ॥३७॥

अनेक जीवनी हंशा थाय, नीशभोजन पातिग कहइवाय ।
 जंत न दीसइ द्रीष्टि कोय, जीव भखंतां पातिग होय ॥३८॥

ते माटइ करवो चोबीहार, अगड आखडी ते जगी सार ।
 अवरती ना रहीइ कदा, जिनवर भगति करीजइ सदा ॥३९॥

श्रीजिनप्रतिमा आगलि रही, दिन पर्ति नीत्य जोहारो सही ।
 चईतवंदण ते हर्षिं करो, प्रमाद पहङ्लो ती परीहरो ॥४०॥

साध चारत्रीआ वांदो सदा, वांदा व्यणइ नवि रहीइ कदा ।
 गुण सताविस जेहर्नि पाश, ते मुनीवर वंदो ओहोलाश ॥४१॥

नित सुणीइ गुरुनुं वाख्यानं, भोजनवेलां दीजइ दानं ।
 पूण्यतणि नित्य कर्णी करो, दूर्गति पडता जीव ऊधरो ॥४२॥

नवपद आदि देई सद्वाय, पूण्य करंतां सुखीओ थाय ।
 श्रीदेवगुरुना जे गुण गाय, ते नर वइहङ्लो मुगति जाय ॥४३॥

सतर भेद पूजा कीजीइ, जनमतणो लाहो लीजीइ ।
 सनाथ स्वामी आगलि करो, क्रपणपणुं ते सही परीहरो ॥४४॥
 नागकेत जिम पूजा करी, केवल-कमला खी तेणइ वरी ।
 भवसमुद्रथी जीव ऊळरी, ते नर वसीओ जिहां सिद्धपुरी ॥४५॥
 घ्यर्त हुप आखे ते आण्य, केसर चंदन अगर सुजांण्य ।
 वालाकुची वस्त्र नीवेद, जिनवर आगलि भावनभेद ॥४६॥
 न्यान लखावो न्यांनी कहइ, न्यान थकी जिनशासन रहइ ।
 न्यान थकी बुझइ नरनार्य, न्यांन वडु एणइ संसार्य ॥४७॥
 पूसतग दीपक सरीखां दोय, एह थकी अजुआलुं होय ।
 सकल वस्त देखाडी दीइ, विष छंडी नर अमृत पीइ ॥४८॥
 ते माटि ए पुस्तग सार, पंचम आरड ए आधार ।
 भणइ गुणइ लखावइ जेह, अनंतसुख नर पार्मि तेह ॥४९॥
 जीव बंधनथी मुकावीइ, तो शंकटम्हा नवि आवीइ ।
 भुख्यांनि भोजन दीजीइ, अनुकंपा सहु परि कीजइ ॥५०॥
 सकल जीव परि हीत चीतवो, दूर्गति पडता नर बुझवो ।
 कांप क्रोध मोहो माया तजो, मुको मांन जिनशासन भजो ॥५१॥
 साति षेत्र पोषीजइ सही, जिनमंदीर जिनप्रतिमा कही ।
 पूसतग न्यांन लखावो जांण, अरीहंत देवनी मांनो आंण ॥५२॥
 साध साधवी श्रावक जेह, श्रावि भगति करीजइ तेह ।
 सातइ षेत्र ए सोहामणां, अहीं खरच्या ते ढ्हन आपणां ॥५३॥
 संचि ते नर दूखीओ थाय, खरच्यु ते धन केंडि जाय ।
 क्यरपीनि मन्य ए न सोहाय, वचन रूपीआ वाजइ घाय ॥५४॥
 भूमि रह्यां ढ्हन वणसी जाय, परघरि मुक्या परनां थाय ।
 हरइ चोर निं राजा लीइ, वशवांनर परजाली दीइ ॥५५॥

धन हारङ्ग नर बहु जुवट्ट, पूण्य विनां व्यापारि घट्ट ।
जलि बुड्डि कुवस्यने जाय, पूण्यकाजि विमासण थाय ॥५६॥

दूहा० ॥

क्यरपी तो छन संचीइ, जो कलि मर्ण न होय ।
ल्यख्यमी बांधी पोटले, सर्ग्य न पोहोता कोय ॥५७॥

क्यरपी कहइ कवी संभलो, तो दीर्घि स्यु थाय ।
दाता आपइ अतीघणु, ते धन केम्ब न जाय ॥५८॥

दान सुपत जेणइ दीओ, कीओ सु परउपगार ।
ते सार्थि धन पोटलां, साथि गया नीरधार ॥५९॥

ल्यख्यमी मंदिरमाहां छतां, मागण गया नीरस ।
तेहनी जनुनी भारि मुई, ऊदरी वह्यु दस मास ॥६०॥

गाहा० ॥

दानेन फलंत कलपदुमा, दानेन फलंत सोभां ।
दानेन फरंत किर्तिकांम्यनी, दानेन होअंत नीरमला दीहा ॥६१॥

ढाल २४ । (२३) ॥

देसी० आवि आवि ऋषभनो पूत्र तो० ॥ राग-ध्यन्यासी ॥

दांनि नवनीध्य पांमीइ ए, राजरीध्य सुखभोग, ए दांन वखाणीइ ए ।
दांनि रूप सोहांमणु ए, दांनि सकल संयोग, ए दान वखाणीइ ए ॥६२॥

आंचली० ॥

दांनि महइला अतिभलि ए, दांनि बंधर जोङ्य, ए० ।
दांनि ऊतम कुल भलु ए, कुटंबतणी कई कोङ्य ॥६३॥ ए दान० ॥

दांनि भोजन अतिभलु ए, सालि दालि ग्रत घोल, ए० ।
वस्त्र विविध्य वली भातनां ए, मनवांछीत तंबोल ॥६४॥ ए दान० ॥

दांनि रंजइ देवता ए, दांनि सुरतरु बार्य, ए० ।
दांनि अति पूजा पांमिइ ए, दान वडु संसार्य ॥६५॥ ए दान० ॥

दांनि हिंकर हाथीआ ए, सेवह सुभटनी कोङ्क्य ए० ।
 ओटइ ओलग कई करइ ए, ऊभा बँड करजोङ्क्य ॥६८॥ ए दान० ॥

दांनी वखाणु शंगमो ए, खीर खांड ग्रत जोय ए० ।
 सालिभद्रपणि ऊपनो ए, नरभवि सूरसूख होय ॥६९॥ ए दान० ॥

वनमां मुनी प्रतलाभीओ ए, सो दांनी नहइसार, ए० ।
 ते नर संपति पामीओ ए, तीर्थंकर अवतार ॥७०॥ ए दान० ॥

अभइदांन सुपात्रथी ए, नीस[च]इ मोक्ष वहंत, ए० ।
 अच्युत अनुकंपा कीर्तथी ए, जिन कहइ भोग लहंत ॥७१॥ ए दान० ॥

अनंत तीर्थंकर जे हवा ए, तेणइ मुख्य भाष्य दान ए० ।
 जेणइ धर्मिं दान वारीडं ए, तिहा नही तेज नइं वान ॥७०॥ ए दान० ॥

दूहा० ॥

दान सील तप भावना, भेद भला वली च्यार ।
 समकीत स्यु आराधीइ, तो लहीइ भवपार ॥७१॥

द्वाल २५ (२४) चोपर्दी० ॥

जिम समता विन तप ते छाहार, तीम समकीत विण धर्म असार ।
 घ्यरत-व्यहुणो लाडुं जस्यु, वेणि व्यनां शणगार ज कस्यु ॥७२॥

काजल-व्यहुणी आंख्यु कसी, तुब-व्यहुणी वेणा जसी ।
 पूरषातम(तन)व्यण पूरष ज जस्यु, स्यमकीत-व्यहुणो धर्म ज अस्यु ॥७३॥

जईनधर्मनि समकीत साथि, पोत भलइ जिम नांना भाति ।
 रूप भलु नि वचन वीसाल, गलइ गांन नि हाथे ताल ॥७४॥

कनककलस नि अमृत भर्यु, आगइ शंष अर्नि पाखर्यु ।
 दूध कचोलइ साकर पडी, समकीत सुधइ जे आषडी ॥७५॥

ए समकितनुं एहेवुं जोर, जेहथी नावइ मीथ्या चोर ।
 व्यायक शमकीतनो जे धणी, तेणइ दूरगति नारी अवगणी ॥७६॥

ध्यायक समकीत पांभइ तेह, सात बोल षड घालइ जेह ।
 क्रोध मांन माया नि लोभ, पहइलुं एहनो किजइ खोभ ॥७७॥

अनंतांनबंधीआ ए च्यार, त्रण बोलनो कहु वीचार ।
 समकीतमोहनी पहइली कहुं, मीथ्यातमोहनी बीजी लहु ॥७८॥

मीष्ट(श्र)मोहनी जे नर तजइ, ध्यायक समकीत सो पणि भजइ ।
 सुत्र सीधांत तणी ए वात, साचा बोल कहु ए सात ॥७९॥

वली समकीतनी सुणजे वात, मीथ्याधर्म न कोजइ भ्रात ।
 अतीदोहोलि आव्युं छइ एह, सुणजे बोल कहु हुं तेह ॥८०॥

द्वाल २६ । (२५) ॥

देसी० सासो कीधो सांमलीआ० ॥ राग-गोडी ॥

एम काया वली कहइ कंतनि, जीव कहु तुझ वात ।
 समकीत दूलहु तु अती पांम्युं, सुणि तेहनो अवदात ॥८१॥

काल अनंतो गयु नीगोदि, नीसरवा नही लाग ।
 अकामनीर्जरांइ तुझ काढ्युं, कर्म दीधो भाग ॥८२॥

बादर नीगोदमांहि तु आव्यु, कंदमुलम्हा वास ।
 छेदन भेदन तिहा दूख पाम्यु, कहइ कोहोनी तीहा आस ॥८३॥

परतेग वनसपतीम्हा आव्यु, तीहा पणि अंद्री एक ।
 पणि दूख भोगवतां तु पांम्यु, अंद्री दोय वसेक ॥८४॥

त्रेअंद्री चोरंद्री मांहइं, तिं खफीआ बहु कर्म ।
 पंच्यंद्री तु थयु पसुम्हां, मांनव व्यन नही धर्म ॥८५॥

दूहा० ॥

मांनव भव तु पामीओ, तेहमां घणो वीचार ।
 अर्य देस, कुलगुरु व्यनां, कहइ किस पांमीश पार ॥८६॥

अंद्री पांच व्यनां वली, किम साधइ जिन धर्म ।
 सधइणां व्यन नवी तरइ, सुणयु तेहनो मर्म ॥८७॥

ढाल २७ (२६) देसी० चंदांण्यनी० ॥

भव मांनव लहिं स्यु करीइ, देस अनार्य जो अवतरीइ ।
 आर्य देस लहिं म म हरखो, नीचकुल इस्युभ ते परीखो ॥८८॥

ऊतमकुलनो पाम्यो योगो, दूलहो अंद्री धन संयोगो ।
 अंद्री भोग लहइं स्यु हरीखो, गुरु न मल्यु जो गऊतम सरीखो ॥८९॥

कुगुरु मल्यु तस कुगर्ति पाड्यु, भवअर्णप्हां सोय भमाड्यु ।
 भमतां भमतां कर्मि काढ्यु, जिवि सुगरु सही भेटाड्यु ॥९०॥

सुगर वयण सुणवा नवी आवइ, आवइ तो काई चीत न भावइ ।
 भावइ तो तुझ समकीत थावइ, वहइलु मुगर्ति ते नर जावइ ॥९१॥

एम समकीत पाम्यु अती दोहोल्युं, जेणइ आर्वि अती थाइ सोहोल्यु ।
 सो समकीत कां हारो भाई, सुगरु सीख दीइ हीतदाई ॥९२॥

नवनीधि चऊदरयण हइ हाथी, मणि मुगताफल महइला माति ।
 सूर पदबी लहइ तां नही वारो, समकीत दूलहु सही नीरधारो ॥९३॥

तेणइ कार्ण्य राखो मन ठाम्यु, म चलु देव अवर्णि ताम्यु ।
 जिन विन को नवी आवइ काम्यु, समकीतथी रहीइ सीवगांम्यु ॥९४॥

दूहा० ॥

सीवर्मदिरप्हां सो वशा, जस समकीत थीर होय ।
 समकीत बीण नरको वली, मोक्ष न पोहोतो कोय ॥९५॥

ढाल २८ (२७) चोपड्ह० ॥

पाच अतीचार समकीततणा, तेना दोष बोल्या छइ घणा ।
 सुत्र सीधार्ति ते टालीइ, जिनआज्ञा सुधी पालीइ ॥९६॥

शंका वीरवचन-संधेह, नीसंकपणुं नवी आंण्युं देह ।
 पहइलो अतीचार कहीइ एह, मीछादूकड दीजइ तेह ॥९७॥

अनंतबल कहीइ अरीहंत, सकल गुणे भजतो भगवंत ।
 वली अतिसहि कहीइ चोतीस, वांणी गुण भाख्या पातीस ॥९८॥

ज्ञान अनंत तणो जिन धणी, समोवसरणि ढुकराई घणी ।
 चामर छत्र सीघासण सोहि, जस रिधि पार न पांमइ कोय ॥१९॥

ते जिनवर भुख्य वाणी कही, शास्वती जिनप्रतिमा सही ।
 सर्ग-नर्ग निं मोक्ष ते छती, अस्यु वचन भाषइ माहामती ॥२०॥

एह वचन जेणइ नवी सदह्युं, मुढभती तेणइ काँई नवि लह्युं ।
 नीसचइ समकीत तेहनुं गयुं, मीछादुकड दइ तो रह्युं ॥१॥

जिनथी जे ऊफराटा थयां, सो नर केता नर्गिं गया ।
 कुमततणइ जे रोगि ग्रह्या, पाप पूर्मा ते नर वह्यां ॥२॥

जांणीनइ ऊथापइ जेह, अनंत दूख नर पांमइ तेह ।
 भोगवतां नवि आवइ छेह, सुख किम पांमइ तेहनी देह ॥३॥

एक दरसणम्हां पाड्यु भेद, तेणइ ऊथाप्या जिनना वेद ।
 विरवचन हईइ नवि धर्युं, समकीत बाली ल्याहालो कर्युं ॥४॥

जिनवयणांनि करह असार, आप वचन थापइ नीरधार ।
 मति मती दीसइ ए आचार, कहो पथी (छी?) किम पांमइ पार ॥५॥

एक जिनप्रतिमा साठि द्वेष, मुनीवसना ऊथाप्या वेष ।
 योग ऊपधानं नषेधइ माल, पड्य नीगोदि अनंतो काल ॥६॥

राजप्रष्णी ते न जुइ सुत्र, तो ताहारु किम रहइ घरसुत्र ।
 सुरीआभ देविं पूजा करी, कोण कार्ण कहइ तिं परहरी ॥७॥

दुपदीनो वली जो अदीकार, छठि अंगि सोय वीचार ।
 नमोथणुं जिनभुवर्नि कह्युं, कुमत रोगीइ नवी सदह्युं ॥८॥

सुत्र सीधांत पेखो भगवती, जंघा-विद्या चार्ण यती ।
 नंदिस्वर मेर परबति जाय, जिनप्रतिमाना वंदइ पाय ॥९॥

वंदी पाय निं पाछा फरह, अही जिनप्रतिमा वंदन करह ।
 ए अष्यर मानि ते सुखी, नवी मानी ते थासइ दूखी ॥१०॥

जिनप्रतिमा जिनसर्खी कही, सुत्र ऊवाई नर्षों सही ।
 अंबडनो बली जो अधीकार, अर्नि देव गुरु नही नीरधार ॥११॥

पंचम अर्णि ए अधीकार, त्रणि सर्ण मांहिल्यु एक सार ॥
 अरीहंत चर्छत साधनुं सर्ण, करिं न लहइ चमरेदो मर्ण ॥१२॥

तव तस मतनो बोल्यु मर्म, दया विनां नवी दीसइ धर्म ।
 जिन पूजांतां हंशा होय, पार्पि योक्ष न पोहोता कोय ॥१३॥

सुविहित कहि मति ताहारी गई, नदी ऊतरवि जिनवरि कही ।
 कुण कार्णि कहइ तिं सदही, बोली दया ताहारी किम रही ॥१४॥

मोहोपोत पडीलेहइ जेह, जीव असंख्या हणतो तेह ।
 तोहइ भलो जिन भाषइ तास, वण पडिलेहेणि दूरगति वास ॥१५॥

एक घरि बझठो वंदन करइ, एक गुरुनि सांहामो संचरइ ।
 अदिक लाभ तु तेहर्नि कहइ, दया धर्म ताहारो किम रहइ ॥१६॥

युगल पूर्षनुं सर्खुं मन, एक उंहुनुं एक ताढु अन ।
 मुनीवरनि वइहइगवइ दोय, कहइ फल अदीकुं कर्हिनि होय ॥१७॥

जो फल होयि सीतल धणी, तो पूजा सही मिं अवगुणी ।
 उष्ण आहार दीधइं फल होय, तो प्रतिमा मांनो सहु कोय ॥१८॥

ऊहुना आहारतणो अवदात, नर शंगमनि सूणजे वात ।
 चीत वीत निं म्यलीउं पात्र, सालिभद्र सकोमल गात्र ॥१९॥

कोएक जंत जलमांहि पञ्चु, माहापूर्षनी द्रीष्टि चढ्यु ।
 कइ काढइ के मरवा दीइ, वेगो बोली विमासी हईइ ॥२०॥

जलि बुडंतो काढइ जेह, जिव अशंख्या हणतो तेह ।
 तोहइ ते पर्णि कुर्णावंत, अस्यु वचन भाषइ भगवंत ॥२१॥

अणगल पाणी जे नर पीइ, कुगतिपंथ ते नीसइ लीइ ।
 गलतां गलनु भीजइ जसि, जिव असंख्या वणसइ तर्सि ॥२२॥

जीवदया कहइ किम पालीइ, अदिक आग्यना नर न्याहालिइ ।

जिनवचने तो पुजा थाय, मांनी आग्यना तेह दयाय ॥२३॥

तव तस मतनो बोल्यु खेव, एह अचेतन दीसइ देव ।

ए मुझ्निं स्यु करसि सूखी, देव खरो जे चेतनमुखी ॥२४॥

एने कनहइ(कहइ) चालइ सीधांति, कुमर्ति तुङ्ग कीधी छइ भ्रांति ।

समझीर्नि करजे एकाति, अचेतन बइसइ ऊंची पांति ॥२५॥

कंदमुल करि मुद्रा झालि, वस्त वोहोरेवा चहुटि चालि ।

बेहु पदार्थ तेहर्नि आलि, नग नगोदर मागे झालि ॥२६॥

ए मुद्राना महीमा थकी, मांग्यु आपइ थईइ सुखी ।

कंदमुलथी लहोइ गालि, कडको मारइ तेह कपालि ॥२७॥

दसविकालिकमांहां जे कह्युं, मुर्यख सोय वचन नवि लह्युं ।

चीत्रपूतली भीति जेह, माहामुनी नवि नरखइ तेह ॥२८॥

तेणइ नरखि जो होइ पाप, तो प्रतिमा ऐखि पूण्य व्याप ।

ए द्रीष्टांत हईइ धारजे, जिन पूजि आतम तारजे ॥२९॥

थोडामार्हि समझे घणुं, वारवार तुङ्ग स्यु अवगणुं ।

दयामुल आज्ञाइं धर्म, जिनशासनमां एह ज मर्म ॥३०॥

दूहा० ॥

मर्म न स[म]झइ बापडा, करता मिथ्यावाद ।

कुमतविर्षि जे धारीआ, स्यु कीजइ तस साद ॥३१॥

एक जिनप्रतिमा छंडता, एक मुकइ मुनीराय ।

एक नर वास ऊथापता, समोवसर्ण न सोहाय ॥३२॥

गुरु विन ज्ञान न ऊपजइ, भाव विन भगति न होय ।

नीर विनां किम नीपजइ, रीटइ वीचारी जोय ॥३३॥

द्वाल २९ । (२८) ॥
देसी० राग-सार्यग ॥

गुरुविरही मन लागीओ, ते किम पांमइ पार रे ।
थीवर यतीयन कलपनो, कीधो एक आचार रे ॥३४॥
गुरु विरही मन लागीओ । आचली० ॥

अवगुण आप न आखता, देखइ मुन्यना दोष रे ।
कुमति पड़ा नर बापडा, करता पातिग पोष रे ॥३५॥ गुरु० ॥
पंचनीग्रांथि यम कहु, श्रीभगवती निं ठाणांग रे ।
संयम षट्थानिक थडं, समझो सहु मनि रंग रे ॥३६॥ गुरु० ॥
अनंतगुणे जे आगला, अनंतगुणे जे हीण रे ।
जिन कहइ बेहु संयमी, मुढ करइ मति खीण रे ॥३७॥ गुरु० ॥
तब तस मतनो बोलीओ, आगइ मुनोवर सार रे ।
ते सरीखा हवडां नही, नही ऊतकष्टे आचार रे ॥३८॥ गुर० ॥
प्रथवी पांणि अग्यनम्हां, तेज घट्यु एणइ काल्य रे ।
तोहइ काज तेहथी सरइ, गंहुं ठामि न आवइ सालि रे ॥३९॥ गुरु०॥
दूपसो आचार्य लगि, शासन होसइ सार रे ।
प्रवचन विन ते नवी रहइ, तेहनो मुनी आधार रे ॥४०॥ गुरु०॥

द्वाल ३० । (२९)॥
देसी० ध्यन ध्यन सेनुज गौरवर० ॥

श्रीअनुयुगदूआरम्हां, भाषी छइ मोहोंपोत रे ।
कुण कार्णि तिं परहरी, होसइ किम अद्यु(छ्यु)त रे ॥४१॥
श्रीअनुयुगदूआरम्हां० । आंचली० ॥

चोथ पजुसण तइं तजूउं, पांचमस्यूं बहु प्रेम रे ।
पडीकमणे छठ आवता, कहइ किम होसइ खेम रे ॥४२॥ श्री अनूक०॥

चऊदश पाखी परहरी, पून्यमस्यु बहु रंग रे ।
कुमति पड़या नर केटला, नवि पेखइ श्रीसुगडांग रे ॥४३॥ श्रीअनु०॥

चऊदश पाखी चीतवो, पेखो पाखीसुत्र रे ।
कलपसुत्रमहां एहनो, आप्यु छइ तुझ ऊत्र रे ॥४४॥ श्रीअ०॥

अदिकमास नवी मांनीइ, मल महीनो तस नाम रे ।
बंबपत्रीष्ठा मुनीतणां, दिन दूजइ होइ कांम रे ॥४५॥ श्री०॥

बलतो वादी बोलीओ, एणइ मास अछइ पूण्य पाप रे ।
सकल काज नर कोजीइ, करो मुरिख कां उथाप रे ॥४६॥ श्री०॥

सुविहीत कहइ तुं साभले, म करीश आप संताप रे ।
नीतकर्णी तो कीजीइ, दानं सील तप आप रे ॥४७॥ श्री अनु० ॥

पूर्ष नपुसक तेहथी, चालइ घरनुं सुत्र रे ।
सकल काज नर ते करइ, कहइ किम होसइ पूत्र रे ॥४८॥ श्री०॥

श्रावण चोमासु तु करइ, आलुइ चोमास रे ।
एक मास तुझ किहा गयु, बोले जो मति खास रे ॥४९॥ श्री०॥

[चोथि पजुसण तिं तज्यु, पांचम्यस्यु बहु प्रेम रे ।
पडीकमणइ छठि आवतां, कहइ किम होसइ खेम रे ॥ श्री०॥]

पंचकल्याणिक वीरना, म धरो मनि संधेह रे ।
मुढ मर्ति षट थापता, कुपि पडइ नर तेह रे ॥५०॥ श्री०॥

सुधु शमकीत राखीइ, जिनवच्चनां परिमाण रे ।
श्रेणिकराय संभारीइ, सिर वही जिनवर आणि रे ॥५१॥ श्री०॥

दूहा० ॥

शंकाशल नवि राखीइ, राखि बहु दूख होय ।
आकंखा मनि आंणसइ, मुढमति-गि-य(?) ॥५२॥

१. आ कडी कर्ताए ज बे वार लखी छे. तेथी अहीं यथावत् राखी छे.

ढाल ३१ । (३०) ॥

देसी० काज सीधां सकल हवइ सार ॥ राग-शामेरी ॥

आकंखा जे मनी आणइ, अनि-दरसण सोय वखाणइ ।
जिनवचनां नि नवि जाणइ, विषधर मंदि[र]म्हां आणइ ॥५३॥

भ्रह्मा विस्त महेश वीशाल, खेतल गोगो निं आसपाल ।
पात्रदेव्या निं गोत्रदीवी, फल एक न आपि सेवी ॥५४॥

रोग कष्ट थकी म म कंपो, उमया मुख्य ईस म जंपो ।
नवी मांनो निं नवी पूजो, जो जिनवचनां निं बुझो ॥५५॥

बहुध, सांख्य, अर्नि संन्यासी, जोगी यंगम निं भठबासी ।
जे शईव त्रडंड वेस, अंद्रजालीआ निं दरवेस ॥५६॥

एहनुं कष्ट घणेरुं जांणि, मनमाहि सधइणा आंणी ।
वली त्याहां तुझ मति पस्ताणी, दीजइ मीछादूकड जांणी ॥५७॥

एहेनुं शाहात्र सुषीअ वखांण्यु, सुधु मन सार्थि जाण्यु ।
कीधु मीथ्यातीनु कर्ण, तेणइ दूर्गति नारी परणी ॥५८॥

तेणइ सुधगति नारी ठेली, जेणइ जईन तणी मति मेहेली ।
स्युभ क्यरणि ते तस खेली, करमि मत्य कीधी मइली ॥५९॥

घरबारि कुआनि नीरि, सायर-जल नदीअर्नि तीरि ।
द्रहइ वाव्य सरेवर कंठि, पूण्य होर्ति सीस म छ(छं?)टि ॥६०॥

एम भव्य भव्य भमतां भर्ंगि, आकंखा आंणी अंगि ।
दिओ मीछादूकड रंगि, देव गुरु जिन प्रतिमा संगि ॥६१॥

ढाल ३२ (३१) चोपई ॥ परजीओ राग ॥

वतीगंच्छा ते त्रीजो सही, धर्मतणां फल होइ के नही ।
एहेवी मत्य जस आवी सही, स्युभकर्णी तस चाली वही ॥६२॥

त्रीभोवननायक वीस्वप्रकार, मोक्षमारगनो जे दातार ।
 अस्या गुण जांणी भगवंत, जेणइ नवि पूया ए अरीहंत ॥६३॥
 इहइलोक परलोक भणी, कां तु ध्याइ त्रीभोवनधंणी ।
 कष्टि को नर पास्यु खोभ, जिनवरनि देखाडइ लोभ ॥६४॥
 याग भोगमांनि निं जाय, जिनवरनि जई लागाइ पाय ।
 वतीगंछा तु पणि जांण्य, अंगि अतिचार नर म म आण्य ॥६५॥

द्वाल ३३ । (३२) ॥

देसी० से सुत त्रीशलादेवी सतीनो ॥

बस्त्र मलण मल मुनीवर देखी, जेणइ मुक्यु जिनधर्म ऊवेखी ।
 तेणइ कार्य तेणइ दूरगति लेखी, ते नर मुढमतीअ वसेषी ॥६६॥
 एणइ जगी शंघ चतुरविधी मोटे, जाणे कनकतणो वली लोटे ।
 नंद्या तास करइ ते खोटे, लीधी(धो) पापतणो शरि सोटे ॥६७॥
 साधतणी जेणइ नंद्या कीधी, सुधगति छंडी दूरगति लीधी ।
 विषह कोचोली वेर्गि पीधी, मुगतीपोलि तेणइ भोगल दीधी ॥६८॥
 साधर्मीकनो अवगुण लीधो, मीछादूकड ते नवि दीधो ।
 तो तुझ काज एकु नवि सीधो, मुगति कोट नवि जाइ लीधो ॥६९॥
 नंद्या म करो को वली कहइनी, नंद्या कीजइ आतम-देहेनी ।
 असीअ प्रगति होसइ जगि जेहेनी, गति ऊची होइ पणि तेहेनी ॥७०॥
 कर्म दूगंछा म करो कोई, हरिकेसी रषि तु पणि जोई ।
 भव ऊत्तमनो ते पणि खोई, कुल चांडाल तणइ मुनी सोई ॥७१॥
 कर्म दूगंछ कर्या व्यन सागे, राय पूण्याढ्यचरित्र संभारे ।
 आतमसीख देई एम वारे, त्रवर्धि नंद्या सोय नीवारे ॥७२॥
 एम भव भमता पातिग अंगि, मीछादूकड द्यु जिनसंगि ।
 पाप पखालु आतमरंगि, जिम जगि थायु सीध अलंगि ॥७३॥

ढाल ३४ । (३३) ॥

देसी० देखो सुहणां पूण्य वीचारो । श्रीगण ॥

मीथ्यास्तुति म म करेअ लगारो, जे जगि धर्म असारो ।

कुडो श्रेअ प्रसंसइ जे नर, ते किम पामइ पारो, पंडीत करोअ वीचारो ॥७४॥
मीथ्यास्तुति म म करोअ लगारो ॥आचली० ॥

वीषधर कोय वखाणी वदने, आप उंगलि घालइ ।

सो मुर्यख ष्यण्यमाहि थाई, जममंदिर जई माहालइ, बहु भव पातिग चालइ
॥७५॥ मीथ्या० ॥

कनक कंडीइ जिम के(को) वीछी, ग्रही नीजमंदीर आंणइ ।

सोय सरीखो ते नर पभाणो, जे मीथ्यात वखाणइ, ते नर काई नवी जांणइ
॥७६॥ मीथ्या० ॥

स्तुति कोजइ तो जईन धर्मनी, जिम आतमदूख जाइ ।

खिणम्हां अष्टकर्म खइ करतो, सो नर सूखीओ थाई, सकल लोकगुण गाइ
॥७७॥ मीथ्या० ॥

चऊद-राजमाहंड भवि भमतां, पातिग लागु जेहो ।

मिथ्याधर्म प्रसंस्यु जेमइ, मिछादूकड तेहो, जिम होइ नीर्मल देहो ॥७८॥
मीथ्या० ॥

ढाल ३५ (३४) चोपर्ई ॥

मीथ्यातीस्यु परीचइ जेह, जो जाणो तो यतु तेह ।

मेश ओरडी माहिं पइसतां, किम ऊजल रहीइ बइसतां ॥७९॥

तिम मीथ्यानो करतां शंग, किम रहइ आतम ऊजलरंग ।

आतम-जल बइ सरीखां होय, नीचसंगति वणसइ दोय ॥८०॥

बली द्रीष्टंत कहु ते सुणो, नीचशंग तुम्यु सही अवगुणो ।

आगइ नर नारी सूर जेह, संगतिथी दूख पांप्या तेह ॥८१॥

वांसि संगति गांठा तणी, तो फाडी कीधो रे वणी ।

नदीशंग तरुअर जे रह्या, सोय समुलां केतां गयां ॥८२॥

हंस कागनि संगि गयो, मर्ण लहुं निं गंजण थयु ।

शंखि संगति जोगी तणी, घरि घरि भीखि मगावी घणी ॥८३॥

अशतिशंग करो कुतार, तेहना प्राण गआ नीधर ।

‘मुज’ सरीखो रजा जेह, दासीथी दूख पाम्यु तेह ॥८४॥

बलि संगतिनो जोय विचार, ए तुंबडिं तुबां च्यार ।

एक जई मुनीवरनि कर्य चड्युं, पात्र नाम जगि तेहनुं पा(प)ड्यु ॥८५॥

बीजु तुब कहीजइ जेह, नदी संगि रह्यु वली तेह ।

तुबाजाली जगम्हां सार, जग ऊताइ ऐलो पार ॥८६॥

त्रीजा तुबतणुं फल जेह, कलावंत कर्य चढीडं तेह ।

वेणो-जंत्र कर्यु तव सार, सुर सूणतां रंजइ कीर्तर ॥८७॥

चोथी जे हुती तुबडी, सोय धाँझानि करि चडी ।

ते कापी कीधी रुबडी, रगत पीइ कुसंगति पडी ॥८८॥

श्रेणीकरायनो हाथी जेह, अती दूरदांत कहीजइ तेह ।

जो मुनीवरनि संगि मल्यु, तो तस मान-कषाइ गल्यु ॥८९॥

सांति दांत हुओ सुकमाल, जेहवो वछ सकोमल बाल ।

गढ मंदिर नवि भेलइ गांम, न करइ राय तणुं ते कांम ॥९०॥

राय-भंत्रीइं कर्यु वीचार, बंध्यु जिहा पापीनुं बार ।

‘मारि मारि’ मुष्य एहेवुं सुणइ, रीव करतां पसुआं हणइ ॥९१॥

रगत मंशा देखी गजराय, दृष्ट हईडं तव गंहिवर थाय ।

पंडीत रीदइ वीचारी जोय, नीच शंग म म करयु कोय ॥९२॥

पूफशंग सुतर तांतणइ, राजा कंठि ठव्यु आपणइ ।

त्रांबइ संगति सोनातणी, करतां कीरति वाधी घणी ॥९३॥

खालनीर गंगाम्हां गयां, ते जल गंगासरीखां थयां ।

चंदन जमलां जे विष रह्या, ते सघला पणि सुकडी लह्यां ॥९४॥

सापि समर्यु ईस्वर देव, तो कंठि धाल्या ततखेव ।
 राय वभीषण संगति राम, लंकापति दीधुं तस नाम ॥१५॥
 ए संगतिना सुणि द्रीष्टिंत, मीथ्याशंग तजो एकात ।
 कही भवि भमतां परीचो जेह, मीछादूकड दीजइ तेह ॥१६॥

दूहाँ ॥

एम अतीचार टालीइ, समकीत खखे सार ।
 सूधो श्रावक ते कहुं, जे पालइ ब्रत बार ॥१७॥

द्वाल ३६ । (३५) ॥

देसी० प्रणपी तुम सीमंधरुजी० ॥

पहइलुं ब्रत इम पालीइजी, ब्रसनो न कीजइ रे धात ।
 आरंभि जइणा कही जी, एम बोल्या यगनाथ ॥
 सुणो नर, धर्म दयाइं रे होय, दया विना नर को बलीजी ।
 मोक्ष न पोहोतो कोय, सुणो नर, धर्म दयाइं रे होय ॥अंचली० ॥१८॥
 कर्म वालादीक कीडलाजी, काया जीव अनेक ।
 अनुकंपाइं काढताजी, दोष न लागइ रेख ॥१९॥ सुणो नर०॥
 मुढपणुं ते परीहरे जी, रखो जीव एकाति ।
 मानवपणुं छइ दोहेलुंजी, लहीइ दस द्रीष्टिं ॥४००॥ सुणो नर०॥
 चक्री भोजन ते भखीजी, लखी लइ घरिधरि आहार ।
 फरी चकवइ-अन किम लहइजी, तिम मानव अवतार ॥१॥ सुणो नर०॥
 मेरसमा ढगला करीजी, अन अन माहि रिभेलि ।
 ब्रधा विणी कीम दीइजी, तिम मानवभव मेर्लि ॥२॥ सु० ॥
 देवि पासा सोगढांजी, नरनि दीधां दोय ।
 ते सार्थि जो जीपीइ जी, तो मानवभव होय ॥३॥ सु० ॥
 अठोतर सो थाभला जी, थांभइ थांभइ रे जाण्य ।
 त्यांहां ते तेती पुतलिजी, सुदर रूप वखाण्य ॥४॥ सु०॥

वार अठोतर सो रमइजी, जीपइ पूतली एक ।

अठोतरसो वारनो जी, आंक कहु तुझ छेक ॥५॥ सु०॥

बार लाख निं ऊपरिजी, ओगणसठि हजार ।

सात सह्यां निं जांणजे जी, ऊपरि अदीका बार ॥६॥ सु०॥

अनुवर जीपइ जुवटइजी, राज लीइ नीरधार ।

नवि जिपइ, जोपइ सहीजी, किहां मानव अवतार ॥७॥ सु० ॥

खण घणा छइ सेठिनि जी, वेच्यां जुज़इ देश ।

ते जो मेलइ एगाठं जी, तो मानवभव लहइश ॥८॥ सु० ॥

सुपन एक नर दोयनि जी, बदने चंद पईठ ।

एक रोये एक राजीओ जी, एम जगी अंतर दीठ ॥९॥ सु००॥

रोटवालु चीतवइ जी, चंद लहु मुखमार्हि ।

नावइ, पणि आवइ सही जी, नरभव छइ कहइ क्याहि ॥१०॥ सु०० न०॥

स्वयंभुरमण जल पूर्वि जी, धोंसर मुकइ रे जाय ।

पछिम कीली प्रथवइ जी, किम संयुगी थाय ॥११॥ सु००॥

पवन पेरेर्या दोए जाणां जी, धोंसर कीली रे एक ।

पणि नरगति छइ वेगली जी, पांमइ पूण्य वसेक ॥१२॥ सु०० ॥

कुषि रहइ एक काचबो जी, सात पडो रे सेवाल ।

कुर्रमि दीठो चंदलो जी, फरी जोतां विशराल ॥१३॥ सु०॥

थांभा ऊपरी आंणीइ जी, च्यंतो चक्र वशेक ।

अवलुं सवलुं ते फरइ जी, अछइ पूतलि एक ॥१४॥ सु०॥

जलकुंडी जोवा लुलइ जी, शर सांधइ नर जांण ।

वांम आंख्य जई पूतली जी, तीहा जई वागइ बांण ॥१५॥ सु०॥

अवनी ऊपरी नर घणा जी, कोएक पांमइ रे पार ।

राधावेध ते साधता जी, दूलहो नर अवतार ॥१६॥ सु०॥

रथण घणा घ(घं)टि दली जी, पंच वर्णनां रे पेख्य ।
 मेरशखरि छगलो करइ जी, ऊडइ वायु वसेष्य ॥१७॥ सु०॥
 दश द्रष्टाति दोहेलो जी, मानवनो भवं जाण्य ।
 जीवदया ते कोजीइ जी, बोल्यु वेद पूराण्य ॥१८॥ सु० ॥

दृहा० ॥

धर्म दया विन तु तजे, ऊर्ठि नागरवेलि ।
 भामरइ जिम चंपक तयु, पीछ तज्यां जिम ढेलि ॥१९॥

दाल ३७ (३६) चोपझी ॥

तजे नगर जिहा वइरी घणां, तजे वाद जिहा नही आपणा ।
 तजे म्होल जे अतिजाजर, तजइ नेह विनां दीकिरा ॥२०॥
 तजिइ रुठो राजा वली, तजिइ पसाती अती आकली ।
 तजिइ पापी केरो शंग, तजिइ जाति कुजाति तुरंग ॥२१॥
 तजीइ बाओल केरी छाँहि, तजीइ वासो विषधर यांहि ।
 तजीइ परघर केरी ताति, तजीइ भोजन भखबुं राति ॥२२॥
 तजीइ कायर ख्यत्री जाम, न करइ ठाकुर केरुं कांम ।
 तजिइ मंकड साथि आल, तजीइ परर्नि देवी गाल ॥२३॥
 तजीइ मोटा सांथि जुळ, तजीइ मुरिख सांथि गुंज ।
 तजिइ वणज मधु जे मीण, तजीइ धर्म दया जे हीण ॥२४॥
 तजीइ चोमासइ चालवुं, तजीइ सअंगणि माहालवुं ।
 तजीइ साधसंघाति द्वेष, तजीइ संगति नीच वसेष ॥२५॥
 रण-अंगणिना तजीइ ठांम, तजीइ नीर विनां आराम ।
 तजीइ सात वसन संसारि, दूत मंश निं मदिरा वारि ॥२६॥
 तजीइ वेशा केरुं बार, तजीइ आहेडो नीरधार ।
 तजिइ चोरी केरो रंग, तजीइ परदारानो शंग ॥२७॥
 तजिइ भोजन जिहां नही मांन, तजिइ विण संयुर्गि पांन ।
 तजिइ कंठ विहुणुं गांन, तजीइ पाप कर्मनुं ध्यांन ॥२८॥

तजीइ पातिग पूण्यनि ठामि, तजीइ आलस धर्मह कांमि ।
 तजीइ स्तुति मुखी पोतातणी, तजीइ नर लंपट अवगुणी ॥२९॥
 तजीइ कगरू केरा पाय, तजीइ घरि मारकणी गाय ।
 तजीइ विर्ष थयु जे खीण, तजीइ धर्म दया जे हीण ॥३०॥

दूहा ॥

धर्म दयाइं जांणजे, जिम रंग साचो चोल ।
 वली द्रोष्टांत आगलि अछइ, हित युगति कलोल ॥३१॥

द्वाल ३८ । (३७) ॥

देसी० छांनो छपीर्नि कंता किहा रह्यु रें० ॥ राग-संमायरी ॥

धर्म दयाइं जांणजे रे, ते नीश[च]इ नीरधार रे ।
 जीव जतन करी राखीइ रे, तो लहीइ भवपार रे ।
 धर्म दयाइं जांणजे रे ॥ आंचली० ॥ ३२ ॥

पहइलुर्नि ब्रत एम पालिइ रे, जिव सकलनी सार रे ।
 दया समो धर्म को नही रे, हंशा धर्म असार रे ॥३३॥ धर्म० ॥
 हिंवरथी बछ ऊपजइ रे, ससलाथी सीही होई रे ।
 जलधर विन अन नीपजइ रे, तो धर्म दया विन होय रे ॥३४॥ धर्म०॥
 कुपरखबोर्नि जो थीर रहइ रे, सुपर खलोपइ लीह रे ।
 दया विना धर्म तो कहु रे, घास भखइ जो सीह रे ॥३५॥ धर्म० ॥

दूहा० ॥

धर्म दयाइं जांणजे, जिन आग्यना परमाण ।
 पातिग करतां पूण्य कलइ, जोय विमासी जांण ॥३६॥

द्वाल ३९ । (३८) ॥

देसी० एकदीन राजसुभा ठीओ० ॥राग - गोडी॥
 वण गुणति विद्या गलइ, दूरि गयां जिम नेह ।
 सीत गलइ खीसंगथी रे, तपइ गलइ जिम देहो रे ॥३७॥
 दया चीति राखीइ । जिम पर्नि ऊपगारो रे, मधुरुं भाखीइ ॥ आंचली० ॥

दान बलंबिं ते गलइ रे, गलइ सहइ काज प्रमादि ।

धर्म दया विना ते गलइ रे, मलइ मुरिखि लज विवाद्यु रे ॥३८॥

दया चीत० ॥

तुर्णी यौवन ते गलइ रे, ब्रीध्यस्यु क्रीड करत ।

यौवन आप नर तव गलइ रे, ऊङु ज्ञान कथंतो रे ॥३९॥ दया० ॥

गुण गलीआ पर अवगुणि रे, अग्यन थकी जिम लाख ।

धर्म दया विन एम गलइ रे, ए जिनस्याशन भाषो रे ॥४०॥ दया० ॥

दूहा० ॥

श्रीजिनदेविं भाखीउ, दया विना नही धर्म ।

हंशा धर्म न कही मलइ, जिम मेहर निं भ्रह्म ॥४१॥

भोजननो अरथी बली, न करइ उद्यम शर्म ।

ए अणमलतुं जांणजे, न मलइ हंशाधर्म ॥४२॥

द्वाल ४० (३९) चोपई ॥

यम मेगल निं न मलइ मसो, न मलइ मृगपति निं यम ससो ।

न मलइ कीडी परबत काय, न मलइ रंक अर्नि बली राय ॥४३॥

न मलइ नीर्धन निं ध्यनवंत, न मलइ नीरुण निं गुणवंत ।

न मलइ असती निं यम सती, न मलइ मुरिखि निं माहामती ॥४४॥

न मलइ गंगा निं यम नाडि, न मलइ गढ ग्यरुओ पलवाडि ।

न मलइ पीतल निं जिम हेम, न मलइ दूसण निं जिम प्रेम ॥४५॥

न मलइ खजुओ निं जिम सूर, न मलइ बाहो सायरपूर ।

करुरद्वीष्ट निं न मलइ माय (मया), न मलइ पापकर्म निं दया ॥४६॥

दूहा० ॥

पाप कर्म बइ एगठां, एकइ ठांमि न हंत ।

कइ सईथो कइ टालि जो, पणि बइ नवि सोभंत ॥४७॥

दीपक जिम वलि तेल विन, शेन विनां जिम राय ।
धर्म दया विन ते तस्यु, खीर विनां जिम गाय ॥४८॥

ढाल ४१ (४०) ॥
देसी० मुनीवर मारगि चालता० ॥

शनेह विनां स्यु रूसणुं, गढ विहुणी पोलु ।
प्रेम विनां जिम प्रीतडि, मन मइल अंघोल्यु ॥४९॥

धर्म दया विन ते तस्यु, जस्यु लुखुं अनो ।
तप जप संयमस्यु धरङ, जो मइलुं मनो ॥

धर्म दया विन ते तस्यु ॥ आंचली० ॥

बालिक विन जिम पालणुं, काल विहुणो मेहो ।
संपति विण जिम पांहणो, गइ यौवन नेहो ॥ ५०॥ धर्म० ॥

जोग विनां जोगी जस्यु, मन विहुणु ध्यानो ।
गुरु विण गछ नवी स्युभीइ, वर विहुण जानो ॥५१॥ धर्म० ॥

दाता विन जिम जाचिका, प्राणि विण देहो ।
धर्म दया विन ते तस्यु, भाषइ सुगुरु एहो ॥५२॥ धर्म० ॥

दूहा० ॥

सुगुरु पर्यंपइ सुगुण सुणि, समझे शाहाख विचार ।
पर प्राणी तो ऊगरङ, लहीइ स्युध आचार ॥५३॥

ढाल ४२ (४१) ॥

देसी० जोरङ जन गति स्यंभुनी ॥ राग-मल्हार ॥
देसी बीजी : कहइणी करणी । तुझ विण साचो० ॥

ऊतम कुलनो ए आचार, घट वेद चंद्रुआ बंधइ जी ।
जिवजतन जगि एणि परि करसइ, ते स्युभ मारग संधइ जी ॥५४॥

ऊतम कुलनो ए आचार । आंचली० ॥

पिहइलो चंदरुओ जल परि धेखो, बीजो खंडण ठांमिं जी ।
जिवदया विन जगि बहु बुडा, घर धंधार्नि कांमिं जी ॥५५॥

ऊतम कु० ॥

त्रीजो चंदरुओ पीसणठांमिं, रंधणि चोथो जांणो जी ।
जिव मरंतां पातिग बोहोलुं, ए नीसइ मनि आंणोजी ॥५६॥ ऊतम०॥

भोजनभोमि कहुं पांचमो, छठो छ(छ?)श निं संगिजी ।
सतम वली सञ्ज्ञेर्णठांमि, अठम सेया रंगिजी ॥५७॥ ऊ०॥

नोमो वली देहेरासरठांमि, पडीकमणह पणि धेखोजी ।
जो जिनवचनां सुधां पालु, तो सौवमंदिर देखोजी ॥५८॥ ऊ०॥

एकंद्री अणसोङ्गि दलतां, ऊतम नही आचारजी ।
जीव जंत्रमार्हि पणि पीर्लि, पातीगनो नही पारजी ॥५९॥ ऊ०॥

खंडण रंधण ईधण पांणी, अणसोङ्गि अती पापजी ।
सारवणि जीव नीत्य सारवतां, कहइ किम छोडीश आपजी ॥६०॥ ऊ०॥

ऊठतां बइसंतां भाई, हीडंतां बोलतां जी ।
जीवजतन करयु जगि लोगा, जांगतां सोवंता जी ॥६१॥ ऊ०॥

दूहा० ॥

सोवंतां वली जागतां, जिन कहइ जंत ऊगारि ।
अणगल निर म वावरो, लाधो भव म म हारि ॥६२॥

ढाल ४३ । (४२) ॥

देसी० पांडव पाचइ प्रगट थया० ॥

अणगल नीर न पीजीइ, अंणगलि झीलबु वार्य रे ।
अणगलि वस्त्र पखालतां, पाप धारुं ज संसार्य रे ॥६३॥

अणगल नीर न पीजीइ । आचली० ॥

श्रीमानसीत मांहइ कह्यु, गलणातणोअ बीचार रे ।
ते च्यंतो मनि आपणइ, जिम पांमो भवपार रे ॥६४॥ अ०॥

पोहोलपणइ वीस आंगलां, लंबपणइ वली त्रीस रे ।
 ते गलणुं रे बेवड करी, जल गलीइ नसदीस रे ॥६५॥ अणगल० ॥

गलतां झालक परीहरो, दुंपो तो नवि दीजइ रे ।
 जे जलनो जीव ऊपनो, तेहनइं त्याहिं मुकीजइ रे ॥६६॥ अ०॥

बीछलतां रे गलणुं वली, आलस म करि लगार रे ।
 जल विन जीव जीवइ नही, हईडइ करोअ वीचार रे ॥ ६७॥ अ०॥

भंखारो म म सुकवो, जो तुम हईअडइ सांन रे ।
 जीव सकलनिं रे जीवाढीइ, म करो मनि अभीमान रे ॥६८॥ अ०॥

खारु नीर न खेलीइ, भीठा जल तणइ साथ्य रे ।
 संखारो नवि दीजीइ, नीचा जण तणइ हाथ्य रे ॥६९॥ अण०॥

समोअण ते नवी मुकीइ, ऊनि जल वली जाण्य रे ।
 जलना जीव वीणासतां, पूण्य तणि होयि हाँण्य रे ॥७०॥ अण०॥

कीडी कुजर कंथुओ, सुरपति सरखो जोय रे ।
 जीव नि युन्य विणासता, पातिग अतिधणुं होय रे ॥७१॥ अण० ॥

दूहा० ॥

पातिग बोहोलुं त(ते)हनि, करतां प्राणीघात ।
 पर हंसा निं दूहवता, भवि भवि होय अनाथ ॥७२॥

ढाल ४४ । (४३)॥

देसी० सुणि हवुं एक ल्यष्यमी पूरु० ॥

आपसमा सवि जीवडा, हईइ च्यंत अपार रे ।
 जे नरा जीवनि मारसइ, फरइ ते गति च्यार रे ॥७३॥

वयण सुणो जगि सहु नरा, दया धर्म ते सार रे ।
 तप जप ध्यान तो छइ भलुं, दया विन अते छाहार रे ॥

वयण सुणो जगी सहु नरा ॥अंचली०॥

जे जगी तरस निं थावरा, जीव सकल ऊगार्य रे ।

जंतु हीड़इ जगी जीववा, तेहर्नि तुं म म मार्य रे ॥७४॥

वयण सुणो० ॥

कर्मवीपाकमाहिं कहूं, करइ जीवसंधार रे ।

ते नग पापमांहा बुड़सइ, नवी पापसइ पार रे ॥७५॥ वयण०॥

सीह सीआल निं सुकरां, अजा जे मृगबाल रे ।

हिंवर हरण निं हाथीआ, देता वाघला फाल रे ॥७६॥

अजगीर संवर रोझडां, वछ चीखल गायं रे ।

चीतरा चोर निं मंकडा, दीधा नाग नइ घाय रे ॥७७॥ वयण०॥

पंखीआ पासम्हां पाड़ीआ, मछ कछनी जात्य रे ।

जे नग मंशना लोलपी, फरइ नरग ते सात्य रे ॥७८॥ व०॥

पंखीआ गुरड निं हंसला, लावां तीतर मोर रे ।

समलीअ सारीस जीवनि, हर्णि कर्म कठोर रे ॥७९॥ वयण०॥

काग निं अंबनी-कोकिला, चडी चास न मार्य रे ।

चक्रवा चातुक जीवनि, हणी पंडि म भार्य रे ॥८०॥ वयण०॥

दूहा० ॥

पापि पंडी ज भारतो, करतो पातीग वात ।

आप-सवारथ कारणि, पर प्राणीनो घात ॥८१॥

ढाल ४५ । (४४) ॥

देसी० एम व्यपरीत परूपतां० ॥ राग-असाओरी सीधुओ ॥

कीधां कर्म पराचीआं, नर दीधला घायरे, थाय रे,

पापकर्म तेणइ एगठां ए ॥८२॥

धन कारणि नर वेधीआ, दीइ कातडी कंठि रे, ऊलंठि रे,

पापकर्म एहेवां कीआं ए ॥८३॥

एक नर क्रोधी अतीघणुं, नर जलमांहइं बोलइ रे, रोलइ रे,
तेणइ आप जीवनि भव घणा ए ॥८४॥

एक नर अग्यन लग(गा)डता, नर पसुअनइं बालइ रे, टालइ रे,
स्युभस्याता तेणइ वेगली ए ॥८५॥

एक नर नरनि साढसइ, वली चुट्टा दीसइ रे, पीसइ रे,
दंत घणुं ऊपरि रह्या ए ॥८६॥

जिन कहइ ते किम छुट्सइ, गति च्यारेमा भमता रे, गमता रे,
काल अनंतो अती दूर्ध्यि ए ॥८७॥

दूहा० ॥

अतीदूखीआ दूरगती भमइ, साते नरो वास ।
जीव हणइ नर जे वली, सुख किम होइ तास ॥८८॥

ढाल ४६। (४५)॥

देसी० प्रणमी तुम सीमधर्जी ॥

जीवतणो वध जे करइ जी, ते नवी जाणइ रे धर्म ।
पांचइ अंद्री पोषवा जी, करतो घोर कुकर्म ॥८९॥

सुप्रांणी, रीदि वीचारी रे जोय; जिनवचने आलुयजे जी ।
हंशा-धर्म न होय, सुप्रांणी, रीदइ वीचारी रे जोय ॥आंचली०॥

रसनानि रश वाहीओ जी, कर्तो आमिष आहार ।
वीषमइ पर्थि चालतां जी, एकलडो नीरधार ॥९०॥ सुप्रांणी० ॥

जेणी वांटि नही वांणीआ जी, नगर नीरूपम हाट ।
सांथि नही को सारथी जी, कहइ कुण कहइसइ बाट ॥९१॥ सुप्रांणी० ॥

हंशा करतां सोहेली जी, मुयख सांभली वात ।
ऊतर देता दोहेतु जी, म करीश प्रांणीघात ॥९२॥ सुप्रांणी० ॥

जलचर थलचर पंखीआ जी, तेहनी करतो रे घात ।
ते पालव जव झालसइ जी, तव होसइ संताप ॥९३॥ सुणो०(सुप्रांणी) ॥

जीव हण्ठां जिन कहइ जी, नीसचइं नरगि रे जाय ।
 भुख्यां आमिष देहनु जी, तरस्या तरखुं पाय ॥१४॥ सुप्राणी०॥

कष्ट रोग निं कुबडो जी, अतिदूरगंधी रे देह ।
 अलप आऊखइ ऊपजइ जी, हंशानां फल एह ॥१५॥ सुप्राणी०॥

पंडीत होइ ते प्रीछयु जी, जीवदया जगी सार ।
 दया विनां किम पांमीइ जी, ए संसारं पार ॥१६॥ सुप्राणी० ॥

जीवदया एम पालीइ जी, जिम जगी मेघरथ रय ।
 परेखो जेणइ राखीओ जी, परभवि अरीहा थाय ॥१७॥ सुप्राणी० ॥

मंश देहनुं कापीउं जी, मुक्यु त्राजु रे माहिं ।
 त्राजु तोहइ नवि नमइ जी, धीर न चुको त्याहि ॥१८॥ सुप्राणी० ॥

एक लाख ग्यवरीतणां जी, दूध तणी खीर खाय ।
 तोहइ काया कार्यमी जी, हंसा केड्य न जाय ॥१९॥ सुप्राणी० ॥

तोलइ देही कार्यमी जी, म करीश प्राणी रे धात ।
 सुर हरख्यु तव बोलीओ जी, ध्यन ध्यन तु नस्नाथ ॥२०॥ सुप्राणी० ॥

सुर आकासइ संचर्यु जी, हुओ ते जइजइ रे कार ।
 जीवदया एम पालीइ जी, तो लहीइ भवपार ॥१॥ सुप्राणी० ॥

ढाल ४७ । (४६) ॥

देसी० चाली चतुर चंद्राननी० ॥ राग- मल्हार ॥

जीवदया एम पालीइ, जिम गज सुकमाल रे ।
 पग अढी दिवश तोली रह्यु, मेघ जीव क्रीपाल रे ॥२॥

जीवदया एम पालीइ ॥ आंचली० ॥

किम तेणइ जंत ऊगारीओ, कीम रह्यु गजराज रे ।
 तास चरीत्र सहुं सांभलु, सारे आपणुं काज रे ॥३॥

जीवदया एम पालीइ ॥

नाम मेरुप्रभ तेहनुं, गज दंत स्यु च्यार रे ।
 सात सह्या तस हाथ्यनी, पोतानो परीवार रे ॥४॥ जीव०।।

दावानल जब लागीओ, देखी गजह पलाय रे ।
 जोयन मंडलि आवीओ, आवी पसुअ भराय रे ॥५॥ जीव० ॥

हर्ण सीआल निं सुकरं, रीछां सो नवी माय रे ।
 एक ससलो अती आकलो, गज पगतर्लि जाय रे ॥६॥ जीव० ॥

खाय खणी गज पग ठवइ, पङ्घु द्रोष्ट एक जंत रे ।
 एहनि गज कहइ किम हणु, कुर्णा होय अत्यंत रे ॥७॥ जीव० ॥

अति अनुकंपा आंणतो, खरी दया जगी एह रे ।
 अढीअ दीवश दूख भोगव्यु, पङ्घु भोमि गज तेह रे ॥८॥ जीव० ॥

एम तेणइ जंत ऊगारीओ, हवु फल तस सार रे ।
 मर्ण पामी गजराजीओ, थयु मेघकुंमार रे ॥९॥ जीव० ॥

संपइ सुख बहु पांमीओ, पोहोती मन तणी आस रे ।
 रय श्रेणिक कुलि ऊपनो, कीधो सर्गम्हां वास रे ॥१०॥ जीव० ॥

दूहा० ॥

जीवदया जगि एम करइ, ते सुखीआ बहु होय ।
 पर प्राणी पीडी रल्या, तास चरीतं जोय ॥११॥

द्वाल ४८ । (४७) ॥

देसी० प्रणमी तुम सीमंधरुजी० ॥

परदेहीनि पीडतां जी, आप सुखी किम थाय ।
 जीव अकाई मारतो जी, सतम नरग्नि जाय ॥१२॥

सोभागी, करजे तत्त्व बीचार । पर प्राणिनि पीडतां जी ।
 ऊतम नही आचार, सोभागी, करजे तत्त्वबीचार ॥।अंचली०॥

पंच सह्या स्यु परवर्यु जी, ख्यत्री मोटो रे चोर ।
 वनम्हां पंखी मारतो जी, करतो कर्म अघोर ॥१३॥ सोभागी क०॥

लेअण लेइनि मारतोजी, करतो अंद्री रे छेद ।
परभवि दूखीओ ते थयु जी, पाप्यु वेद कुवेद ॥१४॥ सो०॥

मृगाक्षति जगि जे सती जी, तस कुर्खि अवतार ।
लोढो थईनइं ऊपनो जी, अंद्री विन आकार ॥१५॥ सो०॥

पग विन पापि ऊपनो जी, कर विन काया रे दीठ ।
श्राश्रवण नेत्र नही नाशका जी, ऊदर नही तस पीठ ॥१६॥ सो०॥

रोम आहार लोटी लोइ जी, अती काया दूरांध ।
पूर्व कर्म ते भोगवइ जी, ऊशभ तणो जे बंध ॥१७॥ सो०॥

ते माटइं सहु संभलु जी, दथा विनां नही धर्म ।
कुर्णा मनमाहां आणीइ जी, परहरीइ कुकर्म ॥१८॥ सो०॥

दूहाँ ॥

कर्म कुकर्म न कीजीइ, कीर्धि किम सुख होय ।
जेणइ हंशा हर्षिं करी, नरांग रम्या नर सोय ॥१९॥

बाल ४९ (४८) चोपई ॥

सहइजि जे करता तापणुं, पूण्य परजालइ छइ आपणुं ।
सिर वाहइ छइ जे कांकस्यु, पूण्यपालिथी ते नर खस्यु ॥२०॥

मांकणनि तावडी नाखसइ, ते नसनारी दूखीआ थसइ ।
वोछो छांण लेई चांपसइ, दूख देअंतां सुख किम हसइ ॥२१॥

चांचण जुअ बगाई जेह, चांप्यां मार्या दूहुव्यां तेह ।
कीडी मंकोडा ऊगार्य, ईडां फोडी पंडि म भार्य ॥२२॥

मंकोडा मारि घीमेलि, लिष कातरा निं चुडेल ।
दादूर ऊधेई निं मस्यो, मारीनि कां दूरांति वस्यु ॥२३॥

माखी अई अलि निं अलसीआ, मारी कारथ कीधां कस्यां ।
परम पूरष निं वचने रहीइ, 'मार्य' शब्द मुख्यथी नवी कहीइ ॥२४॥

पांच अतीचार एहना जाणि, नर ऊतम तुं अग्य म आंणि ।
वाटि वर्सि रीसि घा कर्यु, गाढ़ि बंधन पसुंआं धर्यु ॥२५॥

जे अतिजाझो भार ज भरइ, कर्ण कंबल जे छेद ज करइ ।
भात पांणीनो करइ वछेद, तेनि ऊपजइ अदीको खेद ॥२६॥

दूहा० ॥

खेद न ऊपाईइ बली, मुख्य न कहीइ मार्य ।
पहइलुं व्रत एम पालीइ, बीजइ मृषा निवार्य ॥२७॥

ढाल ५० (४९) चोपई ॥

व्रत बीजइ मरिषा परीहरो, पंच जुठांनी अगड ज करो ।
कन्याली भोमाली गाय, जुतु बोलि दूर्गति जाय ॥२८॥

थांपणिमोसो कुडी साख्य, अलीअ वचन मुख्यथी म म भाष्य ।
कुडु बोलि सुख किम होय, जइ नवि पांमइ कोय ॥२९॥

जुतु बोलतां जाइ लाज, जुतु बोलतां वणसइ काज ।
जुतु बोलतां मुर्यख थाय, जुतु बोलतां दूरगति जाय ॥३०॥

जुतु बोलतां च्योहोगति भमइ, दूरगति नारी सार्थि रमइ ।
काल अनंतो एणी परि गमइ, पोताना प्रांणिनि दमइ ॥३१॥

मृषातणुं छइ मोडु पाप, फोकट आप करइ संताप ।
दान सील तपस्यु जगी जाप, मृषा न छंडइ मुख्यथी आप ॥३२॥

मृषा थकी मुख्य थाइ रोग, दूलहो अंद्रीनो संयोग ।
लुलो टुंटे निं पांगलो, मृषा थकी थाइ आंधलो ॥३३॥

सतवादीनु लीजइ नाम, कालिकाचारय गुण अभीराम ।
स्युध वचन भुपतिर्नि कहइ, जिगनतणु फल नर्ग ज कहइ ॥३४॥

सर्ति सीता सर्ति राम, राय युधीष्ठ[र] राख्यु नाम ।
परशान(शासन)मांहा हरीचंद कह्यु, ते तो त(ते)हर्नि बोलि रह्यु ॥३५॥

दुब घरि तेणइ आण्यु नीर, वचन थकी नवी चुको धीर ।
तो तेहनी कीर्ति वीस्तरी, मुओ नही नर जीव्यो फरी ॥३६॥

शईव शाशनि सेठि बंगाल, तेहनो पूत्र जे सेठि सगाल ।
तस धर्णी चंगोमती नार्य, सतवादी जगि दोय वीचार्य ॥३७॥

ते बेहुनी तुम्यु सुणज्यु वात, पूत्रतणो तेणइ कीधो घात ।
वचन थकी पणि ते नवी चल्या, नरनारी बइ बोर्लि पल्या ॥३८॥

ऊतम नरनी एहेवी वाच, नो हइ जुठी होइ साच ।
भाति पटोलइ लुढइ लीह, वचन थकी नवि चुकइ सीह ॥३९॥

नीसरिआ गज केरा दंत, ते किम पाढा पड़सइ तंत ।
सीहतणी जगी एक ज फाल, पाढो वेगि वलाइ ततकाल ॥४०॥

कुपरष नरनी वाच्या असी, जिम पाणीमांहा लीटी घसी ।
अथवा काच बकेरी कोट, घ्यणम्हां केती देतो डोट ॥४१॥

ते मुरिखनुं कस्यु वखाण, जेणइ नवी कीधु वचन प्रमाण ।
ते जनुनिं कां जगी जण्यु, सकल लोकम्हा जे अवगुण्यु ॥४२॥

तेहनुं कोय म लेज्यु नांम, बोलो सतवादी गुणग्रांम ।
सत वचन ऊफरुं नही सार, सतवादि घरि मंगल च्यार ॥४३॥

सतवादीनि सहु को नमइ, सतवादीनुं बोल्यु गमइ ।
सतवादि दुराति नवि भमइ, सतवादि ते सीवपुरि रमइ ॥४४॥

सतवादी जेणइ नगरि वसइ, नगरलोक ते हर्षिं हसइ ।
तेणइ नगरि नही दूत दूकाल, वरसइ मेघ निं होय सगाल ॥४५॥

दूहा० ॥

सुखशाता बहु ऊपजइ, जिहा सतवादि पाय ।
ध्यन जिव्यु जगी तेहनुं, कवी जेहना गुण गाय ॥४६॥

जीव्या ते जगि जांणीइ, अशत्य न भाषइ जेह ।
मृषा न मुख्यथी छंडता, स्यु जीव्या जगि तेह ॥४७॥

पांच अतीचार एहना, टालो सोय सुजांण ।
वचन विमासी बोलज्यु, जिम रहइ जिननी आंण ॥४८॥

बाल ५१ (५०) ॥
देसी० पाटकुशम जिनपूज परूपई०॥

पंच अतीचार एहना जांणे, सुणज्यु सहु ब्रध बाल ।
सहइसाकारि न दीजइ, भाई, अणयुगतु वली आल, हो भवीका,
मुख्यथी साचु बोलो, जो तुमर्नि सीवमंदीर वाहालुं,
पर अवगुण म म खोलो, हो भवीका, मुख्यथी साचु बोलो ॥४९॥

मरम पीआरा कांय प्रकासो, नर्ग नीगोर्दि पडस्यु ।
वचनथकी नर होस्यु दूखीआ, चोगतिम्हां रडवडस्यु हो,
हो भवीका, मुख्यथी साचु बोलो ॥५०॥

मंत्रभेद म म करोअ सदाय, सीख देउं तुम सारी ।
सेठितणे अवदात ते सुणज्यु, मरणि गई तस नारि, हो भवीका... ॥५१॥

जुठा ते ऊपदेश ते न दीजइ, ए दीधा वीन सारे ।
ऊत्तम कुलनो नही आचारो, नरनारी अ विचारो ॥५२॥

हो भवीका मुख्य० ॥

कुडा लेख न लखीइ कहइ निं, परदूख ऊपजइ अंर्गि ।
तो आपण सुखीआ किम थईइ, किम जईइ सीध संर्गि ॥५३॥ हो भ० ॥

वीस्वासी नर घात न कीजइ, एक मांनो ए वेद ।
खोलइ माथु मुक्यु जेणि, ते कीम कीजइ छेद ॥५४॥ हो भ०॥

पर धुति निं पंडी वधाइ, नवि लीजइ तस नांम ।
ते नर भवि भवि होसइ दूखीआ, दूरगति मांहा नही ठाम ॥५५॥ हो भ०॥

दूहा० ॥

दूर्गतिवासइं ते वसइ, जे नवी बोलइ साच ।
ब्रत बीजामां एम कहुं, मृषा म भाषो वाच ॥५६॥

पार न भवनो पांमीइ, करतां चोरि वात ।
ब्रत त्रीजाम्हां वारीउं, सुणि तेहनो अवदात ॥५७॥

ढाल ५२ । (५१) ॥

देसी० अणसण एम रे आराधीइ० ॥ राग—शामेरी ॥
त्रीजु ब्रत एम पालिइ, थुलि अदितादान रे ।
वाटि म पाडीश पंथीआ, जो तुझ होइ सांन रे ॥५८॥
त्रीजु ब्रत एम पालीइ ॥ आचली ॥

परघरि धन नवी लीजीइ, एम नीस खातर पाड्य रे ।
पूर पाटण नवि बालीइ, नगरि म लाविश धाडि रे ॥५९॥ त्रीजु० ॥
दूष्ट हईउं नवि कीजीइ, चोरी च्यांति ऊतार्य रे ।
परधन पंकसमां गणइ, ते नर मोष्य दूआर्य रे ॥६०॥
धन हरतां दूख पांमीओ, लोहखरो जगि चोर रे ।
सूलिरेपण ते लहइ, करतो कर्म कठोर रे ॥६१॥
मंडक चोर चोरी करइ, परधन लइ वली तेह रे ।
मुलदेवि तस मारीओ, अतिदूख पांमिओ एह रे ॥६२॥
भोमि पङ्क्यु नवि लीजीइ, नयणे म जोईस्य तेह रे ।
वणलिर्धि दूख पांमीओ, मुनि मेतारज जेह रे ॥६३॥
अणदीधुं नवि लीजीइ, लीर्धि पातिग जाण्य रे ।
पर नर केरी रे पायको, ग्रहइतां पूण्यनी हाण्य रे ॥६४॥ त्रीजु० ॥
पंच सह्या पर शाश्वनि, तापस जल ऊपकंठ रे ।
वार्य वीनां जगि ते सम्या, पण्य न हुआ ऊलंठ रे ॥६५॥ त्रीजु० ॥

दूहा० ॥

सोये ऊलंठ ज नवि हवा, समझ्या शास्त्र ज मर्म ।
अणदिद्धु जल नवि लीउं, गर्ख्यो तापस धर्म ॥६६॥

तो किम आपण लिजीइ, पर केरु वली धन ।
 परभवि देवुं तेहर्नि, सुणज्यु जस रि कंन ॥६७॥

परधन लेतां सोहेलु, भोगवतां दूख होय ।
 जो जांणो तो चेतयु, छल म म रमयु कोय ॥६८॥

परधन लेई एक नरा, करता अमृत आहार ।
 परभवि भंसा घर थई, सिर वहइसइ बहु भार ॥६९॥

सालि दालि घ्रत घोलथी, विष्य पिढु ते खास ।
 पणि परधन नवि लीजीइ, दिण तणो जगि दास ॥७०॥

कवीत ॥

दिणतणो जगि दास, वास पणि दिणइं मुकइ
 दिणइ देह ज खोय, दिणथी भोजन चुकइ ।
 दिणइ दीन मुख होय, दिणथी दीसइ दूखीओ
 दिणइ ऊवटवाट, दिणथी सुइ न सुखीओ ॥
 दिणइ कीरति पंगलि नर्गगति नीसइ कही ।
 नीच युनि अवतार, छूटइ पसु पीठि वही ॥७१॥

दूहा० ॥

पीठि वहीर्नि छुटसइ, परवश तेहनि देह ।
 ते भोगवतां दोहेलुं, जिहा दूखनो नही छेह ॥७२॥

ढाल ५३ । (५२)॥

देसी० दइ दइ दरीसण आपण० ॥

पंच अतिचार एहना, जिन कहि सो पणि यालि रे ।
 वस्त म बोहोरीश चोरनी, तुं मन त्यांहथी वाल्य रे ॥७३॥

चीत चोखुं नीत राखीइ, राखि बहु सुख होय रे ।
 मन मइलइ दूख पांमीओ, द्रमक भीखारी जोय रे ।

चीत चोखुं नीत राखीइ ॥ आचली० ॥

संवल कहो किम दीजीइ, चोर तणइ वलि हाथि रे ।
 पापी पोष वधारतां, दूख लहीइ बहु भाति रे ॥७४॥ चीत चोखु० ॥

भेल संभेल न कीजीइ, नवी पुराणी मांहइ रे ।
 परभवि बहु दूख पांमीइ, कोण सखाई त्याहिं रे ॥७५॥ चीत० ॥

राजविरुद्ध न कीजीइ, कीधइ किम सुख होय रे ।
 वीष पीर्धि किम जिविइ, रीदइ वीचारी जोय रे ॥७६॥ चीत० ॥

कुडां तोल न कीजीइ, ओछां अदिकां माप रे ।
 छल छबर्दि धन मेलता, लागइ पोहुंअ पाप रे ॥७७॥ चीत० ॥

मातपीता नवि वंचीइ, बांधव भगनी पूत्र रे ।
 गांठि जुई नवी कीजीइ, एम रहइ छइ घरसुत्र रे ॥७८॥ चीत० ॥

दूहा० ॥

सुत्र संभालि राखीइ, वचन वडानुं मांन्य ।
 व्रत चोथुं हवइ संभलो, जे जगी मुगट समान्य ॥७९॥

मृगकुलमहां यम केशरी, वाहन मांहि तुरंग ।
 तिम व्रतमां ब्रह्मव्रत वडुं, क्यमेह न कीजइ भंग ॥८०॥

द्वाल ५४ ॥ (५३)॥

देसी० वासपूय जिन पूण्यप्रकाशो० ॥राग-असावरी ॥

तीर्थमांहा यम श्रीसेत्रुंजो, सुरपति मांहां जिम अंद्र ।
 मंत्रमांहि जिम श्रीनवकार, गहइगणमांहा जिम चंद्र ॥८१॥

जल सघलामां जलधर मोटो, पंखीमांहां जिम हंसो ।
 सर्पयोन्यमां सेष ज बलीओ, कुलमांहां ऋषभावंसो ॥८२॥

परबतम्हा जिम मेर वखाणुं, ठाकुरमांहा जिम रामो ।
 हनु वांनरकुलमहां अतीबलीओ, कीधां वसमां कांमो ॥८३॥

कुजरम्हां अहीरावण मोटो, गढम्हा लंकां कोटो ।
 सूरथाना अस्व जबलीआ, भमता देता डोटो ॥८४॥

रूपमुखी जिम मयण वखाणुं, सायरम्हां जिम खीरो ।
कलपतरु तरुअरम्हां मोटो, जलम्हां गंगानीरो ॥८५॥

शर सघलाम्हां पो(पे)खो भाई, मांनसरोवर मोटुं ।
श्रीकुंलम्हां मरुदेव्या मोटी, दूजाणांम्हा झोटु ॥८६॥

ब्यमावंतम्हां श्रीअरीहंत, तपसुरा अणगारा ।
भोगिमांहां चकवर अतीमोटो, जस रोध्य अंत न पारा ॥८७॥
वासदेव सुरा-मुख्य मंडुं, परीग्रहइमाहा सुत सारो ।
तिम ब्रत बारम्हां मुख्य मंडु, ब्रत चोथु ज अपारो ॥८८॥

द्वाल ५५ (५४) चोपई ॥

माहाब्रत केरो टालु दोष, परदारानो करि संतोष ।
परमणी सार्थि जे रम्या, सुरनर केता नीचा नम्या ॥८९॥
आगइ अंद्र अहीलास्यु रम्यु, अपजस तेहनो गगनि भम्यु ।
सहइ सभग तस पोतइ हवा, अंगइं रोग तेहर्नि नवनवा ॥९०॥

गुरुनी मझहइला लाव्यु चंद, कलग ई मुख पांम्यु मंद ।
मासिं साजो एक दिन होय, विषइ थकी दूख पांम्यु सोय ॥९१॥
पापी विषइ विटंबइ घणुं, नीर उतार्यु भ्रहा तणुं ।
चोखइ च्यंति न सक्यु रही, ध्यान थकी ते चुको सही ॥९२॥
ईसि भीली झाल्यु हाथ, तो दूख पाम्यु शंभुनाथ ।
बाली कामर्नि जोगी थयु, सकल लोकम्हां महीमा गयु ॥९३॥
रावण सरोखो राजा जेह, काम थकी दूख पाम्यु तेह ।
दस मस्तगानो खइ तव थयु, कनकतणो गढ लंकां गयु ॥९४॥
कईचक जो सीलि नवी रह्या, हण्या ज्युध ते दूर्गति गया ।
मणिरथ राजा ते अवगुण्यु, स्त्रीकारणि तेणइ बंधव हण्यु ॥९५॥
मोटो राय अवंतीधणी, कार्मि ते कीघो रे वणी ।
नगरी कोट पडाव्यु अस्यु, वण पाधइ तस पाणी रसो ॥९६॥

वीषइ घणी ब्रह्मदत्तनि हती, मर्तीवेल्यां मुख्य कुरमती ।
 एम स्त्रीलंपट सबलो थयु, तो ते सतम नर्गि गयु ॥१७॥

विटल पूर्ष दनि रमवा गया, नारी देखी वीवल थया ।
 तेणइ बांध्यु अरजनमालिका, जिष्ठ मुष्ट बहु दिधा धका ॥१८॥

तेणइ त्याहां कीधो लज्जालोप, अर्जनमाली आव्यु कोप ।
 तेणइ दिधी तीहा जष्वर्णि गालि, फटि जीव्यु जगी ताहासुं बालि ॥१९॥

जखीराज कोपि धमधम्यु, षट पूरष्यइं महीमा नीगम्यु ।
 मोगर एक दीओ तस हाथि, उठी अर्जन वेगि नीपाति ॥२०॥

छुटी अर्जन अलगो थाय, छइ पूर्ष शरि दीधा घाय ।
 जो नारीनि शंगि रम्या, हण्या ज्योध ते दूरगति भम्या ॥२१॥

हवड मुनीवरनो कहु अवदात, पूडरीक नृप केरो भ्रात ।
 भोगतणी ईछयाइं थयु, कुडरिक सातमिइं गयु ॥२२॥

मुनीवर मोटो आद्रकुमार, कांमि चार्त्र कीधु छाहार ।
 बार वरस घरवासि रह्यु, जो मुकी तो सुखीओ थयु ॥२३॥

रषि आषाडो मुनिवरपती, कांमि चारित्र चुको जती ।
 वेशास्यु तेणइ कीधो नेह, छेहे मुक्यु सुख पाम्यु तेह ॥२४॥

अर्णक ऋषि विषयाइं नड्यु, सील गयु संयमथी पड्यु ।
 फरी कद्रूप सार्थि ते वद्यु, मुगति गयु पणि पूस्तगि चद्यु ॥२५॥

नंदघेण वेशाघरि रह्यु, दस बुझवइ पणि संयम गयु ।
 सीलवरत तेणि आदर्यु, तो तस मुनीवर नाम ज धर्यु ॥२६॥

चोमासीतप केरो धणी, पणि सहुइं नाख्यु अवगुणी ।
 सील खंडवा केडि थयु, कोशामंदिरि चाली गयु ॥२७॥

रत्नकाय भमाइयु जेह, भमी भमीर्नि आव्यु तेह ।
 प्रतिबोध्यु निं मुनिवर गयु, सील ग्रह्यु तो ध्यन ध्यन थयु ॥२८॥

रहइनेमि मन-वचनि पड्युं, राजुल देखी ते हडबड्यु ।
माहाभट मदनि कीधो रंक, सही शरि पांप्यु सोय कलंक ॥१॥

लषणा नांमि जे माहासती, मन मङ्गलइ चुकी स्युभगति ।
मनह वचन काया थीर नही, ते नर सुखीआ थाइ कही ॥१०॥

कुलवालुंओ मुनीवर जेह, माहातपीओ पणि कहीइ तेह ।
सीलखंडणा तेणइ करी, खिणम्हां दूरगति नारी वरी ॥११॥

एहेवो कांमतणो अबदात, सुणज्यु सहु शभा नरनाथ ।
तो अबलास्यु कस्यु सनेह, जाति जे देखाडइ छेह ॥१२॥

भोज मुज परदेसी जेह, सबल वटंब्या नारिं तेह ।
जमदगधनि नारिं नड्यु, राय भरथरी ते रडवड्यु ॥१३॥

ब्रह्मराय घरी चुलणी जेह, पोतइ पूत्र मरवइ तेह ।
गउतम ऋषिनी अहीला नार्य, अंद्र भोगवइ भुवन मझार्य ॥१४॥

ए नारीनो जोय बीचार, जोता काँई नवी दिसइ सार ।
समझ्या ते नर मुकी गया, नवि समझ्या ते खुची रह्या ॥१५॥

अकल गई नरनी वली एम, जिहाथी प्रगट्या त्याहा बहु प्रेम ।
ऊतपति जोनी तुं आपणि, समझी मुके मती पाप्यणी ॥१६॥

मातपीता निं युग्मि वली, श्रुणी स्युक गयां बइ मली ।
जग सघलु जई तिहा उपनो, नांहानो मोटे एम नीपनो ॥१७॥

तो ते सांथिं स्यु वलि रंग, म करे नारी केरो संग ।
भोग करंता हंशा बहु, नरनारी ते सुणयु सहु ॥१८॥

बेअंद्री पंचेद्री जेह, नव नव लाख कहीजइ तेह ।
मुनीष असंखि समुर्ढ्य जांणि, भोग करंतां तेहनी हांणी ॥१९॥

दूहा०॥

हाणि न करता हंसनी, सीलवंतम्हां लीही ।
पणि वरला जगि ते वली, जिम पसुआंमां सीह ॥२०॥

सुगर कहइ संभारीइ, सीलवंतनां नाम ।
ऋषभ कहइ नर ते भला, जेणइ जगी जीत्यु कांम ॥२१॥

शमशा० ॥

गोरधुपूत्त कहीजइ जेह, ता वाहन भष्य कहीइ तेह ।
तास भष्यन नाम जे कहइ, तेहनुं वाहन जे जगी लहइ ॥२२॥

तेहनि वाहालुं स्यु वली होय, उतपति तास वीचारी जोय ।
ता वाहन भष्य केरे तात, तस बंधन रीपू जग वीख्यात ॥२३॥

तेहना बांध्या जे जगी लहइ, तास तणो स्वामी कुण कहइ ।
तेहनुं वाहन अतिबलवंत, तेणइ आंण्यु जगी जेहनो अंत ॥२४॥

तेहनि बंधी जे वश करइ, ते वहइलो मुगार्ति संचरिइ)।
जन्म मर्ण जरा नही यांहि, अनंत सुख नर पांमइ त्याहि ॥२५॥

दूहा० ॥

संपइ सुख बहु पांमीइ, जो वश कीजइ कांम ।
सीलवंत जगी जेहवा, लीजइ तेहनां नाम ॥२६॥

ढाल० ।चोपई ॥ (५५) ॥

शीलवंतनुं लीजइ नाम, तो मनवंछीत सीझइ कांम ।
सीलवंतना पूजो पाय, रीध्य ब्रीध्य सुखशाता थाय ॥२७॥

सीलतणो जगी महीमा घणो, जग सघलो थाइ आपणो ।
सुर नर कीनर दानव देव, सीलवंतनी साझ सेव ॥२८॥

सीलवंत संग्रामि चडइ, ते कोण नर जे सांहामो लडइ ।
नावइ सुरो साहामो धस्यो, सीलवंतनो महीमा अस्यु ॥२९॥

सीलवंतना पगनुं नीर, तेणइ लेई छाटो आप शरीर ।
सकल रोगनो खइ जिम थाय, कष्ट कोढ कली नाहाठो जाय ॥३०॥

सती सुभद्रानी सुणि वात, जेहनो जग जाणइ अवदात ।
कुपि चालणि तांतणि तोलि, काढी नीर ऊघाडी पोलि ॥३१॥

सती वशला आगइ हवी, रामचंद्र मुख्य तेहर्नि स्तवी ।
 सीलवती तु माहारी मात, आ ऊठाडो वेंगि भ्रात ॥३२॥

तव सतीइं सिर ह (ह)थ ज धर्यु, पद्यु पुर्ष ते चेतन कर्यु ।
 उठ्यु लषमण हरखिं हस्यु, सीलतणो जगी महीमा अस्यु ॥३३॥

नारद वेढी लगावइ घणी, ए परगति छइ आतमतणी ।
 तोहइ मोष्य गयु तस गणो, जोयु महीमा सीअल ज तणो ॥३४॥

सीलि रही अंजनासुंदरी, तो बनदेविं रख्या करी ।
 सीहतणु स्यंकट तस टल्यु, वन सुकु ते वेंगि फल्यु ॥३५॥

कलावतीनुं सीअल ज जोय, भुजाङड पांमी जगी दोय ।
 नदीपूर ते पाछु वल्यु, सीलसरोमणि पर्गट फल्यु ॥३६॥

रामचंद्र घरि सीता जेह, अग्यनकुंडम्हा पड़ठी तेह ।
 वस्यवांनर फीटी जल थयु, जनकसुतानुं नाम ज रह्यु ॥३७॥

कमल एक प्रगद्युं कहइ कवी, ते ऊपरि बइठी साधवी ।
 लव निं कुश व खोलइ वली दोय, सीलवंती जगि वंदो सोय ॥३८॥

बंकचुल वनि मोये चोर, ब्रत चोथु तेणइ लीधु घोर ।
 कार्ण पणइ तेणइ राख्यु सील, राजसीध्य बहु पांप्यु लील ॥३९॥

कलीकालि सोनी शंग्राम, सीलि अंब फल्यु अभीराम ।
 वली मेहे बुढो ते अतीघणो, जोज्यु महीमा सीअल ज तणो ॥४०॥

द्वाल ५७ । (५६)॥

देसी० पाय प्रणमी रे, वीर जिनेस्वर राय रें०॥ राग-मल्हार ॥

सील साचु रे प्रेम करीनि पालीइ
 एणइ वरति रे आतमवंश अजुआलीइ ।
 मन दोहो दशरे जातु पाछुं वालिइ
 ब्रह्म वरति रे कर्म कठण ते गालिइ ॥

त्रुटक० गालीइ कर्म जे कठण जुनां सील अंगि सो धरी
मन वचन काया करो चोष्यां संसार सागर जाओ तरी ।
आगि जे नर नारि मुनीवर सील अंगि आदयु
सोय नरनु नाम जपतां जाणि मन मोरूं ठर्यु ॥४१॥

सुदर्शण सेठि रे व्रत ते चोथु शरि बह्य
पटरांणी रे प्रेम तणइ वचने कह्यु ।
रंभा देखी रे सेठ तणु मन थीर रह्युं
नवि चुको रे जो जाण्युं जीवत गयुं ॥

त्रु० जीवत जातई जे न चुको रणी बहु रोसि चडि
बहु बुब पाडी अत्यहि त्राडी सेठि बांध्यु ते जडी
माहाराज बोल्यु द्यु न सुली सेठिनि सांचइं सही
ए सील महीमा थकी जुओ सुली सीघासण थई ॥४२॥

श्रीअ थुलिभद्र रे मुनीवर मोटे ते यती
जंबुस्वामि रे वंदे वर्णि स्युभपती ।
धना स(सा)लिभद्रे जेणइ ख्रीअ मुकी छती
नरनायक रे पंच संहांनो जे पती ॥

त्रु० जे पती पच सह्या केरो नामि सीवकुमार रे
भावचारीत्र थकी वंदो सील रह्यु नीरधार रे ।
पंचमइ सुखोकि पोहोतो कर्म केतु खइ कर्यु
सील अंगि धर्यु साचु नाम जगम्हां बीस्तर्यु ॥४३॥

दूहा० ॥

नाम ते जगम्हा बीसतर्या, आगि वली अनेक ।
सो मुनीवर नीत्य वंदीइ, सील न खंडयु रेष ॥४४॥

ढाल ५७ ॥

देसी० एणी परि राय करता रेऽ ॥ राग-गोडी ॥
गऊतम मेघाकुमार रे वली वछ थावछो, वहइस्वाम्यनि पाए नमु ए ॥४५॥
भरत बाहुबल दोय रे अभयकुमारस्यु, ढंडण मुनीवर वंदीइ ए ॥४६॥

शरीओ अतीसुकमाल रे बंदू अइमतो, नागदत्त सीलि रह्य ए ॥४७॥
 कइवनो गुणवंत रे समरु शकोशल, पूड़रीकनि पूजीइ ए ॥४८॥
 प्रभवो वीस्प्यकुमार रे कुरगाहु मुनी, करकंदु सीलि भलो ए ॥४९॥
 कौस्य अनि बलिभद्र रे बंदू हनमंत, दशानभद्र दीनकर समो ए ॥५०॥
 ब्राह्मी सूदरी सोय रे मयणासुंदरी, दबदंती सीलि भली ए ॥५१॥
 मृगावती पून्यवंत रे सुलसा साधवी, मणिरेहा मुख्य मंडीइ ए ॥५२॥
 कुता द्रपदी दोय रे चंदनबाला ए, पूफचुला राजिमती ए ॥५३॥

दूहा० ॥

सीलवंत नर नार्यनुं नतिं लीजइ नाम ।
 नवनीध्य चऊदरयण घरि, जस जगम्हा अभीराम ॥५४॥
 मन विन सील ज पालीइ, तो पणि सुर अवतार ।
 चीत चोखु नित्य राखता, ते किम न लहइ पार ॥५५॥

ढाल ५८ ॥ चोपई ॥

पंच अतिचार एहना सार्य, विधवा देश कुलंगनां नार्य ।
 अपरग्रहीता शंगम म करो, हाश वीनोध क्रीडा परीहरो ॥५६॥
 वली सदारा सोक्य ज जेह, द्रीष्टराग कर्यु वली तेह ।
 विप्रजाश कीधो मनि धणुं, पाप आल्युओ आतमतणुं ॥५७॥
 सरगवचन बोल्यु मुख्य थकी, वीकलपथी जीऊ थाइ दूखी ।
 अनंगक्रीडा कीधी रंगि, मीछादूकड द्यु जिनसंगि ॥५८॥
 परविहीवा भेलि कां दीइ, विषइ वधारी स्यु फल लीइ ।
 कांमभोग तीवर अभीलाष, सील परजाली कीधु राख ॥५९॥
 रूप शणगार वखाणइ वली, मन चोखुं पणि जाइ टली ।
 जिम लीबु मुखस्यु नवी मलइ, पणि तस बातिं डाढ्य ज गलइ ॥६०॥
 आठम्य पाषी पून्यम जाण्य, ए छइ स्युभ करणीनी खांण्य ।
 एणइ दिवसिं ए रखो आप, भोग करंता पोदु पाप ॥६१॥

सील समु नही को पचखांण, जोयु ज्युध विमासी जांण ।
लाछलदे सुत ते पणि ग्रह्य, थुलिभद्रनुं नांम ज रह्य ॥६२॥

दूहा० ॥

थुलिभद्र मुनीवर बडो, सिर वही जिनवर आंण ।
हवइ सुणयु व्रत पांचमुं जे परिग्रहइ—परिमाण ॥६३॥

ढाल ५९ ॥ चोपई ॥

पांचमइ वरांत चोरखुं ध्यांन, सकल वस्तनुं कीजइ भांन ।
अतित्रिस्णा मनि वारो लोभ, एह थकी बहु पांम्या खोभ ॥६४॥

नवइ नंद ते क्यरपी हुआ, मुमण सेठि धन मेली मुंआ ।
सागर सेठि सागरमाहा गयो, जो जगी सबलो लोभी थयु ॥६५॥

धन संच्यानुं मोटु पाप, उपरि थाईश फणधर साप ।
ऊदर घसंतो हीडश आप, ऊद्यारनि करतो संताप ॥६६॥

ते धन ऊपरि मुरछा कसी, खाओ खरचो मनि उहोलसी ।
धन यौवन यम पीपल पांन, चेतो चंचल गजनो कांन ॥६७॥

ते माटइ मुर्ढा म म मंड्या, अतित्रीस्णा आतमथी छंड्या ।
आगइ अनरथ हुओ घणो, ते महीमा छइ परिग्रहइ तणो ॥६८॥

भरत बाहुबल झगडो कर्यु, तो तेहनो अपजस वीस्तर्यु ।
कनकरथं नीज मार्यु पूत्र, जाण्यु लेसइ मुझ घरसूत्र ॥६९॥

लोभ लगि सुर पूरी कुंमार, हण्यु पिता तेणइ नीरधार ।
रत्न तणो वली लीधो हार, न कर्यो बीजो कस्यु वीचार ॥७०॥

श्रेणिक सरीखो राजा जेह, परिग्रहइथी दूख पाम्यु तेह ।
कोणी राजा लोभी थयु, पीता हणीर्नि नरगि गयु ॥७१॥

सुभमराय चक्री आठमो, ते नर सबलो लोभी हवो ।
त्रीस्णानो नवि आण्यु छेह, तो दूख पाम्यु नरगि तेह ॥७२॥

शमशा० ॥ चोपई ॥

सुरपतिवाहन केरो स्पुत्र, ताश शाम्यनी केरो पूत्र ।
 तास पीता-मस्तगि जे रहइ, कुणथी सोय कलंक ज लहइ ॥७३॥

तास रिपूनो ठांम ज कहइ, तास धरीनि कुण जगि रहइ ।
 तेहनो कुण झालइ जगी भार, तास रीपू ठाकर कीरतार ॥७४॥

तेहनी नारी सार्थि नेह, जातो दूख पांमइ नर तेह ।
 जेणइ खाधी खरची ओहोलाश, ते नर वशीआ स्युभगति वाश ॥७५॥

माहारु माहारु करता जेह, पण धन मुकी चाल्या तेह ।
 परियहइ माटइ थीर नवी रह्या, धन पाषइ नर को नवी गया ॥७६॥

ढाल ६० ॥

देसी० नंदनकु त्रीसला हुलरावइ० ॥ राग - असाओरी ॥
 माहारु माहारु म कर्य तु कंता, कंता तु गुणवंता रे
 नाभीराया कुलि ऋषभजिणदा, चाल्या ते भगवंता रे ॥७७॥

म्हारु म्हारु म कर्य तु कंता० । आचली ॥

भरत नवाणु भाई सार्थि, बासदेव बलदेवा रे,
 काले सोय समेटो चाल्या, सुर करता जस सेवा रे ॥७८॥ म्हारु०॥

भरथ भभीषण हरी हनमंता, कर्ण सरीखा केता रे,
 पांडव पंच कोरव सो सुता, बर्द वहंता जेता रे ॥७९॥ म्हारु० ॥

नलकुबर नर य हरीचंदा, हठीआ सो पणि हाल्या रे,
 रावण राम सरीखा सुरा, काले सो नर चाल्या रे ॥८०॥ महा०॥

दशांनभद्र राइ वीक्रम सरीखा, सकल लोक शरि राणा रे,
 सगरतणा सुत साठि हजारइ, सो पणि भोमि समाणा रे ॥८१॥ म्हारु० ॥

दूहा० ॥

माहारु म्हारु म म करो, करयु गहइन वीचार ।
 आगइ नरवर राजीआ, छंडिं पाम्यां सार ॥८२॥

द्वाल ६१ ॥

देसी० नवरंग वझराणी लाल० ॥ राग-हुसेनी ॥

ऋषभ अजीत संभव जिना, अभिनंदन ज़गी जेह ।
रीध्य रमणी सुख सो वली, नर छंडी चाल्या तेह रे ॥८३॥

धन छंडइ ते जगी सार, विण मुकिं न लहइ पार रे,
धन छंडि ते जगी सार० आचली० ॥

सुमतिनाथ जिन पंचमो, जस घरि रिधि अपार ।
पद्मप्रभ धन ते तजी, जेणइ लिढ्हो संयम भार रे ॥८४॥ धन छं० ॥

सुपारस जिनेस्वर सातमो, कनक तणी घरि कोङ्क्य
चंद्रप्रभ सुवधी जिना, ऋध्य चाल्या ते जगि छोङ्क्य रे ॥८५॥ धन० ॥

सीतलजिन श्रेअंस निं, वासपूज्य जिनराय,
चंपानगरीनो धणी, धन छंडी मुनीवर थाय रे ॥८६॥ धन० ॥

क्यंपलपूरनो राजीओ, विमलनाथ जिनदेव,
अनंत धर्म अरीहा वली, रीध्य छंडइ सो ततखेव रे ॥८७॥ धन छंडइ० ॥

सांतिनाथ जिन सोलमो, कुथनाथ अरनाथ,
मलिदेव मीथलां तजी, भाई ए जगम्हां बीख्यात रे ॥८८॥ धन० ॥

मुनीसुब्रत जिन बीसमो राजग्रहीनो राय,
नमीनाथ नेमीस्वरु जगि, सुर जेहना गुण गाय रे ॥८९॥ धन० ॥

पास जिनेस्वर पूजीइ, वरधमान जिन जोय,
दोय वरस आग्रहइ रह्य, नरसीह समो जगि सोय रे ॥९०॥ धन० ॥

दूहा० ॥

धन कण कंचन काम्यनी परीग्रहइ भाति अनेक ।
पाच अतिचार परोहरो, मुरछा म करो रेख ॥९१॥

ढाल ६२ ॥

देसी० ए तीर्थ जाणी पूर्व नवाणुं वार० ॥

एना पाच अतीचार टालो जिम धरि खेमो,
धन धान निं खेत्रु, वस्त्र रूप निं हो(हे)मो ॥९२॥

कासुं निं त्रांबुं सपतधातनी जात्य
दूपद निं चोपद नदविधि परीग्रहइ भात्य ॥९३॥

मुरछा मन्य अंणी, परीग्रहइ ब्रत्त प्रमाणो
लई नवी पढीउं, वीसरतां ज अयाणो ॥९४॥

अल्लीदु मेल्युं, नीम वीसार्या जेहो,
पांचमइं पणि वरतिं मीछादूकड तेहो ॥९५॥

वरि वीषधर बदने जीभ दीइ ते सारे
पणि ब्रत नवि खंडइ ऊतम ए आचारो ॥९६॥

दूहा० ॥

लीघु ब्रत नवी खंडीइ, खंडि पातिग होय ।
छटु ब्रत सहु संभलो, नीम म छंडो कोय ॥९७॥

ढाल ६३ ॥

देसी० कहइणी कर्ज तुझ वीण साचो०॥ राग-ध्यन्यासी ॥

दीगवेरमण वरत वखाणुं, राखी चोखु ध्यानजी ।

जलिवटि जावा केरुं भाई, सहुं करज्यो वली मानजी ॥

दीगवेरमण वरत वखाणुं, राखी चोखुं ध्यानजी० । आंचली ॥९८॥

पगवटि चांलंता तु चंते, मनमा नीम संभारेजी ।

ऊतर दध्यण पूर्व पछिम, ए दसि कहीइ च्यारेजी ॥९९॥ दीग० ॥

च्यार वदशर्नि ऊर्ध अधोदसि, दसइ दसी मान संभारेजी ।

आगड आखडी चोखां पालु, लीधो नीम महारो जी ॥१००॥

दीग वेरमण० ॥

पाच अतीचार एहना आख्या, तीहा म म वाहो अंगजी ।
 आवंतां जावंता म करीश, नीम तणो वली भंग जी ॥१॥ दीग० ॥

पाठवणी आधी पाठवता, अंगि अतीचार थाइ जी ।
 वरतभंग करइ नर जेता, ते नर नरगिं जाइजी ॥२॥ दीग० ॥

एक दसि सोथ संखेपी सहाइजि, बीजी कांय बधारी जी ।
 वरतखंडणा एम नवी कीजइ, सुणज्यु सहु नरनारी जी ॥३॥ दीग० ॥

काकजंघा रजा अती बलीओ, तेणइ ए वरत न छुड्यु जी ।
 जो पणो ते वडरी वश पडीओ, दशनुं मांन न खंड्यु जी ॥४॥ दीग० ॥

जे नर ए व्रत चोखुं पालइ, कर्म कठण ते गालइ जी ।
 कार्ण पणइ जे किमेह न चुकइ, आतम ते अजुआलइ जी ॥५॥ दीग० ॥

दूहा० ॥

आतम एम अजुआलीइ, कीजइ तत्त्ववीचार ।
 सतम वरत संभारोइ, तो लहीइ भवपार ॥६॥

द्वाल ६४ ॥

देसी० सुणो मेरी सजनी० ॥ राग-केदारो ॥

सतम वरत संभारो भाई रे, चउदइ नीम ज करो सखाई रे ।
 नीत संखेपो एकचीत लाइरे, हंसानि छइ ए हीतदाई रे ॥७॥

सचीत नीवारो, द्रवि संखेपो रे, वीगइ वीचारी लिजइ रेषो (रेषो ?) रे ।
 एहथी वाधइ वीषइअ वसेषो रे, कार्मि लहीइ दूरगति एकोरे ॥८॥

बांहाणई केरुं मांन सु कीजइ रे, मुखि तंबोलह वरेकि दीजइ रे ।
 वस्त्र कुशमनी वगति करीजइ रे, बाहन सुअण वलेप गुणीजइ रे ॥९॥

बीषइ नीवारो पंथ संभारो रे, नांहाण नवणनो बोल सुधारो रे ।
 भात सुं पाणी वीर्धिं वीचारो रे, नीम संभारी आतम तारो रे ॥१०॥

दूहा० ॥

आत्म आपसु तारजे, पंच अतीचार टालि ।
पनर करमादानं परीहरे, म पडीश पाप जंजालि ॥११॥

दाल ६५ ॥

देसी० श्रीसेत्रुजो तीर्थ सार० ॥ राग-देसाग ॥

पाच अतीचार एहना टालु, अचीतठांमि मत सचीत नेहालो ।
अचीत वस्त सचीत प्रतबध, दूरि करे ए जांणि अस्युध ॥१२॥

उपक-टूपक तुछ ओषधी कहीइ, भक्ष त करतां सुख किम लहीइ ।
ओला उंबी पुहुक म खाओ, पापडी ऊंपरि प्रेम म लाओ ॥१३॥

ए नीपजतां जीव ज घात, कठण हईडं बली होइ दूरदांत ।
अग्यन कर्म जे घणुंअ अभ्यासइ, जीवदया तेहनी तव न्हासइ ॥१४॥

धान शल्यां म म भरडो भाई, जीव हणंता दूरगती खाई ।
जस्युरो वाहालो पोतानो प्राणी, जीव राखो मनि तेहेवा जाणी ॥१५॥

वालुं असुर्युं ते नवि कीजइ, ऊदय विनां मुख्य अन न दीजइ ।
सुत्र सीधांति एह वीचार, पालइ ते नर पांमइ पार ॥१६॥

अभ्यष्य बाबीसइ ते नवी भजीइ, अनंतकाय बत्रीसइ तजीइ ।
जीव राखो पोतानि ठाम्य, जीम वसोइ सीवमंदीर गांम्य ॥१७॥

दूहा० ॥

सीधनगरी म्हां सो वसइ, न करइ अभ्यष्य सु आहार ।
भष्य अभ्यष्य न ओलखइ, धीग तेहनो अवतार ॥१८॥

दाल ६६ ॥

देसी० पारधीआनी० ॥ राग-केदार गोडी ॥

अभ्यष्य बाबीसइ जे कहां रे, ते वार्या भगवंत्य ।
ऊतम कुल नर जे लह्यु रे, तो कां चालो कुपंथि ॥१९॥

भवीकाजन, अभिष्ठतणुं बहु पाप, वीषमइ पंथइ चालवुं रे,
 तिहा सबलो संताप, भवीकाजन, अभिष्ठतणुं बहु पाप ॥आचली० ॥
 उंबर वडलो पीपलो रे, पीपरडी फल वार्य ।
 फलह कटुबर परीहरो रे, एम आपोयुं तार्य ॥२०॥ भवीका० ॥
 च्यार वीगइ जिन जे कही रे, ते जांणोअ अभिष्ठ ।
 जईन धर्म जगि जांणीओरे, तो किम दीखइ मुख्य ॥२१॥ भ० ॥
 मदीरा मंश मुख्य नही भलु रे, पति पूर्वयनी जाय ।
 मध-मांखणना आहारथीरे, प्राणी मइलो थाय ॥२२॥ भ०॥
 मधनी ऊतपति जोईजइं रे, तो नवी दीसइ सार ।
 श्रवरस लेई माखी विमइ रे, तो स्यु कीजइ आहार ॥२३॥ भ० ॥
 गांप जलंतां जेटलु रे, लागइ पोढु पाप ।
 मधभक्षणथी तेटलु रे, कां बोलइ छइ आप ॥२४॥ भ०॥
 हीम करहा विष बिंगणां रे, माटी मुख्य म देश ।
 तुम नीशभोजन परीहरो रे, सुरघरि रंगं रमेश ॥२५॥ भ० ॥
 तुछ फलानि नवी भषो रे, आंपण बोर अपार ।
 जे जगी जांबु टीबरु रे, पीलु पीचु असार ॥२६॥ भ० ॥
 बहुबिजनी जाति जाणीइ रे, रीगण निं पंपेट ।
 अंतरपट विन पीडलु रे, तीहा म म देयु डोट ॥२७॥ भ०॥
 काय अनंती ओलखोरे, घोलवडानुं साख ।
 अणजांण्या फल परीहरो रे, चलीतरस अथाणुं पाक ॥२८॥ भ०॥

दूहा० ॥

आप अथाणुं परहरे, कंदमुल मुख्य वार्य ।
 अनंतकायर्नि परीहरइ, ते नर मुख्य-दूआरि ॥२९॥

ढाल ६७ ॥

देसी० नंदन कु त्रीसला हुलरावइ० ॥

कंदमुल मुख्य को म म देज्यु, अनंतकाय बत्रीसु रे ।

शाहास्रमाहिं तो अस्युअ कहुं छइ, कहइतां म धरो रीसु रे ॥३०॥

कंदमुल पुष्य को म म देज्यु० ॥ आचली० ॥

थोहर गुगल गलुअ नीवारो, आदू वज्जसु कंदो रे ।

अमरखेति निं नीली हलदर, लसण थकी मुख गंधो रे ॥३१॥ कं० ॥

नीसइ सूर्णकंद नघेदो, थेग लोढ नही सारो रे ।

नीली मोथि कुआरि म खाओ, पापतणो नही पारो रे ॥३२॥ कं० ॥

लुण वीर्धनी छाल्यने तजीइ, गर्णी पलब पांनोरे ।

कुलां कुपल वांसह केरां, दीजइ तसइ अभइदानो रे ॥३३॥ कं० ॥

शाकभेद पलक पणि जांणो, मुलग शणगां धानो रे ।

सताओरि ढकवछल वारो, जो काई होइ तुम सांनो रे ॥३४ ॥ कं० ॥

नीलो वलीअ कचुर न खाईइ, घरसुआं नीसी षात्यो रे ।

आलु कुलि आंब्यली वारो, जिम बइसो सुखांत्यु रे ॥३५॥ कं० ॥

सुरीवाहालुलि वलिअ खलइडां, गाजर वलिअ वखोड्य रे ।

भोमी रहइ पीडाल वसेको, ते खाता बहु खोड्य रे ॥ ३६ ॥ कं० ॥

लुण वेलि बुराल न भखीइ, खांता कस्युअ वखांणो रे ।

वेद पूराण सीधांति वार्यु, को म म खायु जाणो रे ॥३७॥ कंद० ॥

दूहा० ॥

जांण अजाणां चीतवो, जे नवी राखइ आप ।

खाय-अखाय न ओलखइ, लहइ पून्य निं पाप ॥३८॥

कर्म अंगाल न कोजीइ, जीहा बहु हंशा होय ।

नरभव दोहोलि तिं लह्य, आलि अर्थ म खोय ॥३९ ॥

दाल ६८ ॥

देसी० हीरविजइ गुणपेटी० ॥ राग - विराडी ॥

कर्म अंगाल न कीजइ भाई, पातिगानो नही पारे ।
 बहु आरंभ करतां पेखो, नर्ग लहइ नीरधारो, भवीका,
 अग्यनकर्म नवी कीजइ, अतीअनुकंपा रीदइअ धरीनि,
 अभइदान जगि दीजइ, भवीका, अग्यन कर्म नवि कीजइ ॥४०॥
 आगर ईटिनी हिमा नवी कीजइ, बहुरी(रं)गणीजे ल्याहला ।
 कर्म कुकर्म करतां भाई, जीव होइ अतीकाला ॥४१॥ भवीका०॥
 करसण वीर्ष म म छेदीश जन तुं, सीख देउ तुझ सारी ।
 पूफ पत्र फल सोय सुडंतां, हंसा राखे वी(वा)री ॥४२ ॥ भवीका० ॥
 गाढी वइहइल्यु हल दंताला, नावी जे नीपजावी ।
 सो पणि वणज तजइ नर जेता, तस मति चोखी आवी ॥४३॥भ० ॥
 गाडावाही म करो मानव, चोमासइ चीत वारे ।
 थाइ प्रथवी सकल जंतमइ, हीत करी ते ऊगारे ॥४४॥ भ०॥
 दयाधर्म जगि सारे, भ० ॥ आतम आपसो तारे, भ० ॥
 को म म प्राणी मारे, भ० ॥ लाधो धर्म म म हारे, भ० ॥
 फोडीकर्म न कीजइ भाई, कुप सरोवर वाव्यु ।
 भोमिफोड कीओ द्रहइ कारणि, नर भव्य सो नवि फाव्यो ॥४५ ॥भ०॥
 मच्छ कच्छ मिंडक बहु बगला, एक एकनि मारइ ।
 पापतणु भाजन ए करतां, आप केही परी तारइ ॥४६ ॥ भ०॥

दूहा०॥

आप केही परि तारसइ, करतो भाजन पाप ।

वणज कुवणज न परहइ, ते कीम छोडइ आप ॥४७॥

ढाल ६९ ॥

देसी० भावि पटेधर विरनो० ॥ रग-गोडी ॥

पांच वणज किम कीजीइ, दंत चमर नख जोय ।

कस्तुरी मणी पोईशा, मोती शंख ज सोय ॥ ४८ ॥

पांच वणज किम कीजीइ । आचली० ॥

आगरि एहर्नि जई करी, नवि लीजइ सही जाण्य ।

पाप विरध्य अती पामसइ, पूण्यतणी वली हांणि ॥ ४९ ॥ पांच० ॥

लाखवणज नवि कीजीइ, साबु सोमल खार ।

लुण गलि अनि आबुआ, वोहोरि पाप अपार ॥ ५० ॥ पाच० ॥

अरणेटे तुरी धावडी, मणशल निं हरीआल ।

महुडी साहाजीअ म वोहोरजे, वारु छु ब्रध बाल ॥ ५१॥ पाच० ॥

बलि बछनाग न वोहोरीइ, जे विष केरी जाति ।

अन्न शल्यां रे वणजी करी, प्राणी म म दूरगति घाति ॥५२॥ पाच० ॥

कंदनइं मुल ते यालीइ, वणज भलो नही एह ।

श्रीजिनधर्म हेलावतां, अतिदूख पांमइ देह ॥५३ ॥ पाच० ॥

रसवाणज नवि कीजीइ, मध मांखण निं मीण ।

चोथु चोड ते यालीइ, जिम नवि थईइ हीण ॥५४ ॥ पाच० ॥

केसवणज म म को करो, एहनुं पाप अपार ।

दूपद चोपद लेर्इ वेचतां, ऊतम नही आचार ॥ ५५ ॥ पाच० ॥

लोहवणज पणि वारीओ, म म वेचो हथीआर ।

पापोपगर्ण ए कहा, म करो जीवसंघार ॥५६॥ पाच० ॥

दूहा० ॥

पापोपगर्ण म म करो, म करो लोहो हथीआर ।

घाणी जंत्र निं घंटला, करतां पाप अपार ॥ ५७ ॥

ढाल ७० ॥

देसी० तुगीआगीरसीखरि सोहइ० ॥ राग-परजीओ ॥
 जंत्रपीलण जन न कीजइ, घ्यंट घाणी जेह रे ।
 ऊखल मुसल जेह कोहोलुं, तु म वाहीश तेह रे ॥ ५८ ॥
 जंत्रपीलण जन न कीजइ ॥ आंचली० ॥

जंत्र वाहातां जीव केता, प्राणविहुणा थाय रे ।
 तेणइ कारणि ए कर्म तजीइ भजो अवर उपाय रे ॥ ५९ ॥ जंत्र० ॥
 आंक पाडइ पूण्य हारइ, तजि नालछेदन करम रे ।
 कर्ण-कंबल काँइं कापो, जो जाणो जिनधर्म रे ॥ ६० ॥ जंत्र० ॥
 बाल तुरंगम वच्छ पूर्षा, नर समाइ सोय रे ।
 नीचगती ते लहइ नीसचइ, वली नपूसक होय रे ॥ ६१ ॥ जंत्र० ॥
 दव लगाडइ पसु बालइ, सो सुखी किम थाय रे ।
 छेदन भेदन लहइ नर ते, भाष [इ] श्री जिनराय रे ॥ ६२ ॥ जंत्र० ॥
 कुआ वाव्यु द्रहइ म सोसो, जीव केति कोडि रे ।
 प्राण परनो ज्याहा हणाइ, एह मोटी खोड्य रे ॥ ६३॥ जंत्र० ॥
 मछ कसाई अनि तेली, वागरी ववसाय रे ।
 नीच जननी संगति करतां, हंस मइलो थाय रे ॥ ६४ ॥ जंत्र० ॥
 स्वान कुरकुट भांजारा, पोषीइ कुण कांप्य रे ।
 एह पनर खरकर्म टालु, वसो सीवपूर ठाम्य रे ॥ ६५ ॥ जंत्र० ॥

दूहा० ॥

सीवपूर ठांमि सो वसइ, जे नवी करइ कुकर्म ।
 अष्टम वर्तिं जे कह्यु, सुणिहो तेहनो मर्म ॥६६॥

ढाल ७१ ॥

देसी० तो चढीओ घन मानगजेऽ॥

ब्रत आठमु एम पालीइ ए, यले अनर्थडंड तो ।
 खेला नाटिक पेखणु ए, नवि जोईइ पाखंड तो ॥ ६७ ॥

वाघछालि नवि खेलीइ ए, तु मन चारे आप तो ।
 शेत्रुज बाजी सोगठं ए, समतां लागइ पाप तो ॥ ६८ ॥

जु म म खेलीश जुकटइ ए, होइ तुझ धननी हांण्य तो ।
 नल दवदंती पंडवा ए, दूर्ति दूखीआं जाण्य तो ॥ ६९ ॥

राजकथा निं खीकंथा ए, देसकथा म म दाख्य तो ।
 भगतिकथा नवि कीजीइ ए, तु मन वारी राख्य तो ॥ ७० ॥

पाप-उपदेस न दीजीए ए, देतां पूण्यनी हांण्य तो ।
 खांडां कोश कटारडां ए, दीधइं दूर्गती खाण्य तो ॥ ७१ ॥

सुडी पाली पावडो ए, रंभो हल हथीआर तो ।
 लोढी पइंणो काकसी ए, करइ जीवसंधार तो ॥ ७२ ॥

ऊषल मुसल रथ कह्या ए, पीलण पीसण जेह तो ।
 जो हीत बंछइ आतमा ए, मार्या मापीश तेह तो ॥ ७३ ॥

हीचोलइ नवि हीचीइ ए, जलि झीलि स्यु होय तो ।
 पाप करतां प्राणीओ ए, मोक्ष न पोहोतो कोय तो ॥ ७४ ॥

भिसा घेटा बोकडा ए, कुरकुट निं मांजार तो ।
 मलवढता नवि जोईइ ए, ए पेर्खि स्यु सार तो ॥ ७५ ॥

चोर सतीर्नि बालतां ए, जोबानी सी खांत्य तो ।
 ऊशाः कर्म तीहां बांधीइ ए, तो वार्यु भगवंत्य तो ॥ ७६ ॥

माटी कणह कपासीआ ए, नील फूलि जल जेह तो ।
 काज विनां कां चांपीइ ए, हईइ बीचारो तेह तो ॥ ७७ ॥

जल तक घी तेलनां ए, भाजन भार्वि ढंक्य तो ।
 उघाडां नवि मुकीइ ए, जीन पडइ ज असंख्य तो ॥ ७८ ॥

सूडा सालि पोपटा ए, ते पंजर म म घात्य तो ।
 बंधन सहुर्नि दोहेलु ए, किम जाइ दिनरात्य तो ॥ ७९ ॥

माग्यु अग्यन न आपीइ ए, परजलतां बहु पाप तो ।
जीव वणसइ बहु भात्यना ए, जिम जिम लागइ ताप तो ॥ ८० ॥

दूहा० ॥

माग्यो अग्यन न आपीइ, अनि वली लोहो हथीआर ।
अनर्थडंड एम यालीइ, तो लहीइ भवपार ॥८१॥

पांच अतीचार यालीइ, कंद्रप राग कुभाष ।
अधीकर्णा पाप ज वलि, भोर्गि बहु अभीलाष ॥८२॥

ए ब्रत भाष्यु आठमुं, नोमु सोय नीध्यान ।
सांमायक ब्रत संभलो, जिम पांमो बहुमान ॥८३॥

ढाल ७२ ॥

[देसी०] बंछीतपूर्ण मनोहरु० ॥ राग-शामेरी ॥

ब्रत सांमायक पालीइ, अनि पांच अतीचार यालीइ ।
गालिइं कर्म कठण कई कालनां ए ॥ ८४ ॥

देह कनकनी कोडी ए, नही सांमायक जोडी ए ।
थोडीए पूण्यराश जगी तेहनी ए ॥ ८५ ॥

सो सांमाईक लीधु ए, मन मइलु जे पणी कीधु ए ।
सीधु ए काज न एकु तेहनुं ए ॥ ८६ ॥

सावदि वचन न न दाखीइ, शरीरदीक थीर करी राखीइ ।
भाखीइ पद कर पुंजी मुकीइ ए ॥ ८७ ॥

सांमाईक ब्रत जे कहुं, अनि छती बेलाइं नवी ग्रहु ।
एम कहुं लेई काचु कां पारिं ए ॥८८॥

एक वीसाइ पारखुं, ते नरनि अती बारखु ।
संभरखुं पांच अतीचार परीहरो ए ॥ ८९ ॥

दूहा० ॥

पांच अतीचार परीहरो, सांमायक सही राख्य ।
 थीर मन वचन काया करी, सावदी वचन म भाख्य ॥१०॥

च्यार सांमायक चीतवो, समकीत श्रुत वली जेह ।
 देसवरती त्रीजु कहुं, सर्ववरती जगी जेह ॥११॥

सांमायक ब्रत पालतां, बहुं जन पाम्या मांन ।
 परत्यग पेखो केशरी, लहू जेणइ केवलन्यान ॥१२॥

सागरदत संभारीइ, कांमदेव गुणवंत ।
 सेठि सुदरसण वंदीइ, जेणइ राख्यु थीर च्यंत ॥१३॥

चंद्रवतंसुक राजीओ, सांमायक ब्रत धार ।
 चीत्र पोहोर थीर थई रह्यु, करि काओसग नीरधार ॥१४॥

सांमायक स्युध पालता, सही लीजइ तस नाम ।
 ब्रत दसमुं हवइ संभलु, जिम सीझइ सही कांम ॥१५॥

ढाल ७३ ॥ चोपर्इ ॥

देसावगाशग दसमु ब्रत, जे पालइ तस देह पव्यत्र ।
 लेई वरत निं नवि खंडोइ, पाच अतीचार तिहा छंडीइ ॥१६॥

ऊतम कुलनो ए आचार, नीमी भोमिका नर नीरधार ।
 तिहाथी बस्त अणावइ नही, आंहांथी नवि मोकलीइ तही ॥१७॥

रूप देखाडी पोतातपुं साद करइ अती त्राडइ घणुं ।
 नाखइ काकरो थाइ छतो, कां तु कुपि पडइ देखतो ॥१८॥

दूहा० ॥

ऊँडइ कुर्पि ते पडइ, जे करता ब्रतभंग ।
 भवि भवि दूखीआ ते भमइ, दूलहो स्युधगुरु-संग ॥१९॥

ए ब्रत दसमु दाखीडं, कह्यु ते शाहाल्लवीचार ।
 हवइ ब्रत सुणि अग्यारमुं, जिम पांमइ भवपार ॥२०॥

द्वाल ७४ ॥ चोपई ॥

अग्यारमु ब्रत तुं आराधि, सुधो मारा तुं पणि साधि ।

ओहोरतो पोसो कीजीइ, मुगतितणां फल तो लीजीइ ॥१॥

पोसो पूण्यतणो भंडार, परभवि जातां ए आद्धार ।

मनस्युधिं आएधइ जेह, अनंत सुख नर पांमइ तेह ॥२॥

पांच अतीचार एहना टालि, संथारानि भोमि संभालि ।

ठंडिल षडलेही वाकरो, भवीजन लोको विधि आदरो ॥३॥

प्रठवीइ ज्यांहां जइ मातरू, पहइलु द्रीष्टि जोईइ खरू ।

‘अणजांणो जसगो’ कही, प्रठवीइ जइणाइं सही ॥४॥

वार त्रणि कहीइ वोशरे, नीसही आवसही मनि धरे ।

कालवेलां वांदीजइ देव, पोसानि एम कीजइ सेव ॥५॥

प्रथवी पाणी तेऊ वाय, बनसपति छठी त्रसकाय ।

संघट एहनो नवि कीजीइ, पोसानुं फल एम लीजीइ ॥६॥

दिवसि न्यंद्रा कीधी घणी, संथारापोरश नवि भणी ।

अवधइ संथार्यु वलि जेह, मीछादूकड दिजइ तेह ॥७॥

पोषध वली असुर्यु करइ, पारी वहइलु घरि संचरइ ।

भोजननी वलि च्यंत्या करइ, कहइ तुझ काज केही परि सरइ ॥८॥

परबतिर्थि पोसो नवि कीओ, मीछादूकड तेहनो दीओ ।

अंगि अतिचार कां तुम्यु [दिओ] पोतानो समझावो हिओ ॥९॥

दूहा० ॥

आप हईउं समझाविइ, कीजइ तत्त्ववीचार ।

पोषध पूण्य किआ व्यानां, कहइ किम पांमीश पार ॥१०॥

ए ब्रत सुणि अग्यारमुं, वरत सकलमांहां सार ।

वली ब्रत बोलुं बारमुं, ऊतमनो आचार ॥११॥

द्वाल ७५ ॥

देसी० वीजय करी धरि आवीआ० ॥ राग-केदारो ॥

बारमु ब्रत एम पालीइ, दीजइ मुनीवर दांन ।
दान देई रे भोजन करइ, तस घरि नवई नवई नीध्यान ॥१२॥

अतिथि संविभाग ब्रत कीजीइ, दीजीइ जे मुनी हाथि ।
ते पणि आपणि लीजीइ, पूण्य होइ बहु भाति ॥१३॥

साध भलो अर्नि साधवी, श्रावक श्राव्यका सोय ।
शंघ सकलनिं रे पोखतां, पदवि तीथंकर होय ॥१४॥

पाच अतीचार जे कहा, ते टालु नरनार्य ।
आहार असुझतो आपतां, दोष कह्यु रे वीचार्य ॥१५॥

अणदेवा बुध्य कारणि, आहार असुझतो कीध ।
भवि भवि दूखीओ ते भमइ, कर नवि ऊचो कीध ॥१६॥

आहार हुतो रे असुझतो, ते म म सुझतो सार्य ।
अंगि अतिचार आवसइ, पंडीत सोच वीचार्य ॥१७॥

वस्त हती रे पोतातणी, ते किम पारकी कीध ।
पारकी फेडी आपणी, भाषी मुनीवर दीध ॥१८॥

द्वाल ७६ ॥

देसी० वीवाहलानी ॥ बीजो ऊधार जाणीइ० ए द्वाल ॥

वइहइरवा वेलां रे जव थई, तव जई खुणइ अपसइ ।
सलज वहु जिम वणिगनी, ते किम बाहइरि बइसइ ॥१९॥

असुर करी आव्यु तेडवा, जव गयु आहारनो कालु ।
जे नर चरीत्र अस्यां करइ, तेहनिं पाप वीसालु ॥२०॥

साधर्मीक बली आपणो, सीदातो पण्य जांणी ।
सारसंभाल जो नवि करी, तो तुङ्ग सुमत्य लुटाणी ॥२१॥

दीनऊधार ते नवि कीओ, सी ल्यष्यमी तुझ बार्यु ।
अतिऊङ्गु धन घालतां, जाईश नर्ग मझार्य ॥२२॥

तन धन यौवन कार्यमुं, संचि स्यु सूख होयु ।
दीधा दिन नवी पांमीइ, रीदअ वीचारीअ जोयु ॥२३॥

द्वाल ७७ ॥ चोपई० ॥

पूण्य विनां नवि पांमइ कोय नर दीधाना फल तु जोय ।
एक नर बइसइ जो पालखी, एक ऊपाडी थाइ दूखी ॥ २४ ॥

एक नर हाथी हिंवर हार्य, एकनि नही एक छालुं बार्य ।
एक नरनि मंदीर मालीआं, एक झूपडीइं सो जालीआ ॥२५॥

एक नर नारी दीसइ घणी, एक नर नार्य विनां रेवणी ।
एक नर भोजन अमृत आहार, एक नर घइश तणो ज वीचार ॥२६॥

एकनि पलंग पछेडी पाट, एकनि न मलि त्रुटी खाट ।
एक नर पहइरइ सालु वली, एक नरनि न मलइ कांबली ॥२७॥

एक नारी गलि मोतीहार, एकनि चीड नही नीरधार ।
दीधानां फल जोयु वली, सालिभद्र घरि संपद भली ॥२८॥

एक राजा एक मुली वहइ, दत्त वहुणा एम दूख सहइ ।
पगि दाझइ निं माथइ बलइ, रातिदिवश परमंदीर रलइ ॥२९॥

दूहा० ॥

पूण्य विना परघरि रलइ, दत्त विनां दूख जोय ।
एम जाणी पूण्य आदरो, जिम घरि लछी होय ॥३०॥

संपइ सुख बहु पांमीइ, जो दीजइ नीत्य दांन ।
मुख्यथी मीठु बोलीइ, धरीइ जिनवर ध्यान ॥३१॥

ध्यान धरी भगवंतनुं, जीव सकल ऊगार्य ।
पोषध पूण्य प्रभावना, व्रत बाइ चीत धार्य ॥३२॥

बार वरत श्रावकतणां, मिं गायां मति सार ।
 कवीको दोष म देखज्यु हु छु मुढ गुमार ॥३३॥

आगङ्गा कवी आगङ्गि हुं नर सही अयनान ।
 सायर आगलि व्यंदूओ, स्यु करसइ अभीमान ॥३४॥

मात तात जिम आगङ्गि, बोलइ बालिक कोय ।
 तेहमां साचु स्यु हसइ, पणि सांखेवु सोय ॥ ३५ ॥

भणतां गुणतां वाचतां, कवी जोयु बली दोष ।
 नीरमल च्यांति चरचज्यो, दोष म देज्यु फोक ॥ ३६ ॥

ढाल ७८ ॥ चोपर्ड ॥

फोकट दोष म देज्यु कोय, नरनारी ते सुणयु सोय ।
 कुड कलंकतणुं फल जोय, वसुमती ते वेशा होय ॥३७॥

शाहास्त्रां पूर्ष कह्या छइ दोय, ऋषभ कहह ते सुणज्यु सोय ।
 एक हंस बीजो जल-जलु, जिम मशरु जोडि कांबलो ॥३८॥

हंस सरीखा जे नर होय, तेहना पग पूजो सहु कोय ।
 ध्यन जनुनीइं ते जगी जणयु, कवीजन लोके लेखइ गणयु ॥३९॥

हंस दूध जलमाहाथी पीइ, नीर व्यंदूओ मुख्य नवी दीइ ।
 तिम सुपरष गुण काढी वहह, पर अवगुण ते मुख्य नवि कहह ॥४०॥

जलु सरीखा जे नर होय, तेहनुं नाम म लेस्यु कोय ।
 सकललोकमहां ते अवगणयु, ऋषभ कहह नर ते कां यणयु ॥४१॥

जलुतणी छइ परगती असी, बंदु रात पीइ ओहोलसी ।
 सखरू लोही मुख्य नवी दीइ, तिम माठो नर गुण नवी लीइ ॥४२॥

जलुसरीखा जगम्हा जेह, अती अधमाधम कहीइ तेह ।
 पर अवगुण मुख्य बोलइ सदा, गुण नवी भाषइ ते मुख्य कदा ॥४३॥

दूहा०॥

गुण ग्यरुआ गुणवंतना, जे नवि बोलइ रंगि ।
परभवि दूखीआ ते थसइ, सरजइ दूबल अंगय ॥४४॥

गुण गाइ गुणवंतना, ते सुखीआ संसार्य ।
परभवि सूरसूख भोगवइ, जिहा बहु अपछर नार्य ॥४५॥

जो हीत वंछइ आतमा, तो परनंद्या टालि ।
मुख्यथी मीठु बोलीइ, भटक न दीजइ गालि ॥४६॥

सुगरूवचन संभारयु, करञ्जु परउपगार ।
जईनधर्म आराधज्यु, व्रत वहइ ज्यु सिरि बार ॥४७॥

ढाल ७९ ॥

देसी० मेगल भातो रे वनमाहिं वसइ० ॥ राग-मेवाडो ॥
बार वरतनि॒ रे जे नर सि [र वहइ] [तस] घरि जइजइ॒ रे कार ।
मनह मनोर्थ॒ ते वली॒ तस फलइ, मंदिर मंगल च्यार ॥४८॥
[बार वरतनि॒] रे जे नर सिर वहइ॒ । आचली० ॥

भणतां गुणतां॒ रे संपइ सुख मलइ, पोहोचइ॒ [मनि त]णी आस ।
हिंवर हाथी॒ रे पायक पालखी॒, लहीइ॒ ऊच आवास । ४९ ॥

बार वरतनि० ॥

सुंदर घर्णी॒ रे दीसइ॒ सोभती॒, बहइनी॒ बांधव जोड्य ।
बालिक दीसइ॒ रे रमता बारणइ॒, कुटंबतणी॒ कई॒ कोड्य ॥५०॥ बा० ॥
ग्यवरी॒ मझहइषी॒ रे दीसइ॒ दूङ्गतां॒, सुरतरु॒ फलीओ॒ रे बार्य ।
सकल पदारथ मुझ॒ घरि॒ मि॒ लह्या, थिर थई॒ लछी॒ रे नार्य ॥५१॥ बा० ॥
मनह॒ मनोर्थ॒ माहाइ॒ जे हतो, ते॒ फलिओ॒ सही॒ आज ।
श्रीजिनधर्मर्मनि॒ पास॒ पसाओलइ॒, मुझ॒ सीधां॒ सही॒ काज ॥५२॥ बा० ॥

दूहा० ॥

काज सकल सीधां सही, करतां वरत-वीचार ।
श्रीगुरुनाम पसाओलइ, मुझ फलीओ सहइकार ॥५३॥

छाल ८० ॥

देसी० कहइणी कर्णी०॥ राग-ध्यन्यासी ॥

मूँझ अंगणि सहइकार ज फलीओ, श्रीगुरुनाम पसाइजी ।
जे रघि मुनीवरमां अतीमोटो, बीजइसेनसुरिरायजी ॥५४॥
मूँझ अंगणि सहिकार ज फलीओ, श्रीगुरुर्चर्ण पसाइजी ॥आचली० ॥
जेणइ अकबरनृपतणी शभामां, जीत्यु वाद बीचारीजी ।
शईव शन्यासी पंडीत पोढा, सोय गया त्याहा हारीजी ॥५५॥ मूँझ ॥
जइजइकार हुओ जिनशाशन, सुरीनाम सवाई जी ।
शाही अकबर मुष्य ए थाप्यु तो जगमाहि बडाई जी ॥५६॥ मूँझ०॥
तास पठि ऊयु एक दीनकर, सीलवंतम्हां सुरोजी ।
बीजयदेवसुरी नाम कहावइ, गुण छत्रेसे पुरो जी ॥५७॥ मूँझ० ॥
तपातणो जेणइ गछ अजुआलु, लुघवइम्हां सोभागी जी ।
जस सिरि गुम्भ एहेवो जइवंतो, पूण्यराश तस जागी जी ॥ ५८ ॥ मूँझ० ॥

छाल ८१ ॥

देसी० हीच्य रे हीच्य रे हईइ हीडोलडो० ॥ राग-ध्यन्यासी० ॥

पूण्य प्रगट भयु पूण्य प्रगट भयु
तो मन्य मुझ मत्य एह आवी ।
रास रंगि कर्यु सकल भव हुं तर्यु
पूण्यनी कोठडी मूँझह फावी ॥५९॥ पूण्य प्रगट भयु २ ॥ आंचली० ॥
सोल संवच्छरि जाणि वर्ष छासठि, कातीअवदि दिपकदाढो ।
रास तव नीपनो आगमि ऊपनो, सोय सुणतां तुम पूण्य गाढो ॥६०॥
पूण्य० ॥

दीप जबुअ माहा खेत्र भर्ति भलु, दे [स गुजरा]तिम्हा सोय गास्यु ।
राय वीसल दडो च्यतुर जे चावडो, नगर विसल [तिणइ वेगि] वास्यु

॥६१॥ पूण्य०

सोय नगरि वसइ प्रागवंसि वडो, मङ्गलराज्ञो सूत ते [सीह] सरीखो ।
तेह त्रिंबावतिनगरवाशिं रह्यु, नांम तस संघवी सांगण पेखो ॥६२॥

पूण्य०

एहनि नंदनि ऋषभदासि कव्यु, नगर त्रिंबावतीमार्हि गायु ।
पूण्य पूर्ण भयु काज सषगे थयु, सकल पदार्थ सार पायु ॥६३॥

पूण्य प्रगट भयु० २ ॥

अतीश्रीवरतवीचाररास संपूर्ण ॥

संवत १६७९ वर्ष चर्झत्र वदि १३ गुरुवारे लषीतं ॥

संघवी ऋषभदास सांगण० ॥ गाथा० ॥ ८६२ (३) ॥

व्रतविचारशास्त्र - शब्दकोश

कडी	चरण	शब्द	अर्थ
ऋग्मांक	ऋग्मांक		
३	३	साढ़	साधु
३	४	विसायांहा	विश्वा-वसा
५	४	सार्द	शारदा
६	३	मुर्ख	मूर्ख-मूरख
८	३	मुख्य	मुखे-मुखमां
१२	२	थम	जिम
१३	८	सहइकारो	सहकारो-आंबो
१४	२	लंक	वल्लंक-मरोड
१५	१	पनडु	पान-पांदडुं
१७	३	बइहइखां	बेहेरखा-बेरखा-बाजुबंध
१८	१	जासु	जासुल-जासुद
१८	३	उंगल	अंगुलि
१९	१	गुजा	गुंजा-चणोठी
१९	३	शमझ	सम
१९	३	दाम्यनी	दामिनी-विजली
२१	३	कीर्नी	कीरनी-पोपटनी
२२	२	अधुर	अधर
२२	३	डाडिम-कुलि	दाडम-कली
२४	१	हीडोलड्यो	हीडोलो
२४	२	नगोदर	कंठाभरण-कंठो
२४	३	वाशग	वासुकीनाग
२५	१	राखडी	मस्तकनुं आभूषण
२५	२	षीटली	कर्णाभरण-कुंडल

२५	४	स्युक	शुक
२६	१	भखी	भक्ष्य
३२	३	ताय	त्याग
३३	१	अंद्री	इन्द्रिय
३३	३	आलुअणी	आलोयणा-प्रायश्चित्त
३४	१	बीनो	विनय
३४	२	वयावच्छा०	वैयावच्च्या०
३४	४	पात्यग	पातक
३९	४	एकच्यंत	एकचित्त
४०	१	युगि	योगे
४१	२	सोमप्रगति	सौम्यप्रकृति
४१	४	करुरदीष्ट	कूरदृष्टिए
४३	१	दारव्यण	दाक्षिण्य
४३	२	मध्यशरवर्ती	मध्यस्थवृत्ति
४७	१	लभधिलखी	लब्धलक्ष्य
४७	४	धर्यो	धरजो
५२	२	अतीसहइ	अतिशय
५३	२	अरीआ	अरिहा-तीर्थकर
५३	४	मेगल	मयगल-हाथी
५६	२	अवभोगाइ	उपभोग
५८	२	अवर्तीनि	अविरतिने
५९	४	पोहइचइ	पोहेचइ-पहोंचे
६१	११	सहजना	सहजना
६२	१	परखधा	पर्षदा
६२	७	जोयणगाम्यणी	योजनगामिनी
६२	१०	ईत	ईति-उपद्रव
६३	११	अंद्रधज	इंद्रध्वज

६४	७	अस्थोख	अशोक (वृक्ष)
६४	९	अधोपुख्य	अधोमुख
६४	१०	विर्ष	वृक्ष
६५	१	कुअलु	कुमलो-कोमल
६५	१८	रत्ती	ऋतु
७०	८	च्यांति	चित्ते
७७	१	अंद्र	इंद्र
७८	१	व्यनां	विना
८०	१	थीवर	स्थविर
८१	४	भ्रमब्रत	ब्रह्मब्रत
८१	५	क्वरीआ	किरिया-क्रिया
८२	१	त्रिविधि	त्रिविधे (मन-वचन-कायथी)
८३	४	पइहइराव्य	पेहेराव-(पहेगमणी कर)
८५	३	सधहता	सद्हता-श्रद्धा करता
८६	१	नखेपा	निक्षेपा
९०	१	मईथन	मैथुन
९०	३	लोढी	लघुशंका
९०	३	नषेधो	निषेधो
९४	३	सुमति रखि	समिति-रक्षा
९४	४	गुपति	गुप्ति
९६	४	रहहइस्यु	रेहेस्यु-रहीशुं
९९	४	स्युभंकर्णिना	शुभकरणीनां
१०२	१	बुद्ध	बुद्धिए
१०३	१	कोहोनुं	कोईनुं-कोनुं
१०३	३	शाहाखनो	शास्त्रनो
१०४	४	प्रशन-रीदइ	प्रसन्नहदय
१०८	३	लहइशाइ	लहेशी

१०९	२	ध्यन	धन
१०९	३	पगारा	प्राकार-किला
११७	१	अस्युच	अशुचि
१२०	४	वइहइलो	वहेलो-वहेलो
१२४	४	परीसइ	परीषह
१२५	१	परीसा	परीषह
१२५	२	परीसइ	परीषह वडे
१२६	१	चार्त्र	चारित्र
१२६	३	रख्यजी	ऋषिजी
१२७	१	ख्यध्या	क्षुधा
१२७	२	माधवसूत	कामदेव
१२८	१	त्रीषा	तृषा
१२८	२	रषि	ऋषि-मुनि
१३१	३	पूत्र-चलाची	चिलातीपुत्र
१३७	२	अंग्यन वीनां	अग्नि विना
१४१	१	जाव्यनानो	याचनानो
१४२	२	ऊशभ	अशुभ
१४४	२	युगो	योगो
१४५	२	त्र्ण	तृण
१४५	१	सइहइसइ	सेहेसे-सहन करसे
१४५	२	दइहसइ	देहसे-दहशे-बालशे
१४९	१	आग्यनानं	अज्ञान
१५०	२	कोटल लाखिं	लाख कौटिल्ये
१५४	१	सष्य	शिष्य
१५५	३	शरि अग्यन	शिरे अग्नि
१५६	१	रषि श्रीशकोसी	ऋषि श्रीसुकोशल
१५६	२	त्यणि	तणी

१६०	१	घर्णी	घरणी-घरवाली (शियालण)
१६२	३	मन्य	मनमां
१६२	८	प्रीषा	मृषा-असत्य
१६२	९	दान अदिता	अदत्तादान-चोरी
१६३	९	कर्णसीत्यरी	करणसित्तरी
१६३	९	चर्णसीत्यरी	चरण सित्तरी
१६६	३	आग्यना	आज्ञा
१६९	१	भष्य	भक्ष्य
१७०	१	शरह	शिरे
१७२	२	स्युक्रीत	सुकृत
१७४	१	कुप्य	कुपि-कूवामां
१७५	२	आलि	जूठा
१७६	१	टीबडीब	टबकुं-टपकुं
१७६	२	आक	आकडो-अर्क
१७६	३	षांब	खाबोचिया
१७६	४	षासर	खासडुं
१७६	५	सीप	छोप
१७६	५	क्यरपी	कृपण
१७७	३	क्यरोध	क्रोध
१७७	४	सकार	श्रीकार-भलीवार
१८०	३	पुर्ष	पुरुष
१८१	३	जगसंघार्ण	जग-संहारण
१८३	१	ख्यन	क्षण
१८४	३	अतबंग	अडबंग
१८४	४	लंग	लिंग
१८६	१	शईच	शैव
१८६	३	सरजाडसइ	सर्जन करशे

१८६	४	संघार्छ भ्रम	संहारे ब्रह्म
१९३	३	धणि	प्रिया (सीता)
१९३	४	मुज	मुंजराजा
१९३	५	अइअहीला	अहल्या
१९५	३	अन	अन्न
१९५	४	पइहइलो	पेहेलो
१९६	३	नर्ग	नरके
१९८	१	गुर्ड	गरुड
२०१	१	कबीरदति	कुबेरदत्ते
२०२	४	जगयह	यज्ञ
२०६	२	असत	अस्त
२०६	३	मोक्यलां	मोक्लां-स्वच्छंद
२०७	१	लोहशला	लोहशिला
२११	३	भवअर्णम्हां	भवअरण्यमां
२१२	४	पांत	पातक-पाप
२१३	२	नव्य	नवि
२१६	२	खांण्य	खाण- (४ गतिमां)
२१६	३	स्यांहार्नि	शाने
२१९	३	वतीकंता	वृत्तिकांतार
२२०	४	वतीआ०	सब्बसमाहिवत्तिया०
२२२	१	वची मथो	बच्चे माथुं
२२२	३	हवकार्यु	होंकार्यु
२२२	६	इतानी गई	एट्लानी गति-गत
२२३	३	नित्यकर्णी	नित्यकरणी
२२४	२	रीदइम्हा	हृदयमां
२२४	३	आवशग	आवश्यक
२२५	३	चोबीसहथो	चउबीसत्थव (लोगस्स)

२२९	१	माहारकंड रथ्य	मार्कंड ऋषि
२३१	४	ग्रीही०	गृही-गृहस्थ०
२३३	४	वर्ददकशाहासर्त्रि	वैदकशास्त्रमां
२३४	१	विमन	वमन
२३५	१	नर्णइ	नरणे
२३६	१	अर्णभोमि	अरण्यभूमिए
२३९	३	अवरत्ती	अविरति
२४१	४	ओहोलाश	उल्लास
२४६	१	घ्यर्त	घृत-घी
२४८	१	पूसतग	पुस्तक
२५३	२	श्रावि	श्राविका
२५४	३	क्यरपीर्नि मन्य	कृपणे मन
२५५	४	वशवांनर	वैश्वानर-अग्नि
२५७	३	ल्यध्यमी	लक्ष्मी
२५९	१	सुपत	सुपात्र
२६६	१	हिंवर	हयवर-घोडा
२६६	३	ओटइ	ओटे- ओटले
२६६	३	ओलग	ओलख
२६८	१	प्रतलाभीओ	प्रतिलाभ्यो-दान आप्युं (मुनिने)
२६८	२	नहइसार	नयसार
२६९	३	कीर्तथी	कीर्ति (दान)थी
२७२	१	छाहार	राख
२७२	३	घ्यरत-व्यहुणो	घृत-विनानो
२७३	२	वेणा	वीणा
२७४	४	गलइ	गले
२७६	३	ष्यायक	क्षायिक
२७७	२	षइ	क्षय

२८७	३	सधइणां व्यन	सद्हणा विण
२८८	४	इस्युभ	अशुभ
२९३	२	महइला	महिला
२९४	१	कार्य	कारणे
२९८	८	सीवगांम्सु	शिव-गामे (मोक्षे)
२९९	२	तुकराई	ठकुराई-ऐश्वर्य
३०२	१	अफराटा	विपरीत-अलगां
३०२	४	पापपूर्मा	पापपुर (नगर)मां
३०४	४	ल्याहालो	अंगारा (?)
३०७	१	राजप्रणी	रायपसेणीसूत्र
३०७	४	कार्ण	कारण
३०९	२	चार्ण	चारण
३१०	३	अष्वर	अक्षर (शास्त्रवचन)
३११	२	नर्षो	निरखो
३१२	४	चमरेदो मर्ण	चमरेन्द्र मरण
३१३	३	हंशा	हिंसा
३१५	१	मोंहोपोत	मुखबलिका
३१७	२	उंहुनुं	उनुं-गरम
३१७	२	तांडुं अन	टांडुं-टंडुं अन्न (रसोई)
३१७	३	वइहइराबइ	व्होरावे
३२१	३	कुर्णावंत	करुणावंत
३२६	१	मुद्रा	नाणुं-सिक्को
३२७	२	वस्तु वोहोरेवा	वस्तु लेवा
३२७	४	कडको	कडछो, लाकडुं के तेकी कोई चीज के थपाट (?)
३३८	३	यतीयन कलपनो	(स्थविर)यतिजन कल्पनो
३३५	२	मुन्यना	मुनिना

३३८	४	उतकष्टे	उत्कृष्ट
३४०	१	दूपसो	दुष्प्रसहसूरि
३४५	३	बंबपत्रिष्ठा	बिबप्रतिष्ठा
३५०	२	संधेह	संदेह
३५२	१	शंकाशल	शंकाशल्य
३५६	१	बहुध	बौद्ध
३५६	२	यंगम	जंगम (परिव्राजक)
३५६	३	त्रडंड	त्रिदंडी
३५६	४	अंद्रजालीआ	इंद्रजालीआ
३५८	३	कर्ण	करणी
३६१	१	भव्य भव्य	भवे भवे
३६२	१	वतीगंछा	विचिकित्सा
३६३	१	वीस्वप्रकार	विश्वोपकारक
३६७	३	नंद्या	निंदा
३६८	३	कोचोली	कटोरी-प्याली
३७०	३	प्रगती	प्रकृति-स्वभाव
३७५	३	घ्यण्य०	क्षण०
३७६	१	कंडीइ	करंडिये
३८२	२	वणी	वळी (?)
३८६	३	तुबाजाली	तुंबडुं-नदी तरवानुं
३८७	३	वेणोजंत्र	वीणायंत्र
३८८	२	घाँइंजा	हजाम
३८८	३	रुबडी	हजामनुं कोई उपकरण
३९२	२	गंहिवर	गजवर
३९४	३	चंदनजमलां	
३९६	३	परीचो	परिचय
३९८	४	यगनाथ	जगनाथ

३९९	१	कर्म वालादीक	कृमि, वाळो आदि
४०२	३	ब्रधा	वृद्धा (स्त्री)
४०७	१	अनुवर	जोड़ीदार/सोबती (?)
४११	२	धोंसर	धूंसरं
४११	३	प्रठवइ	नाखे
४११	४	संयुगी	संयोगी
४१२	१	परेया	प्रेया
४२०	३	म्होल	महेल
४२०	३	अतिजाजर	अतिजर्जरित
४२२	१	बाओल	बावल
४२२	३	ताति	तसि-बलतण (पंचात)
४२३	१	ख्यत्री	क्षत्रिय
४२३	३	मंकड	मांकडुं-वानर
४२३	३	आल	अटकचाळो
४२४	२	गुंझ	गुह्य-गुप्त वात
४२५	२	राअंगणि	राजाना आंगणे
४२६	२	आरांम	बगीचो
४२६	४	दूत	द्यूत
४२७	१	वेशा	वेश्या
४२७	२	आहेडो	आखेट-शिकार
४२८	२	संयुगिं	(मसालो)मेलवेल
४३०	१	कगरु	कुगुरु
४३४	१	वछ	वछोरो/वाछरडो
४३४	२	सीही	सिंहण
४३५	१	कुपर खबोलि	
४३५	२	सुपर खलोपइ	
४३८	४	विवाद्यु	विवादो

४३९	१	तुणी	तरुणी
४३९	२	ब्रीध्यस्यु	वृद्ध साथे
४४१	४	मेहर	
४४३	१	मसो	मच्छर
४४५	१	गंगा निं यम नाडि	ईडा ने पिंगला नाडि
४४५	२	ग्यरुओ	गिरुओ
४४५	२	पलवाडि	
४४६	२	वाहो	वाह-अश्व (?)
४४७	३	टालि	टाल (माथानी)
४४८	२	शेन	सेना
४४९	२	पोलु	पोल-प्रवेशद्वार
४४९	६	अनो	अन्र
४५०	३	पांहणो	महेमान
४५४	२	षट् वेद	छ चार=दश
४५७	३	संझेर्णठार्मि	वलोणाना स्थाने (?)
४६०	३	सारवणि	सावरणी (?)
४६८	१	श्रीमानसीत	श्री महानिशीथ (सूत्र)
४६६	१	झालक	झापटवानी किया
४६६	२	टुंपो	(भीनुं) गलणुं दबाववानी किया
४६८	१	संखारे	गलणामां जमा थयेल क्षार
४७०	१	समोअण	ठंडुं पाणी
४७१	३	युन्य	योनिओ
४७२	३	परहंसा	पर-जीव
४७४	१	तरस	त्रस
४७७	१	संवर	सावर
४८२	१	परचीआं	पुराजित-पूर्वे अर्जेलां
४८३	२	कातडी	कातर/करवत

४८६	१	साढ़सइ	साणसा थकी
४८९	५	रोदि	हृदयमां
४९९	१	ग्यवरी	गाय
५००	४	ध्यन ध्यन	धन्य धन्य
५०४	३	सह्या	सो
५०७	४	कुण्ठा	करुणा
५१२	३	अकाई	खोटी रीते/खोटुं करीने
५१४	१	लेअण	लेणुं (?)
५१५	३	लोढो	गोलो (मांसनो लोचो)
५२०	१	सहइजिं	सहेजे
५२०	३	कांकस्यु	बाल ओलवानुं साधन
५२१	१	तावडी	तडकामां
५२५	२	अग्य	अज्ञ (?) आगळ (?)
५३१	४	जिगन	यज्ञ
५३७	३	घर्णी	गृहिणी
५३९	३	पटेलइ	पटेले
५३९	३	लुढ्ड	ढळे / पडे
५४१	३	बकेरी	बकरी
५४९	३	सहइसाकारि	सहसात्कारे
५५०	१	पीआरा	पराया
५६०	४	मोष्य	मोक्ष
५६४	३	पायको	धन (?)
५६५	२	उपकंठ	(जलाशयना)कांठे
५६५	३	वार्य	वारि-पाणी
५६७	४	कंन	कान
५६९	३	भंसा खर	पाडा गधेडा
५७०	२	विष्य	विष-झेर

५७०	४	दिण	देवुं-देषुं
५७१	४	ऊवटवाट	रङ्गलपाट (?)
५७४	१	संवल	भातुं
५७७	३	छबदि	
५८२	३	सेष	शेषनाग
५८४	३	सूरथाना	सूर्यस्थना
५८५	२	त्रीरो	क्षीरसागर
५८६	४	झोटु	जुवान भेंश
५९१	१	मझहइला	महिला-पली
५९१	२	कलग	कलंक
५९८	१	विटल	स्वच्छंद-विट
५९८	२	बीबल	विहवल
६०८	१	काय	काजे
६१३	३	जमदगधनि	जमदग्नि(ऋषि)ने
६१७	१	युर्ग	योगे
६१७	२	श्रुणी स्युक	शोणित शुक (वीर्य)
६१९	३	मुनीष	मनुष्य
६२०	३	वरला	
६३२	१	बशला	विशल्या
६३४	१	वेढी	वढवाड-लडवाड
६३४	२	परगति	प्रकृति-टेव
६३७	३	वस्यवांनर	वैश्वानर
६४१	५	दोहो दश	दश दिशाए
६४७	१	शरीओ	श्रीयक
६५२	२	मणिरेहा	मदनरेखा
६५७	२	द्रीष्टगग	दृष्टिराग

६५	३	विप्रजाश	विपर्यास
६५	११	विहीना	विधवा
६५	१३	तीव्र	तीव्र
६६७	२	उहोलसी	उल्लसी
६७१	३	क्रोणी	कोणिक
६७३	१	स्युत्र	सूत्र (?)
६७३	२	शाम्यनी	
६७९	४	बर्द	टेक / ख्याति
६८२	२	गहइन	गहन
६९३	३	दूपद	द्विपद-बेपगां
६९५	१	अल्लीदु	ढीलुं (?)
६७८	१	जलिवटि	जलमार्ग
७००	१	वदश	विदिशा
७०४	४	दशनुं	दिशानुं
७०८	१	द्रवि	द्रव्य (खाद्य पदार्थ)
७०९	१	वांहाणइ	वाहन
७०९	३	वगति	व्यक्त
७०९	४	सुअण	शय्या
७०९	११	वलेप	विलेपन
७१०	२	नांहाण	स्नान
७१२	२	अचीत	अचित्त-निर्जीव
७१२	३	सचीत	सचित-सजीव
७१२	३	प्रतबध	प्रतिबद्ध (युक्त)
७१३	१	उपक-दूपक	अपक्व-दुष्पक्व
७१४	३	अग्यनकर्म	अग्निकर्म
७१५	१	शल्या	सडेला
७१६	१	असुर्यु	मोडुं-सूर्यास्तसमये

७१७	१	अभ्यष्ट	अभक्ष्य
७१९	५	अभिष्ट	अभक्ष्य
७२०	८	आपोमुं	आपेआप
७२२	२	पति	पत-वट
७२२	२	पूर्वय	पूर्वज
७२८	४	चलीतरस	चिकृतरसवालुं
७३८	३	खाय अखाय	खाज अखाज
७४३	१	वइहइल्यु	वहेल-वेलदुं
७४४	१	गाडावाही	गाङुं वहेवानुं
७४५	३	भोमिफोड	धरती फोडवी
७४९	१	आगरि	खाण
७५३	३	हेलावतां	हीणो देखाडतां
७५६	३	पापोपगर्ण	पापोपकरण
७६४	२	वागरी	जाल वेचनार/वाघरी
७६८	१	वाघछालि	व्याघ्रचर्मे
७६९	१	जु	जो
७७०	३	भगतिकथा	भोजनकथा
७७२	३	पईणो	परेणो
७७३	२	रथ	रथ
७७५	३	मलवढता	लडाई करता
७८२	२	अधीकर्णा	अधिकरण (पापसाधन)
७८७	१	सावदि	सावद्य-सपाप
७९२	३	परत्यग	प्रत्यक्ष
८०१	३	ओहोरतो	अहोरात्र
८०४	१	प्रठवीइ	परठववुं-नाखवुं
८०४	१	मातरु	लघुशंका (पेशाब)
८०४	४	जइणा	यतना

८०५	३	संघट	स्पशि
८०६	१	न्यंद्रा	निद्रा
८०७	३	अवधइ	अविधिथी
८०८	३	संथारु	सूतुं
८०९	१	असुरु	मोडो
८१०	३	असुझतो	अशुद्ध-दोषित
८१५	१	बुध्य	बुद्धि
८१६	१	सुझतो	शुद्ध-निर्दोष
८१९	३	सलज	लज्जाशील
८२२	२	बार्यु	बारणे/घरे
८२५	२	छालु	बोकडो (?)
८२८	२	चीड	
८२९	२	दत्तवहुणा	दानविहोणा
८३८	३	व्यंदुओ	बिंदु
८३८	३	जलु	जलो
८४१	४	यण्यु	जण्यु-पेदा कर्यु
८४२	३	सख्खरु	चोक्खुं
८४१	१	मइहइथी	महिषी-भेंस
८६०	२	दिपकदाढो	दीवाली-दहाडो